# प्रभात

¡ÂÀÊ §ý qÂÂàà t ....


★ ¥§ýmà §ýàªày-9wã §ýàªày §ýà ¡àœàÂà 4
★ À½»§ýàÊ½u §ý jàn ¡àowÎàÂà §ýL âÊqà¹ 6
★ y÷ààm§ý vh - yÎààoÀàwàÀ §ý âhvàÄý... 9
★ àwÎàx ¡ààn§ý Õàøà qÊ vh 15
★ ykàªà¼ hÀàÂà §ýà rjà¥ 18
★ yvwà k»t §ý ¡àm§ý ¡àÊ §ý½v¡àt 20
★ qâ¥vkà¥ §ýL Îààuq½à §ýàÊwà¢uà 29
★ ÎàÑàÂà §ýà ó÷àkvã 35



sàÊm §ýL §ýÈuâÂàÐ¹ qà¹J (tà¡àwàÀã) À½»§ýàÊ½u Ðq Îàv kàÂàv §ýt¹à §ýà âmtàÑã th-qøà

wx - 20 ¡§ý - 1 kÂàwÊã-tàj 2007 yÑuàªà ÊààÎà - 10 Úq¥


## भारतीय क्रान्ति में मील का पत्थर

## sàÊm §ýL §ýÈuâÂàÐ¹ qà¹J (tà¡àwàÀã) §ýL ¥âmÑààý§ý ¥§ýmà §ýàªày - 9wã §ýàªày yÄývmàqw§ý yÈqÂÂà


का. चारू मजुमदार

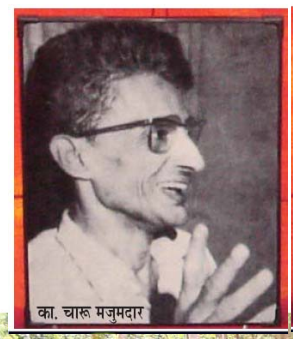

का. कन्हाई चटर्जी

जनवरी-फरवरी 2007 के बीच भाकपा (माओवादी) की एकता काँग्रेस – 9वीं काँग्रेस का सफल समापन देश और दुनिया की तमाम उत्पीड़ित जनता के लिए ऐतिहासिक महत्व रखने वाला एक ठोस कदम है। इससे पार्टी में हर स्तर पर उन्नत दर्जे की एकता हासिल हुई है। इसी के साथ 21 सितम्बर 2004 को हुई भारतीय क्रान्ति की दो महान धाराओं सीपीआई (एमएल) और एमसीसीआई की एकता अपनी परिणति तक पहुंच चुकी है। इस काँग्रेस ने जीवन्त, जनवादी और कामरेडाना वातावरण में बहस-मुबाहिसे के जरिये पार्टी के भीतर विवादित रहे राजनीतिक मुद्दों का समाधान कर दिया है। 1970 में आयोजित पार्टी की 8वीं काँग्रेस के 36 सालों बाद बुलायी गयी यह काँग्रेस भारत के कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास में एक और मील का पत्थर है। भारत के माओवादी आन्दोलन के इतिहास में इसकी बड़ी अहमियत है।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की यह एकता काँग्रेस – 9वीं काँग्रेस देश में स्थापित अनेक छापामार जोनों में से एक जोन में घने जंगलों के बीच आयोजित हुई। 'जन मुक्ति छापामार सेना' की तीन कम्पनियों के सुरक्षा कवच के भीतर तैयार किये गये काँग्रेस के शिविर, जिसका नाम 'कामरेड चारू मजुमदार-कन्हाई चटर्जी कम्यून' रखा गया था, के चारों ओर चौबीसों घण्टे निगरानी करती अनेक संतरी चौकियाँ, दुश्मन की गतिविधियों की टोह लेते सचल फौजी दस्तों के साथ ही पार्टी के आँख-कान बनी आसपास के तमाम गाँवों की जनता भी लगातार सतर्क रही। इस प्रकार प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के तमाम प्रयासों को नाकाम करते हुए यह काँग्रेस सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। काँग्रेस के चन्द रोज पहले भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी तथा केन्द्रीय मिलिटरी कमीशन के सदस्य कामरेड चन्द्रमौली उर्फ नवीन और उनकी जीवन-साथी

## भाकपा (माओवादी) की एकता काँग्रेस – 9वीं काँग्रेस का आह्वान

**भारत और दुनिया के उत्पीड़ित अवाम,**

**साम्राज्यवाद को ध्वस्त करने के लिए जन-ज्वार बनकर उठ खड़े हों!**

**सारी दुनिया में क्रान्तिकारी जंग को आगे बढ़ाओ!!**

तथा डिविजनल कमेटी सदस्या कामरेड करूणा को आन्ध्र प्रदेश के विशेष गुप्तचर ब्यूरो के गुण्डों ने गिरफ्तार कर, क्रूर यातना देकर हत्या कर डाली थी। सरकार के यातना गृहों में मजबूती से खड़े रहने वाले इन दो कामरेडों ने जनता तथा पार्टी के हितों को सर्वोपरि रखते हुए अपने प्राण त्याग दिये थे। उनकी इस महान कुर्बानी का भी काँग्रेस के सफल आयोजन में बड़ा योगदान रहा। इसी कड़ी में काँग्रेस के भवन को कामरेड चन्द्रमौली और अक्टूबर 2005 में शहीद हुए पार्टी की केन्द्रीय कमेटी तथा पोलितब्यूरो के सदस्य कामरेड शमशेर सिंह शेरी उर्फ करम सिंह के नाम देते हुए 'कामरेड करम सिंह-चन्द्रमौली भवन' कहा गया।

काँग्रेस का यह आयोजन दुश्मन की जबरदस्त घेराबन्दी के बीच हुआ, जिसे रोकने के लिए सरकार ने एक विशेष सेल का भी गठन कर रखा था। पार्टी के सभी छापामार जोनों के इर्द-गिर्द विशेष निगरानी रखते हुए गुप्तचर विभाग आने-जाने वाले सभी व्यक्तियों पर बारीकी से नजर रख रहा था। मीडिया तक में काँग्रेस की सम्भावित तिथियों की अटकलें व्यक्त की जा रही थीं। इस सबके बावजूद व्यापक घेराबन्दी के बीच भी 16 प्रदेशों से 100 से ज्यादा प्रतिनिधियों समेत भारत के माओवादी आन्दोलन का यह शीर्षस्थ नेतृत्व सभा-स्थल तक पहुंचने में कामयाब हो सका।

इस एकता काँग्रेस का उद्घाटन पार्टी के निवर्तमान महासचिव कामरेड गणपति ने किया। कामरेड किशन ने उपस्थित समूह को सम्बोधित किया। फिर शहीद स्मारक स्तम्भ पर पुष्प अर्पित किये गये और पिछली, 8वीं काँग्रेस के बाद के अन्तराल में अपने प्राणों की आहूति देने वाले महान शहीद कामरेडों को मान-सम्मान के साथ श्रद्धांजलि दी गयी। इसके बाद गाजे-बाजे के साथ जुलूस निकालते हुए तमाम प्रतिनिधि करम सिंह-चन्द्रमौली काँग्रेस भवन तक पहुंचे, जहां कई दिनों तक चर्चाएं चलती रहीं।

इस ऐतिहासिक काँग्रेस ने एकीकश्त पार्टी के पाँच बुनियादी दस्तावेजों को खुली व बेबाक चर्चाओं और सघन विचार-विमर्श के बाद पारित किया। इस प्रकार पार्टी के निम्न दस्तावेज – 'मार्क्सवादी-लेनिनवाद-माओवाद के चमकते लाल झण्डे को ऊँचा उठाओ!', 'पार्टी कार्यक्रम', 'पार्टी संविधान', 'भारतीय क्रान्ति की रणनीति और कार्यनीति', देश-दुनिया की ताजी घटनाओं को समेटते हुए 'राजनीतिक प्रस्ताव' – पारित किये गये।

काँग्रेस ने सन् 1969 में दोनों पूर्ववर्ती माओवादी पार्टियों के गठन से लेकर आज तक के कार्यों की समीक्षा, पूर्ववर्ती पीडब्ल्यू की काँग्रेस के बाद 2001 से 2004 तक के कार्यों की समीक्षा और नवगठित पार्टी के पिछले दो वर्षों के कार्यों की समीक्षा पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया। इसके अलावा काँग्रेस ने देश और दुनिया के मौजूदा महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दों पर प्रस्ताव पारित किये और कुछ जरूरी सांगठनिक तब्दीलियों समेत नयी केन्द्रीय कमेटी का चुनाव किया। काँग्रेस पिछले दो सालों से पार्टी में ऊपर से नीचे तक चल रही उस प्रक्रिया की अपेक्षित परिणति रही, जिसके तहत इलाकाई, जिला, क्षेत्रीय तथा प्रदेश स्तर पर गम्भीर चर्चा हुई और सम्मेलन आयोजित हुए। इस प्रकार नीचे से भी काँग्रेस में चर्चा के लिए सैकड़ों संशोधन भेजे गये थे।

इस एकता काँग्रेस ने 1967 के नक्सलबाड़ी जन उभार से भारतीय क्रान्ति की कार्यसूची पर आ उपस्थित हुए दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते और कृषि क्रान्ति की धुरी पर नयी जनवादी क्रान्ति की आम कार्यदिशा को नयी बुलन्दी के साथ अपना

## एकता कांग्रेस - 9वीं कांग्रेस के केन्द्रीय नारे

✶ **पार्टी कमेटियों को पहलकदमी लेने वाली, स्वावलम्बी कमेटी बनायें और अपने क्षेत्र विशेष के आन्दोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व करने के लिए सक्षम बनायें!**

✶ **दण्डकारण्य और बिहार-झारखण्ड में आधार क्षेत्र का निर्माण करें !**

✶ **पीएलजीए को पीएलए मे बदल दें!**

✶ **जनयुद्ध की ओर उन्मुख मजबूत शहरी क्रान्तिकारी आन्दोलन का निर्माण करें!**

✶ **मुख्य जोनों में जन युद्ध को आगे बढ़ाते हुए चार वर्गों के संश्रय के रूप में संयुक्त मोर्चा विकसित करें और स्थानीय से लेकर जोन के स्तर तक क्रान्तिकारी जन कमेटियाँ स्थापित तथा मजबूत करें!**

✶ **तमाम क्षेत्रों में भारतीय शासक वर्गों द्वारा चलाये जा रहे फासीवादी दमन के खिलाफ व्यापक जनता को जुझारू संघर्षों में गोलबन्द करें और समस्त निरंकुश कानूनों के विरुद्ध अडिग संघर्ष करें!**

✶ **जातिगत उत्पीड़न के सभी रूपों के विरुद्ध दलितों को संगठित करें!**

✶ **महिलाओं को पितृसत्ता और सामन्ती/साम्राज्यवादी उत्पीड़न के सभी रूपों के खिलाफ बड़े पैमाने पर गोलबन्द करें!**

✶ **कश्मीर, असम, नागालैण्ड, मणिपुर और उत्तर-पूर्व के अन्य हिस्सों में चल रहे विभिन्न राष्ट्रीयताओं के सशस्त्र संघर्षों के साथ दीर्घकालीन लोकयुद्ध का तालमेल करें!**

✶ **हिन्दू फासीवाद के खिलाफ अल्पसंख्यकों के, विशेषकर मुसलमानों के व्यापक मोर्चे का निर्माण करें!**

लिया। इसने पार्टी की राजनीतिक-सामरिक कार्यदिशा को समृद्ध किया और पार्टी के समक्ष अनेक कार्यभार उपस्थित किये। समूची पार्टी के सामने आधार इलाकों की स्थापना को फौरी, बुनियादी तथा केन्द्रीय कार्यभार के रूप में रखते हुए उस पर ध्यान केन्द्रित किया गया। इसी के साथ काँग्रेस ने देश भर में जन युद्ध को आगे बढ़ाने, जन सेना को अधिक मजबूत करने, पार्टी के जनाधार को अधिक सघन बनाने और साम्राज्यवाद के इशारों पर प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों द्वारा लागू की जा रही वैश्वीकरण, उदारीकरण, निजीकरण की नवउदारपंथी नीतियों के खिलाफ व्यापक पैमाने पर जुझारू जन आन्दोलन छेड़ने का भी संकल्प लिया।

पार्टी के दस्तावेजों में जोड़ी गयी अथवा विकसित की गयी निम्नलिखित बातें गौरतलब हैं :

* भारतीय सामन्तवाद/अर्द्ध-सामन्तवाद को जाति-प्रथा तथा ब्राह्मणवादी विचारधारा के साथ गहराई से गुँथा हुआ मानते हुए उसकी विशिष्ट चारित्रिक विशेषता को इस प्रकार पहचाना गया – ''यहां जातिगत उत्पीड़न और ब्राह्मणवाद मौजूदा अर्द्ध-सामन्ती, अर्द्ध-औपनिवेशिक व्यवस्था के साथ अविच्छिन्न रूप से गुँथा हुआ है। जाति व्यवस्था केवल अधिरचनात्मक परिघटना ही नहीं है, बल्कि आर्थिक आधार का भी हिस्सा है। इस वजह से छुआछूत के उन्मूलन के साथ ही साथ जाति व्यवस्था का नाश और ब्राह्मणवाद की सभी अभिव्यक्तियों के खिलाफ संघर्ष हमारे देश में नयी जनवादी क्रान्ति का आवश्यक अंग है।''

वर्गों और जातियों के बीच सम्बन्धों के बारे में; उत्पीड़ित जातियों को अपने सामाजिक उत्पीड़न के अलावा जो अधिक आर्थिक शोषण झेलना पड़ता है, उसके बारे में और अन्य सम्बन्धित पहलुओं के बारे में पहले से अधिक स्पष्ट रूप से व्याख्या दी गयी है। संयुक्त मोर्चे के निर्माण में दलितों तथा उत्पीड़ित जातियों को खास तौर पर लाने के महत्व को पहचाना गया। दलित संगठनों के साथ मिलकर काम करने, दलित आन्दोलनों में हिस्सेदारी करने और छुआछूत एवं जातिगत भेदभाव के खिलाफ तथा जाति-प्रथा के उन्मूलन के लिए संघर्ष करने वाले विशिष्ट संगठनों का निर्माण करने का निश्चिय किया गया।

* कृषि में, खास कर पंजाब में हो रहे परिवर्तनों का अर्द्ध-सामन्ती ढांचे के तहत आकलन करते हुए पार्टी की कार्यनीति पर इसके प्रभाव को समझा गया।

* भारतीय सन्दर्भ में दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग पर अधिक स्पष्टता हासिल की गयी। यह व्याख्यायित किया गया कि किस प्रकार दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग तथा बड़े जमींदार दोनों ही साम्राज्यवाद के मुख्य वाहक हैं और कैसे भारतीय राज्य इन दोनों वर्गों की संयुक्त तानाशाही है।

* छापामार आधार-क्षेत्र, आधार इलाका, दोहरी सत्ता आदि अवाधारणाओं पर समझदारी खास कर भारतीय सन्दर्भों में गहरायी गयी। मसौदा दस्तावेज में छापामार जोन में दोहरी सत्ता के विषय में जो विसंगति रही है उसे दूर किया गया और अधिक स्पष्टता हासिल की गयी। छापामार आधार-क्षेत्रों के संक्रमणकालीन स्वरूप को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया। विभिन्न छापामार जोनों तथा परिप्रेक्ष्य आधार इलाकों के बीच सम्बन्धों की साफ तस्वीर प्रस्तुत की गयी।

* केन्द्र तथा प्रदेश सरकार द्वारा छेड़े गये सर्वाधिक नृशंस, प्रतिक्रान्तिकारी, चौतरफा युद्ध के चलते आन्ध्र प्रदेश के आन्दोलन को लगे मौजूदा धक्के से कैसे उबरा जाय इस पर चर्चा की गयी। निम्न तीव्रता के युद्ध के रूप में दुश्मन के चौतरफा युद्ध के बारे में और इसे पराजित करने के लिए अपनायी जाने वाली हमारी कार्यनीति के विषय में रेशा-रेशा चर्चा की गयी। मैदानी क्षेत्रों में अपनायी जाने वाली कार्यनीति, मैदानों में चलाये जाने वाले छापामार युद्ध इत्यादि की उसूली समझ बनायी गयी।

* जन युद्ध को आगे बढ़ाने तथा जन मुक्ति छापामार सेना को जन मुक्ति सेना में, छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में एवं छापामार जोनों को आधार इलाकों में तब्दील करने का लक्ष्य तय किया गया।

* मजदूर वर्ग, संयुक्त मोर्चे और अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम करने के महत्व तथा सार्थकता को रेखांकित किया गया।

इस काँग्रेस ने बहुत सारी ताजी घटनाओं पर राजनीतिक प्रस्ताव भी पारित किये। इनमें दुनिया के जन संघर्षों पर प्रस्ताव, राष्ट्रीयता के संघर्षों को समर्थन, भारतीय विस्तारवाद के खिलाफ प्रस्ताव, खैरलांजी की घटना के बाद दलित उभार तथा जातिगत उत्पीड़न के विषय में प्रस्ताव, हिन्दू फासीवाद के खिलाफ प्रस्ताव, विशेष आर्थिक जोनों तथा विस्थापन के विरुद्ध प्रस्ताव शामिल हैं। इनके अलावा क्रान्ति के तीन जादुई हथियारों – पार्टी, सेना, संयुक्त मोर्चे – को मजबूत करने पर प्रस्ताव भी पारित किया गया। सदन के समक्ष एकीकृत पार्टी का पिछले दो वर्षों का आय-व्यय पत्रक प्रस्तुत किया गया। इसके बाद निवर्तमान केन्द्रीय कमेटी ने अपनी सामूहिक आत्म-आलोचना पेश की, अपनी कमजोरियों के मुख्य-मुख्य बिन्दुओं को प्रस्तुत किया और काँग्रेस के प्रतिनिधियों से इस पर अपनी आलोचना पेश करने के लिए आग्रह किया। इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने पर नयी केन्द्रीय कमेटी का चुनाव हुआ। नयी केन्द्रीय कमेटी ने कामरेड गणपति को पार्टी के महासचिव के रूप में दुबारा चुन लिया।

'साम्राज्यवाद और उसके तमाम दुमछल्लों को ध्वस्त करने के लिए जन-ज्वार बनकर उठ खड़े हों! दुनिया भर में क्रान्तिकारी युद्ध को आगे बढ़ाओ!!' – दुनिया की जनता का इस प्रकार आह्वान करते हुए बड़े जोशोखरोश के साथ काँग्रेस का समापन हुआ। अन्ततः भाकपा (माओवादी) की इस एकता काँग्रेस - 9वीं काँग्रेस ने साम्राज्यवाद तथा अर्द्ध-सामन्ती बेड़ियों से मुक्त, न्याय और समानता पर आधारित, सचमुच के जनवादी समाज का निर्माण करने के लक्ष्य के साथ देश में छेड़े जा रहे जन युद्ध और अंकुरित की जा रही जन सत्ता का समर्थन करने के लिए भारतीय जनता का बड़ी तादाद में आगे आने का आह्वान किया।

(गणपति)

**महासचिव**

**भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ( माओवादी )**

दिनांक : 17 फरवरी 2007

## <u>भाकपा (माओवादी) की एकता काँग्रेस - 9वीं काँग्रेस का आह्वान</u>

# भारत और दुनिया के उत्पीड़ित अवाम, साम्राज्यवाद को ध्वस्त करने के लिए जन-ज्वार बनकर उठ खड़े हों ! सारी दुनिया में क्रान्तिकारी जंग को आगे बढ़ाओ !!

**उत्पीड़ित राष्ट्रों और दुनिया के अवाम!**

साम्राज्यवाद और उसके तमाम दुमछल्लों के खिलाफ दुनिया भर में और एशिया, अफ्रीका तथा लातिन अमेरिका के देशों में वहां के प्रतिक्रान्तिकारियों के खिलाफ आप जिन न्यायसंगत व जनवादी लड़ाइयों को लड़ रहे हैं, उन सभी को भाकपा (माओवादी) की यह एकता काँग्रेस - 9वीं काँग्रेस सलाम पेश करती है। साम्राज्यवादी अत्याचारियों के खिलाफ खास कर इराक, फिलिस्तीन, अफगानिस्तान, लेबनान और अन्य कई देशों में आप अपने अविराम, समझौताविहीन संघर्षों से इतिहास की नये सिरे से रचना कर रहे हैं। आपके बहादुराना राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों ने साम्राज्यवाद को ऐसे दलदल की ओर धकेल दिया है जहां से बचने का उसके पास कोई रास्ता नहीं है। दुनिया की शन्ति-प्रिय जनता! आप साम्राज्यवादी आक्रमण, हस्तक्षेप, षड्यंत्र तथा धौंस-धमकी के खिलाफ; ‘‘आतंकवाद के खिलाफ विश्वव्यापी जंग’’ के नाम पर दुनिया के अवाम पर अमेरिकी साम्राज्यवादियों द्वारा थोपे गये तमाम अन्यायपूर्ण युद्धों के खिलाफ; साम्राज्यवादियों तथा उनकी संस्थाओं विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व व्यापार संगठन आदि द्वारा विभिन्न देशों पर थोपी गयी नवउदारपंथी नीतियों के खिलाफ तमाम लोग जो संघर्ष छेड़े हुए हैं उन सभी के साथ हम मजबूती से खड़े हैं। भारत की 110 करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व करती भाकपा (माओवादी) की यह काँग्रेस बुलन्दी के साथ ऐलान करती है कि हम साम्राज्यवाद के खिलाफ खास कर सबसे बड़े अन्तरराष्ट्रीय आतंकवादी और दुनिया के अवाम के नम्बर एक दुश्मन अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ आपके युद्ध में हम हमेशा आपके ही साथ रहेंगे। यह काँग्रेस साम्राज्यवाद तथा भारत के सत्ताधारी दलालों को ध्वस्त करने के लिए भारत में जन युद्ध को सघन रूप से चलाने का प्रण करती है। आइये हम दुनिया भर में साम्राज्यवाद को नेस्तनाबूद करने के लिए कतारों को एकजुट करें और शोषण एवं उत्पीड़न से मुक्त वर्गविहीन समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करें!

‘हजारों शहीद बड़ी बहादुरी के साथ जनता के लिए अपनी जिन्दगी न्यौछावर कर चुके हैं। आइये, हम उनका झण्डा बुलन्द रखें और उनके खून से सींचे हुए रास्ते पर आगे बढ़ते जायें’’ *—कामरेडमाओत्से-तुङ*

**भारत के उत्पीड़ित अवाम और तमाम राष्ट्रीयताएं!**

यह एकता काँग्रेस आप सभी की न्यायसंगत मांगों तथा संघर्षों – मजदूर वर्ग, किसानों, महिलाओं, दलितों, आदिवासियों, राष्ट्रीयताओं, धार्मिक अल्पसंख्यकों, छात्रों, युवाओं, बुद्धिजीवियों और साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद, सामन्तवाद के वर्चस्व में कायम यहां की उत्पीड़नकारी अर्द्ध-औपनिवेशिक, अर्द्ध-सामन्ती व्यवस्था के तहत अकथनीय दुख-तकलीफ उठा रहे समाज के अन्य तमाम उत्पीड़ित तबकों की समस्त मांगों तथा संघर्षों का एक स्वर से समर्थन करती है। यहां के शासक वर्ग साम्राज्यवाद द्वारा निर्देशित वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण की जिन नीतियों को लागू कर रहे हैं उनसे आपकी जिन्दगी इस कदर तबाह हो रही है, जिसकी 1947 के बाद के भारत में कोई सानी नहीं रही है। केन्द्र या प्रदेशों में सत्ता किसी भी पार्टी के हाथों में रहे, देश की अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में इन्हीं नीतियों को आक्रामक रूप से थोपा जा रहा है।

भारत के विस्तारवादी शासक वर्ग साम्राज्यवाद के सम्पूर्ण समर्थन और आशिर्वाद से विभिन्न राष्ट्रीयताओं की जनता पर हिंसा तथा आतंक के बद से बदतर रूपों को अपना रहे हैं। काश्मीर, असम, मणिपुर तथा नागालैण्ड में खून बहता जा रहा है। केन्द्र के अर्द्ध-सैनिक जरखरीद बलों और भारतीय सेना द्वारा हजारों लोगों को मौत के घाट उतारा गया है। यह काँग्रेस उन तमाम राष्ट्रीयता के आन्दोलनों और अलग होने के अधिकार समेत आत्मनिर्णय के उनके अधिकार का तहे दिल से समर्थन करने का एक बार फिर ऐलान करती है। यह भारतीय विस्तारवाद के खिलाफ दक्षिण एशिया की जनता का समर्थन करती है और भारतीय विस्तारवाद के खिलाफ संघर्ष के अग्रिम पंक्ति में रहने के लिए भारतीय अवाम का आह्वान करती है।

साम्राज्यवाद द्वारा निर्देशित नीतियों से सबसे ज्यादा बुरी तरह प्रभावित हैं हमारे गरीब तथा भूमिहीन किसान जो हजारों की तादाद में आत्महत्या तक करने को विवश हो रहे हैं और भूख और

> **''आज क्रांति प्रतिक्रांति का मुकाबला कर रही है। एक ओर भारत की जनता हमें एक विकल्प के रूप में देख रही है, तो दूसरी ओर दुश्मन हमें पूरी तरह खत्म करने के इरादे से चौतरफा हमला कर रहा है। हम भारतीय राजसत्ता की इस चुनौती को स्वीकार करते हुए अपनी काँग्रेस आयोजित कर रहे हैं। भारतीय शोषक-शासक वर्ग किसी भी कीमत पर काँग्रेस पर हमला करके समूची पार्टी के नेतृत्व को खत्म करने की मंशा पाल रहा है। लेकिन हम इस भयंकर दमन के बीच भी नीचे से ऊपर तक सम्मेलनों की पूरी प्रक्रिया के माध्यम से काँग्रेस सम्पन्न करने के लिए दृढ़ सकंल्प हैं।''**
>
> \- §ýàªày §ýà £Àià¹Âà §ýÊm Ñ¥ tÑàyâjw §ýàtÊ» ªà½àqâm

भुखमरी के चलते अकथनीय दुर्दशा का जीवन जी रहे हैं। भाकपा (माओवादी) की यह काँग्रेस तमाम उत्पीड़ित किसानों से आह्वान करती है कि अपने उत्पीड़कों का नामोनिशान मिटाने के लिए इन नीतियों के खिलाफ एक तूफान की तरह उठ खड़े हों और गाँव-गाँव में अपनी राजनीतिक जन सत्ता कायम करें।

समूचा मजदूर वर्ग श्रम के भारी पैमाने पर ठेकाकरण, वेतन की स्थिरता, ऐच्छिक सेवानिवृत्ति, निष्कासन, भर्ती पर रोक, अदालतों के श्रमिक-विरोधी फैसलों, हड़तालों पर अघोषित प्रतिबन्ध आदि के चलते अधिकाधिक कंगाली की ओर धकेले जा रहे हैं।

उड़ीसा में पॉस्को, कलिंगनगर, बॉक्साइट खदानों; छत्तीसगढ़ के चारगाँव तथा रावघाट में बॉक्साइट खदानों; आन्ध्र प्रदेश में पोलावरम परियोजना; झारखण्ड में लोहे के खदान तथा यूरेनियम परियोजनाओं जैसी भारी-भरकम परियोजनाओं के चलते आदिवासियों का बड़े पैमाने पर विस्थापन हो रहा है, उन्हें हाशिये पर फेंक दिया जा रहा है। यही नहीं देश में 300 विशेष आर्थिक जोनों की योजना है, जहां हमारी ही सरजमीं पर विदेशी इलाके तैयार किये जायेंगे। इसके लिए विदेशी तथा स्थानीय भूमाफिया खेती की अच्छी-खासी जमीन में से लाखों एकड़ पर कब्जा करने को तैयार बैठे हैं। इसके अलावा शहरों में झुग्गी-झोपड़ियों और पक्के घरों तक को निर्मम तरीके से गिराया जा रहा है और लाखों की तादाद में लोगों को बेदखल किया जा रहा है। बड़े व्यवसायी घरानों तथा साम्राज्यवादी कम्पनियों एवं खुदरा विक्रय केन्द्रों का जाल बिछाने के लिए इस प्रकार रास्ता साफ किया जा रहा है। यह नौवीं काँग्रेस इस व्यापक बेदखली का प्रतिरोध करने के लिए और अपनी जमीन, जंगल और घर-मकान की लुटेरों से रक्षा करने के लिए आदिवासियों, किसानों तथा शहरी गरीबों का आह्वान करती है।

साम्राज्यवादी और सामन्ती संस्कृति के फलस्वरूप महिलाओं का शोषण एवं पितृसत्तात्मक उत्पीड़न बहुत हद तक बढ़ गया है। तथाकथित दहेज हत्याओं, महिलाओं का अधिकाधिक यौन शोषण और राज्य तथा सामन्ती एवं पुरुष अहंकारवादी शक्तियों की ओर से बढ़ती हिंसा तथा भेदभाव के कारण महिलाओं के उत्पीड़न में बेशुमार बढ़ोतरी हुई है। यह काँग्रेस महिलाओं से आह्वान करती है कि इस शोषण, उत्पीड़न तथा भेदभाव के खिलाफ उठ खड़ी हों और अपने अधिकारों के लिए आवाज बुलन्द करें।

हाल में बढ़ते दलित उभार के साथ-साथ दलितों पर हमलों और छुआछूत जैसे अमानवीय प्रथा में भी बहुत हद तक बढ़ोतरी हुई है। यह काँग्रेस खैरलांजी के हत्याकाण्ड और कानपुर में अम्बेडकर की मूर्ति को तोड़े जाने के बाद दलितों के व्यापक जन उभार का बुलंदी से स्वागत करती है। यह समस्त दलितों से आह्वान करती है कि इन बढ़ते हमलों तथा भेदभाव का जुझारू तरीके से प्रतिरोध करने के लिए क्रान्तिकारी झण्डे के तले लामबन्द हों।

बेरोजगारी, अल्परोजगारी, सांस्कृतिक पतन, कैरियरवाद और हताशा के चलते देश के छात्रों एवं युवाओं का भविष्य अंधकारमय है। साम्राज्यवादी/दलाल नौकरशाह पूंजीवादी आक्रमण के चलते लाखों छोटे उद्योग तथा व्यापारी दीवालियेपन की चपेट में हैं। इसी तरह जनता के अन्य तमाम तबके साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के जुए के नीचे पिस रहे हैं। भाकपा (माओवादी) की यह 9वीं काँग्रेस छात्रों, नौजवानों और अन्य तमाम तबकों से आह्वान करती है कि भारतीय अवाम के इन दुश्मनों के खिलाफ एकजुट संघर्ष छेड़ें और उनकी समस्याओं के एकमात्र समाधान के तौर पर नये जनवादी समाज की रचना करने के लिए क्रान्तिकारी आन्दोलन में शामिल हों।

भारतीय अवाम की व्यापक जनसंख्या के अंग के रूप में हम सभी को हमारे देश के जीवन के हरेक पहलू पर साम्राज्यवादियों, खास कर अमेरिका के लगातार कसते शिकंजे को तोड़ने के लिए एकजुट होकर जुझारू संघर्ष करना होगा। भारत की जनता जब साम्राज्यवादी हमलों और यहां के प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के फासीवादी हमलों का साहस के साथ प्रतिरोध कर रही हो, तो भाकपा (माओवादी) उनके साथ मजबूती से खड़े होने और उनका हर सूरत में नेतृत्व करने का संकल्प लेती है। भारतीय जनता से भाकपा (माओवादी) की यह एकता काँग्रेस - 9वीं काँग्रेस आह्वान करती है कि दुनिया भर में अमेरिकी साम्राज्यवाद की आक्रामक युद्धोन्मादी नीतियों की पुरजोर भर्त्सना करें और खास कर इराक, अफगानिस्तान, लेबनान और फिलिपीन्स के जन प्रतिरोध का समर्थन करें।

अंततः भाकपा (माओवादी) की यह 9वीं काँग्रेस भारतीय जनता से आह्वान करती है कि देश में चल रहे जन युद्ध और जनता की अंकुरीत हो रही राजनीतिक सत्ता का बड़ी से बड़ी तादाद में समर्थन करें, इस संघर्ष को व्यापक बनायें तथा आगे बढ़ायें ताकि न्याय और समानता पर आधारित, साम्राज्यवाद तथा अर्द्ध-सामन्ती गुलामी की बेड़ियों से मुक्त सचमुच के जनवादी समाज का निर्माण किया जा सके।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

**भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की**

**एकता काँग्रेस - 9वीं काँग्रेस**

# "जनयुद्ध को तेज करो – दण्डकारण्य को आधार इलाके में बदल डालो"

## दण्डकारण्य के चौथे अधिवेशन में गूंज उठा नारा

दण्डकारण्य में माओवादी आन्दोलन का सफाया करने की मंशा से केन्द्र एवं छत्तीसगढ़–महाराष्ट्र राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे घोर दमन अभियानों के बीचोबीच, भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के दण्डकारण्य स्पेशल जोन का चौथा अधिवेशन 23 सितम्बर से 7 अश्टूबर 2006 तक कामयाबी के साथ सम्पन्न हुआ. भारतीय क्रान्ति की दो धाराओं भाकपा (मा–ले) की धारा और एमसीसीआई की धारा की मिलन तथा भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के उदय के बाद दण्डकारण्य स्पेशल जोन का यह पहला अधिवेशन था. यह अधिवेशन ऐसे समय सम्पन्न हुआ,जबकि लुटेरे शासक वर्गों ने साम्राज्यवादियों, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों की देखरेख में 'सलवा जुडूम' के नाम से दण्डकारण्य के आदिवासी अवाम पर एक अत्यंत पाशविक हमला छेड़ रखा है. जून 2005 से जारी इस बर्बरतापूर्ण एवं फासीवादी हमले में अब तक सैकड़ों लोगों की जानें जा चुकी हैं. हत्या, बलात्कार, लूट, आगजनी और आतंक का तांडव चारों ओर मचा हुआ है. कार्पेट सेश्यूरिटी के नाम से खासकर दक्षिण और पश्चिम बस्तर के इलाके पुलिस एवं अर्ध–सैनिक बलों की छावनियों में तब्दील हो चुके हैं. इसके जवाब में पीएलजीए और कोया भूमकाल मिलिशिया के नेतृत्व में जनता का प्रतिरोधी संघर्ष भी लगातार जारी हैं. दर्जनों पुलिस बलों, एसपीओ और गुण्डों को मार गिराया जा रहा है. दूसरी तरफ दुश्मन केपीएस गिल जैसे कातिल अफसरों को सलाहकार नियुक्त कर, हजारों अर्ध–सैनिक बलों को उतारकर सैन्य हेलिकॉप्टरों एवं मानवरहित विमानों के जरिए सभी इलाकों में निगरानी बढ़ा दी. इन सबके बीच घने जंगलों और पहाड़ों के बीच निर्मित 'कॉमरेड करमसिंह कम्यून' में दण्डकारण्य स्पेशल जोन का चौथा अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ. इसमें भाग लेने के लिए प्रतिनिधियों को कई दिनों तक पैदल मार्च करना पड़ा और दुश्मन के अनेक घेराव अभियानों को तोड़ते हुए आना पड़ा. दक्षिण एवं पश्चिम बस्तर डिवीजनों से आ रहे प्रतिनिधि कॉमरेडों पर एक जगह पुलिस व अर्ध सैनिक बलों का हमला भी हुआ था. उस हमले का मुकाबला कर कर ही वे यहां पहुंच पाए.

चौथे अधिवेशन का उद्घाटन समारोह

दिन 23 सितम्बर 2007 था. सबेरे से ही कॉमरेड करमसिंह कम्यून में हलचल थी. पूरे कम्यून को पीएलजीए के सैनिक तोरणों व लाल वंदनवारों से सजा रहे थे. जगह–जगह शहीदों के नाम पर द्वार बनाए जा रहे थे. अधिवेशन हाल बनाकर उसे सजाया जा रहा था, जो अन्तिम चरण में था. अधिवेशन हाल के बाजू में शहीद वेदी का निर्माण किया गया था. पूरे परेड ग्राउण्ड को वंदनवारों से सजाकर बीच में झण्डा फहराने का प्रबन्ध किया गया था. केन्द्रीय कमेटी, डीके एसजेडसी (स्पेशल जोनल कमेटी) और पीएलजीए साथियों के टेन्ट व्यवस्थित ढंग से लगे थे. सभी टेन्ट हमारी पार्टी के शहीद साथियों के नाम पर थे. 'दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाएंगे' के बैनर के अलावा जगह–जगह क्रान्तिकारी नारों के पोस्टर, प्लाकॉर्ड टंगाए गए थे. पूरा माहौल क्रान्तिकारी जोशोखरोश से भरा हुआ था. जहां एक तरफ दूर–दूर तक पीएलजीए के बहादुर सैनिक अधिवेशन की चौकसी में चारों ओर

### पिछले 6 सालों में दण्डकारण्य के क्रान्तिकारी आन्दोलन द्वारा हासिल खास उपलब्धियां

- **ग्राम स्तर से लेकर जोनल स्तर तक पार्टी संगठन मजबूत हुआ. सभी स्तरों में पार्टी कमेटियों का विकास हुआ.**
- **क्रान्तिकारी आन्दोलन का जड़ से सफाया करने की मंशा से दुश्मन द्वारा 2003 से लगातार जारी विभिन्न दमन-मुहिमों को पराजित करते हुए जनयुद्ध को अपेक्षाकृत उन्नत स्तर में विकसित करने में हम कामयाब हुए. इस दौरान पीएलजीए की ताकत संख्या में, गुण में एवं शस्त्रास्त्रों की दृष्टि से अपेक्षाकृत बढ़ी है.**
- **हजारों की संख्या में जन मिलिशिया का गठन किया गया है. दुश्मन के बलों के खिलाफ चलाए गए विभिन्न कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों में लड़ते हुए जन मिलिशिया मजबूत हो गई. दण्डकारण्य में आज जन मिलिशिया पुलिस एवं अर्ध सैनिक बलों के लिए बुरा स्वप्न बन गई है.**
- **गांव स्तर पर लुटेरे वर्गों की राजसत्ता को खत्म करते हुए व्यापक इलाकों में जनता की नई राजसत्ता के अंगों, यानि जनतना सरकार की इकाइयों का गठन किया गया. उन्हें मजबूत करते हुए विस्तारित करने की प्रक्रिया लगातार जारी है.**
- **जन संघर्षों में जनता को बड़े पैमाने पर गोलबन्द करते हुए विभिन्न जन संगठनों को मजबूत किया गया. ग्राम स्तर से जोनल स्तर तक जन संगठनों का मजबूत ढांचा तैयार हो गया. मुद्दों के आधार पर विभिन्न तबकों के लोगों को गोलबन्द कर कई जन संघर्षों का संचालन किया गया.**

लगे हुए थे, वहीं आसपास के गांवों की जनता, जन संगठन एवं जन मिलिशिया ने भी इस आयोजन की सुरक्षा का जिम्मा अपने कंधों पर लेकर दिन-रात पहरेदारी की. इनकी इजाजत के बिना परिंदा भी अधिवेशन हाल तक नहीं पहुंच सकता था.

ठीक 4 बजे शाम को कॉमरेड सुखदेव परेड ग्राउण्ड में केन्द्रीय कमेटी सदस्य, डीके एसजेडसी के सदस्य, दण्डकारण्य के सभी डिवीजनों एवं विभागों से आए प्रतिनिधि, सांस्कृतिक दल (सीएनएम) के कॉमरेड तथा सुरक्षा के लिए आए पीएलजीए के सैनिक जमा हो गए. वहां से पूरे कम्यून में जुलूस निकाला गया. जुलूस के आगे-आगे डीके एसजेडसी के सदस्य, जिनकी अगुवाई सचिव कॉमरेड कोसा कर रहे थे, चल रहे थे. उनके पीछे-पीछे सांस्कृतिक दल के सदस्य अपने विशिष्ट पोशाकों में पैरों में घुंघरू बांधकर हाथों में ढफली, ढोलक, नगाड़ा, तुडुम जैसे परम्परागत गाजे-बाजे के साथ नाचते-गाते, नारे लगाते आगे बढ़ रहे थे. उनके पीछे पीएलजीए के कॉमरेड और प्रतिनिधिगण गगनभेदी नारों से चल रहे थे. 'भाकपा (माओवादी) जिन्दाबाद', 'कॉमरेड्स चारु मजुमदार - कनाई चटर्जी अमर रहें', 'भारत की नव जनवादी क्रान्ति जिन्दाबाद', 'दण्डकारण्य में पनप रही जनता की जनवादी सत्ता - जनतना सरकार जिन्दाबाद', 'सलवा जुडुम को हराएंगे', 'दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाएंगे', 'पीएलजीए को पीएलए में बदल डालेंगे', 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद', आदि-आदि क्रान्तिकारी नारों से सारा करमसिंह कम्यून गूंज उठा. जुलूस पूरे एक वर्ग किलोमीटर तक फैले कम्यून का चक्कर लगाने के बाद फिर से कॉमरेड सुखदेव परेड ग्राउण्ड पहुंचा. वहां पीएलजीए कमाण्डर के काशन पर सभी कॉमरेड अनुशासनबद्ध तरीके से 3 कतारों में खड़े हो गए. बाद में डीके एसजेडसी के सचिव कॉमरेड कोसा ने भाकपा (माओवादी) के दण्डकारण्य स्पेशल जोन के चौथे अधिवेशन के शुरू होने की विधिवत् घोषणा करते हुए झण्डा फहराया. सारा कम्यून अन्तर्राष्ट्रीय गान से गूंज उठा. केन्द्रीय कमेटी के एक वरिष्ठ कॉमरेड ने केन्द्रीय कमेटी की तरफ से संदेश दिया और अधिवेशन की सफलता की कामना की.

## अधिवेशन ने निम्नांकित नारे अपनाए -

- **दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाएंगे !**
- **छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलेंगे !**
- **पीएलजीए को पीएलए में तब्दील करेंगे !**
- **दण्डकारण्य में पनप रही जनता की नई जनवादी सत्ता को मजबूत करेंगे - फैलाएंगे !**
- **राजनीतिक संघर्षों एवं रोजमर्रा के संघर्षों में विभिन्न तबकों के लोगों को बड़े पैमाने पर गोलबन्द करते हुए एक विशाल साम्राज्यवाद-विरोधी एवं सामन्तवाद-विरोधी मोर्चे की नींव डालेंगे !**

चौथे अधिवेशन का उद्घाटन समारोह

परेड ग्राउण्ड के कार्यक्रम के बाद जुलूस अधिवेशन हाल के नजदीक बनी शहीद वेदी के पास पहुंचा, जहां पर वीर शहीदों को श्रद्धासुमन पेश करने का संजीदा कार्यक्रम होना था. पश्चिम बस्तर डिवीजन से आए प्रतिनिधि कॉमरेड बाबू ने शहीद वेदी का अनावरण कर वर्ष 2000 में सम्पन्न तीसरे अधिवेशन के बाद से इस अधिवेशन तक शहीद हुए तमाम कॉमरेडों को श्रद्धांजली पेश की. खासकर जून 2005 से 'सलवा जुडुम' के नाम पर जारी पाशविक एवं फासीवादी अभियान के दौरान निर्मम तरीके से मारे गए सैकड़ों लोगों की याद में वहां उपस्थित सभी कॉमरेडों की मुट्ठियां भिंच गईं. सभी कॉमरेडों ने आंखों में आंसुओं को दबाते हुए शहीदों के अधूरे सपनों को साकार बनाने का संकल्प लिया. इस कार्यक्रम के बाद तमाम प्रतिनिधियों ने अधिवेशन हाल में प्रवेश किया, जिसका नाम 'वीर शहीद कॉमरेड्स रवि, माधव, श्रीधर, मंगतू, विकास हाल' रखा गया था. हाल में सचिव कॉमरेड कोसा ने डीके एसजेडसी की तरफ से सभी प्रतिनिधियों का स्वागत कर सदन से सभी का परिचय कराया. एसजेडसी सदस्यों ने सभी प्रतिनिधियों को बैज पहनाया.

सबसे पहले सदन ने अधिवेशन के संचालन के लिए एक अध्यक्षमण्डल का चुनाव किया. निवृत्तमान एसजेडसी ने स्टीयरिंग (संचालन) कमेटी के रूप में काम किया. उसके बाद शहीदों को श्रद्धांजली पेश करते हुए एक प्रस्ताव और जेल बन्दियों को संदेश का प्रस्ताव पेश किया गया, जिन्हें सदन ने एकमत से पारित किया. उसके बाद केन्द्रीय कमेटी के एक कॉमरेड ने उद्घाटन भाषण दिया. उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि आज दण्डकारण्य समेत देश भर में क्रान्ति प्रति-क्रान्ति का सामना कर रही है. दण्डकारण्य में प्राथिमक रूप में आकार ले रही जनता की नई जनसत्ता को देखकर प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग भय से कांप रहे हैं. इसीलिए वे सलवा जुडुम जैसे बर्बरतापूर्ण अभियानों के जरिए इसे कुचलने की कोशिश कर रहे हैं, जिनका अमेरिकी साम्राज्यवादी पूरी तरह से मदद कर रहे हैं. देश-दुनिया के वर्तमान हालात पर रोशनी डालते हुए उन्होंने कहा कि आज अमेरिकी साम्राज्यवाद अलग-थलग पड़ चुका है. विश्व भर में जनता साम्राज्यवाद और सामन्तवाद के खिलाफ संघर्ष कर रही है.

यह अधिवेशन कुल 14 दिनों तक चलता रहा. अधिवेशन में पार्टी के बुनियादी दस्तावेज -- मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के चमकते लाल झण्डे को ऊंचा उठाए रखो, पार्टी संविधान, पार्टी कार्यक्रम, भारतीय क्रान्ति की रणनीति-कार्यनीति और देशीय-अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर राजनीतिक प्रस्ताव -- पेश किए गए. इसके अलावा पुरानी भाकपा (माले) (पीडब्ल्यू) एवं पुरानी एमसीसीआई की राजनीतिक-सांगठनिक समीक्षाओं और पुरानी पीडब्ल्यू की 2001 से 2004 तक की समीक्षा पर बहस हुई. सबसे पहले मा-ले-मा दस्तावेज पर बहस हुई. माओवाद को मार्क्सवाद का 'पूर्णतः' नया एवं उन्नत मंजिल के रूप में लिखे जाने के संदर्भ में 'पूर्णतः' शब्द को हटाने को लेकर मत-विभाजन हुआ. बहुमत ने हटाने के पक्ष में वोट दिया. कुछ साथियों ने अपना यह मत बड़ी गहराई से पेश किया कि मा-ले-मा एक दर्शन है और विज्ञान है. निरन्तर विकसित

होने वाले सिद्धान्त को एक दस्तावेज के रूप में रखना सही नहीं है, बल्कि इसे एक अध्ययन नोट्स के रूप में रखा जाना चाहिए. लेकिन चर्चा के बाद सदन भारी बहुमत के साथ इस तर्क को खारिज कर दिया और मा-ले-मा को पार्टी के बुनियादी दस्तावेज के रूप में रखने को सही ठहराया. बाद में इस दस्तावेज को एकमत के साथ पारित किया गया. इसी क्रम में पार्टी संविधान और पार्टी कार्यक्रम पर भी चर्चा हुई और कुछेक संशोधनों के साथ एकमत के साथ पारित किया गया. पार्टी कार्यक्रम पर चर्चा के दौरान 'युग के सवाल' पर मत विभाजन हुआ. बहुमत ने यह माना कि यह युग अभी भी 'साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्तियों का युग' है, जैसा कि लेनिन ने परिभाषित किया. सबसे रोचक और जीवन्त बहस-मुबाहिसा 'भारतीय क्रान्ति की रणनीति-कार्यनीति' दस्तावेज पर चला. इसमें मौजूद कई बिन्दुओं पर मत-विभाजन हुआ. चुनाव बहिष्कार को रणनीतिक महत्व वाला मुद्दा न मानकर कार्यनीतिगत मुद्दा माना जाना चाहिए, ऐसा कुछ कॉमरेडों ने वितर्क रखा. लेकिन सदन ने बहुमत के साथ इसे खारिज करते हुए दस्तावेज को सही ठहराया. उसके बाद भारत के दलाल नौकरशाह पूंजीपति की भूमिका एवं चरित्र को लेकर रोचक बहस हुई. मत-विभाजन के बाद बहुमत ने माना कि 'भारत में साम्राज्यवादी शोषण के लिए दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग और जमींदार वर्ग दोनों ही मुख्य वाहक के रूप में बने हुए हैं' तथा 'भारतीय राज्य बड़े पूंजीपतियों एवं बड़े जमींदारों की सांझी तानाशाही है'. इसके बाद सदन ने इस दस्तावेज को कुछ संशोधनों के साथ एकमत से पारित किया.

बाद में दोनों भूतपूर्व (पुरानी) पार्टियों की राजनीतिक-सांगठनिक समीक्षाओं (पीओआर) को चर्चा में लिया गया. इस दौरान पुरानी एमसीसीआई और पुरानी भाकपा (मा-ले) (पीपुल्सवार) की एकता-प्रक्रिया के मुद्दों एवं काले अध्याय के बारे में घटनाओं का विवरण देते हुए दोनों पुरानी पार्टियों के केन्द्रीय कमेटी कॉमरेडों ने अपनी-अपनी आत्मालोचना बड़ी गहराई से पेश की. पूरा अधिवेशन हाल भावुक हो उठा. दोनों पार्टियों की एकता में हुए दशकों के विलम्ब को लेकर भी कुछ प्रतिनिधियों ने सवाल उठाए. पूरे सदन ने भारतीय क्रान्ति के हित में दोनों पार्टियों की एकता की आवश्यकता और महत्व को दिल से महसूस किया. इन दस्तावेजों को कुछ संशोधनों के साथ पारित किया गया. दण्डकारण्य की पीओआर पर प्रतिनिधियों ने गहन चर्चा व बहस की श्योंकि यह उनके ही कामकाज और कार्यक्षेत्र जुड़ा हुआ रिपोर्ट दस्तावेज था. इस पर चर्चा में भाग लेते हुए प्रतिनिधियों ने बड़ी प्रमुखता से यह बात सामने लाई कि नेतृत्व के कामकाज के तरीके में अभी भी स्वतःस्फूर्तता काफी बड़े पैमाने पर मौजूद है जो दण्डकारण्य के क्रान्तिकारी आन्दोलन को आगे ले जाने में एक बाधक है. बराबर मत-विभाजन के बाद स्टीयरिंग कमेटी ने इसे मान लिया और इसे एक प्रमुख कमजोरी के रूप में चिन्हित किया. बहस बहुत संजीदगी एवं तीखे रूप से चली जिससे डीके पीओआर और भी समृद्ध हुआ तथा आगे का कार्यभार तय करने में बहुत मददगार साबित हुआ. इस दस्तावेज में दण्डकारण्य के आन्दोलन में आए नए मोड़ को अधिवेशन ने पहचाना और इसे अधिवेशन ने इस आन्दोलन की एक मुख्य उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया.

सारे दस्तावेजों को पारित करने के बाद आत्मालोचना-आलोचना की बारी थी. पिछले 6 सालों के व्यवहार में हुई गलतियों एवं खामियों को चिन्हित करते हुए सबसे पहले केन्द्रीय कमेटी सदस्यों और बाद में डीके एसजेडसी सदस्यों ने अपनी आत्मालोचना पेश की. बाद में प्रतिनिधियों ने नेतृत्व में मौजूद कमजोरियों के बारे में तीखी व स्पष्ट आलोचना अधिवेशन के सामने रखी, जिसे डीके एसजेडसी के साथियों ने मान लिया और उन्हें दूर करने की कोशिश को जारी रखने का भरोसा दिलाया. उसके बाद स्टीयरिंग कमेटी ने नई एसजेडसी के चुनाव के लिए एक पैनल पेश किया. चर्चा के बाद इस पैनल को अधिवेशन ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया. नव निर्वाचित एसजेडसी ने कॉमरेड कोसा को फिर से अपना सचिव चुन लिया. बाद में नव निर्वाचित एसजेडसी ने शपथ-ग्रहण किया और दण्डकारण्य के क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूती से आगे बढ़ाने हेतु भरसक कोशिश करने का भरोसा दिलाया. इस अधिवेशन में भाग लेने वाले केन्द्रीय कमेटी सदस्यों ने न सिर्फ इसका मार्गदर्शन किया, बल्कि विभिन्न अवसरों पर दिए गए अपने भाषणों एवं वक्तव्यों से अधिवेशन को गरिमामय बनाया. उनके प्रत्यक्ष निर्देशन में दण्डकारण्य स्पेशल जोन का चौथा अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ.

इस अधिवेशन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों ने पार्टी में विवादित रहे कई राजनीतिक मुद्दों पर भाग लेते हुए गहराई और परिपश्वता का परिचय दिया. इस अधिवेशन के लिए पार्टी, पीएलजीए, जनतना सरकार, जन संगठन और विभिन्न तकनीकी विभागों से प्रतिनिधियों का चुनाव किया गया था. भीषण शत्रु दमन के बीचोबीच सम्पन्न डिवीजन अधिवेशनों में जोन अधिवेशन के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव किया गया था. इसके अलावा विभिन्न राज्यों एवं विभागों में काम करने वाले कुछ कॉमरेडों ने इस अधिवेशन में पर्यवेक्षकों के रूप में भी भाग लिया. 14 दिनों तक चले दण्डकारण्य अधिवेशन के बाद सभी प्रतिनिधि नए नारों,नए कार्यभारों और नए उत्साह के साथ अपने-अपने कार्यक्षत्रों की ओर लौट चले. ✶

## खेद है !

- **'प्रभात' के जनवरी-मार्च 2006 अंक के बाद से लगभग एक साल तक 'प्रभात' का प्रकाशन नहीं हो सका. इस असुविधा के लिए हमें खेद है. कुछ अनिवार्य कारणों से लगातार 3 अंक छूट गए. हमारी कोशिश रहेगी कि 'प्रभात' का नियमित रूप से प्रकाशन हो.**
- **इस वर्ष 'प्रभात' के 20 बरस पूरे हो रहे हैं. इस अवसर पर हम अगले अंक में एक विशेष लेख प्रकाशित करने की कोशश करेंगे.**
- **पिछले एक साल के दौरान दण्डकारण्य आन्दोलन में कई कॉमरेड शहीद हुए हैं. इनमें से कई कॉमरेडों की जीवनियां और तस्वीरें हम इकट्ठी नहीं कर पाए. पाठकों से हमारा विनम्र अपील है कि जिन-जिन शहीदों की जीवनियों का 'प्रभात' में प्रकाशन नहीं हो पाया है, उन्हें लिख भेजिए.**
- **पाठकों से अपील है कि 'प्रभात' के लिए रिपोर्टें नियमित रूप से भेजते रहें. आपकी आलोचनाओं और टिप्पणियों का इंतजार तो हमें हमेशा ही रहेगा.**

**- सम्पादक मण्डल**

सैद्धांतिक लेख

# संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष किये बिना क्रान्ति के लिए एक कदम भी आगे बढ़ना सम्भव नहीं

1. विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास में 1956 में ख्रुश्चोव संशोधनवाद का उद्‌भव और उसके खिलाफ चला आ रहा तीखा संघर्ष का इतिहास आज करीब पचास वर्ष पार कर चुका है। पर आज भी संशोधनवाद विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के सामने मुख्य खतरा बना हुआ है। इसलिए सैद्धान्तिक, राजनीतिक, वैचारिक व कार्यपद्धति के क्षेत्र में संशोधनवाद के खिलाफ लगातार संघर्ष का संचालन करना व उसके साथ साफ विभाजन रेखा खींचना तथा उसे पराजीत करना हमारा मुख्य कर्तव्य है। विगत 150 वर्षों से चला आ रहा विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास और खासकर पेरिस कम्यून, रूसी क्रान्ति, चीनी क्रान्ति आदि के इतिहास ने हमें यही शिक्षा दी है कि संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष किये बिना हम क्रान्ति के लिए एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। यह एक सर्वजनीन सच्चाई है।

2. दरअसल, मार्क्सवाद के जन्म के साथ ही उसके विपरीत सिद्धान्त के बतौर संशोधनवाद व संशोधनवादी विचार तथा संशोध नवादी कार्यधारा सामने आयी है। महान मार्क्स के जीवित रहने के समय में ही मार्क्स और एंगेल्स ने विरोधी मतों के रूप में मौजूद हेगेल के भाववाद सहित प्रूद्धोंवाद व बकूनिनवाद आदि को परास्त किया था। उस समय उन सभी विचारों को विरोधी मतों के बतौर ही चिन्हित किया गया, संशोधनवाद के रूप में नहीं। पर, बर्नस्टीन ने ही व्यापक शोर मचाकर मार्क्सवाद का संशोधन किया, मार्क्सवाद पर पुनर्विचार किया और उन्होंने जिस विचारधारा को अधिकतम अविकल अभिव्यक्ति के रूप में सामने लाया इस प्रवृति को ही संशोधनवाद के रूप में चिन्हित किया गया। वस्तुत:, राजनीति के क्षेत्र में संशोधनवाद ने मार्क्सवाद के आधार यानी वर्ग संघर्ष की शिक्षा और वर्ग संघर्ष के जरिए पूंजीवाद का खात्मा कर समाजवाद की स्थापना की जरूरत को ही तिलांजलि दे डाली।

जाहिर है कि संशोधनवाद एक अन्तरराष्ट्रीय परिघटना है। 'अन्तिम लक्ष्य कुछ नहीं, आन्दोलन ही सब कुछ है'- यह उक्ति संशोधनवाद के सार की ही अभिव्यक्ति है।

3. का. लेनिन ने कहा था, "19वीं सदी के अन्त में संशोध नवाद के खिलाफ क्रान्तिकारी मार्क्सवाद का वैचारिक संघर्ष सर्वहारा वर्ग की जो टुटपूंजिया वर्ग की सारी ढुलमुल यकीनियों और कमजोरियों के बावजूद अपने हेतु की पूर्ण विजय की ओर अग्रसर हो रहा है। महान क्रान्तिकारी लड़ाइयों की केवल भूमिका है।" (मार्क्सवाद और संशोधनवाद- लेनिन)

1917 में महान लेनिन की रहनुमाई में रूस देश में महान अक्टूबर रूसी समाजवादी क्रान्ति ने अपनी सफलता हासिल की। तब मार्क्सवाद की जड़ और मजबूत हुई। कारण, इतने दिनों तक मार्क्सवाद केवल किताब के पन्नों पर ही लिखा हुआ था। पर रूसी क्रान्ति ने उस मार्क्सवाद की बुनियादी बातों को यानी पूंजीवादी-साम्राज्यवादी व्यवस्था को दुनिया के एक हिस्से से उखाड़ फेंककर एक नयी व्यवस्था मजदूर-किसान की व्यवस्था यानी समाजवादी समाज का जन्म दिया।

वस्तुत:, रूसी क्रान्ति की अग्रगति के हर चरणों में का. लेनिन को अन्तरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर घोर संशोधनवादी प्लेखानोव, काउत्स्की से शुरू कर मारतोव, ट्रटस्की सहित तमाम मेनशेविकों के खिलाफ जोरदार संघर्ष चलाना पड़ा था और उन संशोधनवादी व क्रान्ति-विरोधी विचारों को परास्त करना पड़ा था। तभी, केवल तभी रूसी क्रान्ति सफल हो पायी।

जाहिर है कि पूंजीवाद से उसकी चरम अवस्था साम्राज्यवाद के बारे में तथा साम्राज्यवाद के स्तर में ही पूंजीवाद के तमाम अन्तरविरोधों का काफी तीखा व तीव्र हो जाने के कारण क्रान्ति की फौरी संभावना के बारे में का. लेनिन ने ही व्याख्या-विश्लेषण प्रस्तुत किया। का. लेनिन ने अक्सर साम्राज्यवाद के स्तर को क्रान्ति के पूर्वबेला के रूप में चिन्हित किया। साम्राज्यवाद व साम्राज्यवादी युद्ध की स्थिति में सर्वहारा वर्ग तथा उसकी पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी का कर्तव्य क्या है- इस प्रश्न को लेकर दूसरा इण्टरनेशनल के बर्नस्टीन, काउत्स्की आदि घोर संशोधनवादी नेताओं के खिलाफ तीव्र वैचारिक संघर्ष चलाने के साथ-साथ रूसी पार्टी के अन्दर के संशोधनवादियों के खिलाफ भी का. लेनिन और का. स्तालिन को तीव्र संघर्ष चलाना पड़ा। साम्राज्यवादी युद्ध के समय अपनी पितृभूमि की रक्षा करनी चाहिए- गद्दार काउत्स्की के इस विचार के खिलाफ साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में बदल डालो यानी देश-देश में सर्वहारा वर्ग की पार्टी द्वारा वहाँ की क्रान्ति को सफल बनाओ- महान लेनिन द्वारा स्थापित इस सुप्रसिद्ध प्रस्थापना के जरिए कम्युनिस्टों के सही कर्तव्य को सामने लाकर एक तीखा संघर्ष चलाया गया तथा काउत्स्की के घोर संशोधनवादी सिद्धान्त को परास्त किया गया। इस सिद्धान्त के धाराप्रवाह में ही अंतत: महान लेनिन-स्तालिन के नेतृत्व में संशोधनवादियों की तमाम साजिशों को चकनाचूर कर महान रूसी क्रान्ति सफल हुई। इसी धारा-प्रक्रिया के दौर में ही मार्क्सवाद विकसित होकर उसका दूसरा विकसित स्तर लेनिनवाद के स्तर में पहुंच गया। संशोधनवाद के विरूद्ध तीखा व तीव्र संघर्ष चलाने और वर्ग संघर्ष को मूल आधार मानते हुए तथा साम्राज्यवाद के स्तर में क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाते हुए रूसी क्रान्ति को सफल बनाने के क्रम में ही सिद्धान्त को और धारदार बनाने की जरूरत हुई और मार्क्सवाद का लेनिनवाद में विकास होकर ही यह जरूरत पूरी हुई।

4. महान लेनिन की मृत्यु के बाद, सोवियत रूस में समाजवादी निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के क्रम में का. स्तालिन को हर कदम पर संशोधनवादियों और षड्यंत्रकारियों के विरूद्ध जोरदार संघर्ष करना पड़ा। खासकर ट्रटस्की, जिनोवियेव, बुखारिन आदि घनघोर संशोध नवादी, षड्यंत्रकारियों के हर प्रतिक्रान्तिकारी कदम का मुकाबला करके ही समाजवाद व समाजवादी निर्माण कार्य को आगे बढ़ाना पड़ा।

5. 1953 में महान स्तालिन की मृत्यु हुई। इसके बाद ही

इतने दिनों तक पार्टी के अन्दर कुण्डली मारकर बैठे हुए ख्रुश्चोव ने अपना असली चेहरा लेकर सामने आया। 1956 में बीसवीं कांग्रेस के जरिए ही ख्रुश्चोव द्वारा पेश किया गया 'शान्तिपूर्ण संक्रमण', 'शान्तिपूर्ण प्रतियोगिता', 'शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व' और बाद में 'सम्पूर्ण जनता का राष्ट्र' के सिद्धान्तों के फलस्वरूप ही ख्रुश्चोव संशोधनवाद का एक सुसम्बद्ध लाइन के रूप में आविर्भाव हुआ। इस ख्रुश्चोव संशोधनवाद को ही पुराने समय के संशोधनवाद की जगह आधुनिक संशोधनवाद के रूप में चिन्हित किया गया। क्यों ऐसा किया गया? इसके दो बुनियादी कारण हैं :

(i) पुराने समय के संशोधनवाद और संशोधनवादियों के हाथ में कोई राजसत्ता नहीं थी। इसलिए उस समय सत्ता का इस्तेमाल ओर दुरूपयोग करने का कोई प्रश्न नहीं था। मूलत: विचारधारा के बतौर ही संशोधनवाद क्रान्ति-विरोधी भूमिका निभाता था।

(ii) परन्तु, ख्रुश्चोव संशोधनवाद का जन्म का. स्तालिन की मृत्यु के बाद महान लेनिन-स्तालिन द्वारा निर्मित सर्वहारा की एक शक्तिशाली समाजवादी समाज व्यवस्था और उससे सम्बन्धित राजसत्ता को अपने कब्जे में लाकर ही हुआ है। अत: सत्ता का इस्तेमाल करते हुए शान्तिपूर्ण रास्ते से समाजवाद में संक्रमण जैसे क्रान्ति-विरोधी सिद्धान्त को एक रणनीतिक सिद्धान्त के रूप में लागू करने व करवाने के बारे में इसका प्रभाव जबरदस्त रहा।

मूलत: इन दो कारणों से ख्रुश्चोव संशोधनवाद को आधुनिक संशोधनवाद के रूप में चिन्हित किया गया।

वस्तुत: ख्रुश्चोव संशोधनवाद के उद्‌भव के बाद ही दुनिया के विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के अन्दर सबसे ज्यादा फूट व विभाजन पैदा हुआ। खासकर शान्तिपूर्ण रास्ते से समाजवाद में जाने की संशोधनवादी नीति को तमाम संशोधनवादी पार्टी व उसके नेता लोग एक रणनीति के बतौर ग्रहण करते हुए चुनाव में हिस्सा लेने के कार्यक्रम को एकमात्र कार्यक्रम के रूप में ग्रहण किये। उनके द्वारा संचालित तमाम जन आन्दोलन व जन संगठन का लक्ष्य भी संसदीय धारा के अनुरूप एम.एल.ए., एम.पी. व मंत्री बनना मात्र रह गया।

भारत की अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व भी जो महान तेलंगना संघर्ष के साथ गद्दारी किया और 1952 से ही चुनाव में हिस्सा लेना शुरू किया और उसको ही एकमात्र काम बना लिया, ख्रुश्चोव संशोधनवाद उन्हें और अध:पतन की ओर खींचकर ले गया।

जो भी हो, साम्राज्यवाद खासकर अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ साठगांठ व षड्‌यंत्र के जरिए सोवियत सत्ता पर काबिज होकर और समाजवाद का मुखौटा व सत्ता का दुरूपयोग कर ख्रुश्चोव संशोधनवाद और अधिक आक्रामक हुआ है तथा देश-देश में इसके दलाल संशोधनवादी पार्टी और इसके नेता लोग भी पहले की अपेक्षा और मजबूती के साथ संशोधनवादी सिद्धान्त को अख्तियार किये तथा शान्तिपूर्ण रास्ते से समाजवाद में पहुंचने के राहगीर बन गये। मुँह में समाजवाद व व्यवहार में साम्राज्यवाद और सत्ता का इस्तेमाल इत्यादि के जरिए रूस का अध:पतन पहले एक सामाजिक साम्राज्यवादी यानी सामाजिक फासीवादी शक्ति और बाद में एक महाशक्ति के रूप में हुआ।

6. दूसरा विश्वयुद्ध और स्तालिन के नेतृत्व में रूसी लालफौज द्वारा चरम फासिस्ट हिटलर की नाजी वाहिनी को ध्वस्त कर ऐतिहासिक विजय लाभ तथा एक समाजवादी खेमे के उदय होने के बाद 1949 में महान माओ के नेतृत्व में और एक दुनिया हिला देनेवाली क्रान्ति यानी चीनी क्रान्ति दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए सफल हुई। का. माओ प्रदर्शित दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन अब एशिया, अफ्रीका व लातिन अमेरिका की जनता की मुक्ति की एकमात्र सही लाइन के रूप में सामने आई। इस लाइन को स्थापित करने के लिए भी का. माओ को चीनी पार्टी के अन्दर छन-तू-श्यू, ली-ली सान, वाङ-मिङ इत्यादि दक्षिण व 'वाम' संशोधनवादियों के खिलाफ एक जबरदस्त संघर्ष करना पड़ा और इस तरह चीनी क्रान्ति को सफल बनाने के साथ-साथ संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष के झण्डे को माओ ने और बुलन्द किया।

अत: ख्रुश्चोव संशोधनवाद के अविर्भाव के बाद ख्रुश्चोव संशोधनवाद तथा आधुनिक संशोधनवाद के विरूद्ध का. माओ द्वारा चलाया गया सैद्धान्तिक व विचारधारात्मक संघर्ष को ही महान बहस (Great Debate) के बतौर जाना जाता है। यूं तो मार्क्सवाद के उद्‌भव के समय से ही उसके विपरीत विचार के बतौर संशोधनवाद के विरूद्ध संघर्ष चला आ रहा है। पर, ख्रुश्चोव संशोधनवाद के विरूद्ध चलायी गई महान बहस पहले के किसी भी समय की अपेक्षा सबसे ज्यादा तीव्र व सबसे ज्यादा संघर्षपूर्ण और संशोधनवाद के साथ साफ विभाजन रेखा खींचनेवाली एक निर्णायक बहस के रूप में साबित हुई।

इस महान बहस के परिणामस्वरूप अन्तराष्ट्रीय स्तर पर मार्क्सवाद बनाम संशोधनवाद (जिसका अन्तरवस्तु या केन्द्रबिन्दू सशस्त्र संग्राम का मार्ग अथवा संसदीय मार्ग रहा) के बीच की तीखी लड़ाई शुरू हुई और एक ध्रुवीकरण की प्रक्रिया के जरिए सच्चे व नकली कम्युनिस्टों के दो खेमा स्पष्ट रूप से सामने आये। महान माओ के नेतृत्व में सच्चे कम्युनिस्टों के खेमा और मजबूत हुआ तथा संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष और जोरदार हुआ। फलस्वरूप, एशिया, अफ्रीका व लातिन अमेरिका के कुछ देशों में जारी सशस्त्र संग्राम में और तेजी आयी।

बाद में, माओ के नेतृत्व में पूंजीवाद के राहगीर व चीनी ख्रुश्चोव लिऊ-शाओ-ची एण्ड कम्पनी की सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व व वर्ग संघर्ष की जरूरत को खारिज करने और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करने की लाइन के खिलाफ एक जटिल व तीव्र संघर्ष चलाया गया। जिसको महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के रूप में हम जानते हैं।

इसी तरह चीनी क्रान्ति के ठोस व्यवहार तथा अन्तरराष्ट्रीय वर्ग संघर्ष में उचित योगदान और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की विभिन्न शाखाओं में अभूतपूर्व योगदान इत्यादि के जरिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद को माओ ने और विकसित किया जो माओ विचारधारा (अब माओवाद) तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विकास का तीसरा व गुणात्मक स्तर के रूप में सामने आया।

भारत में भी इसी समय अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर वितर्क काफी तीखा हुआ। खासकर 1962 में प्रतिक्रियावादी भारत सरकार द्वारा तत्कालीन समाजवादी चीन पर आक्रमण करने की घटना के बाद पार्टी के अन्दर आन्तरिक संघर्ष और तीखा व तीव्र हुआ। महान बहस, दुनिया हिला देनेवाली महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति और नक्सलबाड़ी के महान किसान विद्रोह, इन युगान्तकारी घटनाओं के परिणामस्वरूप भारत में भी संशोधनवादी खेमा और कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी खेमा साफ तौर पर उजागर हुआ।

7. परन्तु का. स्तालिन की मृत्यु के बाद गद्दार ख्रुश्चोव द्वारा

पार्टी व सत्ता पर काबिज हो जाना और सर्वहारा अधिनायकत्व के बदले बुर्जुआ अधिनायकत्व का कायम हो जाना– इसी तरह से महान लेनिन, स्तालिन के नेतृत्व में स्थापित पहली समाजवादी पितृभूमि का अन्त हो गया। फिर, का. माओ की मृत्यु के तुरन्त बाद ही, चार क्रान्तिकारी कामरेडों को 'चार गुट' के नाम से चिन्हित कर एक प्रतिक्रान्तिकारी राज्य विप्लव (या कूदेता) के जरिए तेङ-हुआ गुट ने समाजवादी चीन का रंग बदल दिया और चीन में भी सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के स्थान पर बुर्जुआ अधिनायकत्व कायम हुआ। इसी तरह महान माओ और उनकी रहनुमाई में सी.पी.सी. द्वारा स्थापित समाजवाद का एक शक्तिशाली किला का भी अन्त हो गया। अब दुनिया के किसी भी देश में एक समाज व्यवस्था के रूप में समाजवाद का अस्तित्व नहीं रह गया। पार्टी के अन्दर छिपे संशोधनवादी व प्रतिक्रियाशील शक्ति द्वारा मौके पर पार्टी व सत्ता पर जोर जबरन कब्जा जमाना और पूंजीवाद की पुनर्स्थापना करना, यही मूल कारण रहा जिससे सर्वहारा वर्ग व समाजवाद का अस्थायी तौर पर ही सही, पराजय हाथ लगा।

अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की इन नकारात्मक घटनाओं के फलस्वरूप संशोधनवाद और संशोधनवादी सोच, कार्यशैली व रीति-रिवाजों का भी पुनः सिर उठाकर अपना प्रभाव जमाने का मौका मिला। खासकर, गद्दार तेङ गुट द्वारा समाजवादी चीन का रंग बदल दिये जाने के बाद अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन और एक विभाजन की प्रक्रिया के दौर से गुजरा और इसी तरह से यह आन्दोलन काफी धक्का खाया।

8. परन्तु अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन में आया धक्का अथवा संशोधनवाद का हावी होना, इत्यादि एक भी द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के अनुसार एकदम अन्तिम (absolute) बात नहीं है, बल्कि सापेक्ष (relative) है। अतः धक्का को पुनः अग्रगति में और संशोधनवाद की हावी होने की स्थिति को पीछे धकेल कर मार्क्सवाद को पुनः प्रभावशाली बनाने की स्थिति में बदल दिया जा सकता है, बशर्ते कि हम द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी नियमों पर दृढ़ विश्वास रखें और आज की वस्तुस्थिति के अनुसार उसे अमल में लायें तथा सशस्त्र संघर्ष या दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन पर अडिग रहें व मजदूर-किसान, मेहनतकश जनता पर पूर्ण भरोसा रखें और हर काम में उनको शामिल करें। दुनिया में सबकुछ ही दो विपरीत चीज की एकता के नियम के अनुसार अस्तित्वमान है। जिसमें संघर्ष का पहलू स्थायी व निरपेक्ष और एकता का पहलू अस्थायी व सापेक्ष होता है। इसलिए खराब को अच्छा में बदलना, प्रतिकूल को अनुकूल में बदलना ये सबकुछ ही संभव है।

9. संशोधनवाद प्रधान खतरा है– इस बात को बहुत लोग कथनी में तो मान लेते हैं, पर करनी में, संशोधनवाद प्रधान खतरा है और इसीलिए व्यवहार के क्षेत्र में या कार्य पद्धति के क्षेत्र में भी संशोधनवादी कार्य पद्धति व तौर-तरीकों के साथ सुस्पष्ट सीमारेखा खींचने की आवश्यकता है- इसे अमल में लाने में अक्षम रह जाते हैं। परिणामतः संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष अपूर्ण या अधूरा रह जाता है। इसलिए संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष को, कथनी व करनी दोनों तरीकों से, गहराई से व बेहिचक ढंग से और शुरू से अन्त तक लगातार चलाने की जरूरत है। किसी भी कारणवश संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष में ढिलाई बरतने का मतलब ही होगा संशोधनवाद को और टिकाकर रखने में मदद करना।

10. संशोधनवाद कभी एक जगह पर स्थिर नहीं रह सकता। संशोधनवाद लगातार पैंतरा बदलते रहता है। मार्क्स के समय में संशोधनवाद जिस रूप में सामने आया अथवा लेनिन, स्तालिन के समय में संशोधनवाद जिस रूप से उजागर हुआ, आज के समय में संशोधनवाद उससे भिन्न रूप में सामने आया है तथा भविष्य में भी दूसरे नये रूपों में सामने आएगा। लाल झण्डा लेकर लाल झण्डा का विरोध करना, क्रान्ति का नाम लेकर क्रान्ति का विरोध करना, मार्क्सवाद-लेनिनवाद का नाम लेकर मार्क्सवाद-लेनिनवाद का विरोध करना, माओ विचारधारा का नाम लेकर माओ विचारधारा का विरोध करना या माओवाद का नाम लेकर माओवाद का विरोध करना– यही संशोधनवाद का मौजूदा स्वरूप है। इसे अत्याधुनिक संशोधनवाद भी कहा जाता है।

अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति का परस्पर विरोधी व अब क्रान्ति होने की स्थिति नहीं है जैसा निराशाभरा विश्लेषण करना और माओवाद का ऐतिहासिक व अन्तरराष्ट्रीय महत्व को नकारना तथा नयी परिस्थिति, ठोस विश्लेषण, शक्ति संतुलन आदि सवालों को सामने लाकर असल में अभी 'सशस्त्र क्रान्ति की स्थिति नहीं है', इस विश्लेषण को रखकर घुमा-फिराकर संसदीय मार्ग का वकालत व अख्तियार करना– यही अत्याधुनिक संशोधनवाद की विशेषताएं हैं।

11. भारत में भी, तेलंगना आन्दोलन के साथ खुल्लम-खुला बेईमानी करनेवाले अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी के नेता लोगों ने बहुत पहले ही सशस्त्र संग्राम को परित्याग कर संसदीय मार्ग अपना लिया और तब से संशोधनवादियों का एकमात्र काम रहा संसदीय मार्ग का तारीफ करना और चुनाव में हिस्सा लेकर एम.एल.ए., एम.पी. व मंत्री बनना तथा हर संभव तरीके से क्रान्ति का विरोध करना और इस तरह शोषक-शासक गुटों की सेवा करना। पर, 1967 में महान नक्सलबाड़ी के किसान विद्रोह फूट पड़ने के बाद उसके खिलाफ नंगा आक्रमण चलाने के फलस्वरूप सी.पी.एम. नेताओं का चरम क्रान्ति-विरोधी चरित्र का भण्डाफोड़ हो गया और इस तरह इन गद्दार व नया संशोधनवादी सी.पी.आई.(एम) आदि के साथ क्रान्तिकारी खेमा का एक सुस्पष्ट विभाजन हो गया। संशोधनवाद आज साम्राज्यवाद के लिए इतना ही प्यारा हो गया है कि पिछले 30 वर्षों से पश्चिमी बंगाल में संशोधनवादियों के सरगना सी.पी.आई.(एम) के नेतृत्वाधीन वामफ्रण्ट सरकार सभी जनवादी व क्रान्तिकारी ताकतों को सामाजिक फासीवादी तरीकों से दमन कर अपना राज चला रही है और साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीपति व सामंतवाद का विश्वस्त दलाल की भूमिका निभा रही है। विगत 30 वर्षों के दौरान राजसत्ता का इस्तेमाल व दुरूपयोग करते हुए सी.पी.आई.(एम) ने अपने पार्टी के समूचे स्तरों को एक जबरदस्त सामाजिक फासीवादी शक्ति के बतौर तैयार किया जो मार्क्सवाद का मुखौटा धारण कर व लाल झण्डा हाथ में लेकर एक संगठित प्रतिक्रान्तिकारी शक्ति की भूमिका निभा रही है। स्थिति ऐसी है कि भारत के कुछ प्रान्तों में सी.पी.आई.(एम) के फासीवादी आक्रमण का मुकाबला किये बिना जनवादी व क्रान्तिकारी संघर्ष को आगे बढ़ाना नामुमकीन है।

फिर, 1972 में का. सी.एम. की शहादत के बाद, सत्यनारायण सिंह जैसे कुछ लोगों द्वारा 'वाम' लाइन सुधारने के नाम पर चुनाव में हिस्सा लेने की दक्षिणपंथी लाइन व कार्यधारा अपनाया गया। इसके अलावे माओ विचारधारा का नाम जपने वाले सी.पी.आई.

(एम-एल) लिबरेशन व कानु सन्याल के नेतृत्वाधीन एक एम-एल पार्टी भी बहुत पहले ही सशस्त्र संघर्ष का मार्ग परित्याग करते हुए संसदीय रास्ते का भक्त बन गयी और मौजूदा जालसाजीपूर्ण चुनाव के खेल में हिस्सा लेकर आत्मसमर्पण के बदले शोषक वर्ग का जूठन के बतौर संसद, विधानसभा व पंचायत चुनाव में दो या चार सीट पाने के लिये कूद पड़ी है। वर्ग युद्ध के मैदान में क्रान्ति-विरोधी भूमिका निभाना यानी क्रान्तिकारी संघर्ष के खिलाफ दुष्प्रचार करना, क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करवाना व ऐसा कि हत्या करना– ये सब कुछ ही लिबरेशन द्वारा चलाये जा रहे कुकर्मों के नमूने हैं और अध:पतित कानु सन्याल तो शोषक-शासकों का इतना प्यारा आदमी बन गया है कि सी.पी.आई.(माओवादी) के खिलाफ और हिंसा से कतई जनता की भलाई या क्रान्ति नहीं हो सकती जैसा उनका ब्यान को केन्द्र या राज्य सरकारें मिलकर तथा उसके पुलिस विभाग द्वारा हजारों-हजार प्रतियां छापकर वितरण किया जा रहा है। झारखण्ड व बिहार में पुलिस-प्रशासन द्वारा वितरण किया गया वैसा ब्यान इसकी जीती-जागती मिसालें हैं।

इन रूपों के संशोधनवाद द्वारा चलाया जा रहा सशस्त्र हमले का मुकाबला किये बिना क्रान्तिकारी संघर्षों को आगे बढ़ाना करीब नामुमकीन है। देश-विदेश के क्रान्तिकारी इतिहास भी हमें यही शिक्षा देता है।

12. जब से मजदूर वर्ग के आन्दोलन का उद्‌भव हुआ, तब से ही बुर्जुआ वर्ग मजदूर वर्ग को सैद्धान्तिक व विचारधारात्मक रूप से भ्रष्ट बनाने की कोशिश में संलग्न है ताकि मजदूर आन्दोलन को बुर्जुआ वर्ग के मूल स्वार्थ के अधीन रखा जा सके तथा समूचे देशों की जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों को कमजोर व गुमराह किया जा सके। इस मकसद से बुर्जुआ विचारधारात्मक रूझान विभिन्न समय में विभिन्न रूप धारण कर लेता है, कभी दक्षिणपंथी तो कभी 'वाम' भटकाववादी रूप लेते रहते हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के उद्‌भव व विकास का इतिहास भी बुर्जुआ विचारधारा के रूझानों के खिलाफ चाहे वह दक्षिणपंथी रूझान हो या 'वाम', उसके खिलाफ तीखा संघर्ष का इतिहास है। सच्चे मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादियों का कर्तव्य है कि बुर्जुआ विचारधारात्मक रूझान द्वारा पेश की गई चुनौती का सामना करने से भागना अथवा डरना नहीं, बल्कि महान मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन व माओ ने जैसे किये वैसा करना यानी जब भी बुर्जुआ विचार तथा संशोधनवादी विचार द्वारा सिद्धान्त, मौलिक लाइन व नीति के क्षेत्र में आक्रमण होगा, तभी उस आक्रमण को ध्वस्त कर देना और सर्वहारा वर्ग, उत्पीड़ित जनता व जातियों द्वारा चलाया जा रहा संघर्षों के विजय मार्ग को सुनिश्चित करना। मार्क्सवाद बनाम संशोधनवाद के संघर्ष का लम्बा इतिहास हमें दिखलाता है कि कुछ कम्युनिस्ट नामधारी पार्टी तो अन्तर्वस्तु व रूप, दोनों में ही पूरे के पूरे संशोधनवादी बन गई है। जैसे इटली, फ्रांस आदि यूरोप की कुछ जाने-पहचाने पार्टियां और भारत में सी.पी.आई., सी. पी.आई.(एम) आदि पार्टियां। कुछ पार्टियों का तो सामाजिक फासीवादी शक्ति के रूप में अध:पतन हो चुका है तथा कुछ पार्टियां और ज्यादा संशोधनवादी लाइन व कार्यधारा अपनाने पर आमादा हो चुकी हैं और कुछ बीच में डोल खा रही हैं।

पर, सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर भी मार्क्सवाद के विपरीत विचार के बतौर संशोधनवाद तथा बुर्जुआ व पेटी-बुर्जुआ रूझान मौजूद रहता है। हमारे अन्दर भी संशोधनवाद मौजूद है। यद्यपि कि हमारे अन्दर प्रधान रूप से नहीं, फिर भी कुछ ठोस बहि:प्रकाश (manifestations) के रूप में संशोधनवाद तथा बुर्जुआ व पेटी-बुर्जुआ विचार मौजूद रहता है। खासकर अर्थवाद, जुझारू अर्थवाद, कानूनवाद, स्वत:स्फूर्तता आदि विभिन्न ठोस रूपों की अभिव्यक्ति हमारे अन्दर, हमारी पार्टी के अन्दर है। फिर हमारे अन्दर संकीर्णतावाद, मनोगतवाद व कठमुल्लावाद की अभिव्यक्ति तथा नम्रता व विनय का अभाव दिखलाई पड़ती है। इसके अलावे पूर्वाग्रह, व्यक्तिवाद, नौकरशाही प्रवृति व अहंवाद– ये भी हमारे अन्दर प्रचूर मात्रा में मौजूद हैं, जिससे कि हमारी नवगठित पार्टी के अन्दर की एकरूपता को और मजबूत करने में कुछ समस्याएं पैदा हो रही हैं।

दरअसल हमारे अन्दर मार्क्सवाद और संशोधनवाद दोनों ही मौजूद है। फिर संशोधनवाद कहने से उसके दोनों स्वरूप, दक्षिणपंथी अवसरवाद व 'वाम' भटकाववाद दोनों मौजूद हैं। यद्यपि प्रधान पहलू मार्क्सवाद ही है, फिर भी गौण पहलू के रूप में संशोधनवादी अभिव्यक्तियां भी मौजूद हैं। इसलिए एक ओर वास्तविक वर्ग संघर्ष या वर्ग युद्ध में हिस्सा लेकर खुद को और फौलादी बनाना और दूसरी ओर खुद के अन्दर की संशोधनवादी अभिव्यक्तियों के खिलाफ भी संघर्ष चलाना निहायत जरूरी है। और इस प्रक्रिया को केवल थोड़े समय के लिए नहीं, बल्कि निरन्तर चलाना चाहिए। हमें का. लेनिन की इस बात कि ''राजसत्ता का सवाल ही तमाम क्रान्तियों का बुनियादी सवाल है'' और वर्ग संघर्ष को आगे बढ़ाकर सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को स्थापित करना ही हमारा कर्तव्य है तथा साथ-साथ हमें माओ की इस महत्वपूर्ण उक्ति कि ''सशस्त्र बल द्वारा राजसत्ता छीनना, युद्ध द्वारा मसले को सुलझाना, क्रान्ति का केन्द्रीय कार्य और सर्वोच्च रूप है''– पर दृढ़तापूर्वक अडिग रहना चाहिए। साथ-साथ संशोधनवाद नहीं मार्क्सवाद अमल करो; षड्‌यंत्र नहीं, खुले हृदय का हो जाओ; और विभक्त नहीं, एकताबद्ध हो जाओ- को अपने क्रान्तिकारी व्यावहारिक जीवन में अमल करने की कोशिश करनी चाहिए।

13. हमारे पार्टी के संस्थापक नेता व शिक्षक का. सी.एम. और का. के.सी. भारत के कम्युनिस्ट आन्दोलन में सी.पी.आई., सी. पी.आई.(एम) मार्का संशोधनवाद के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष करके तथा उसके साथ सुस्पष्ट विभाजन रेखा खींचते हुए ही भारत में माओ प्रदर्शित दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को स्थापित करने में समर्थ हुए थे। उस संघर्ष की धारावाहिकता में ही उसका व्यावहारिक प्रतिबिम्ब के बतौर का. सी.एम. के नेतृत्व में महान नक्सलबाड़ी किसान आन्दोलन का उभार हुआ जो संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष में 'बसंत का बज्रघोष' साबित हुआ। संशोधनवाद के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष को कैसे आगे बढ़ाया जाता है तथा उसे नेस्तानाबूद किया जाता है- हमारे शिक्षक का. सी.एम. व का. के.सी. से हमें हर पल शिक्षा लेनी चाहिए तथा इसका दृढ़तापूर्वक अनुसरण करना चाहिए।

आवें, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के सिद्धान्त पर अडिग रहें; क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष व जारी कृषि क्रान्तिकारी छापामार लड़ाई में और सृजनशीलता के साथ व सक्रियतापूर्वक तथा बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। फौज व आधार इलाका निर्माण के कार्य को तेज करें। संशोधनवाद तथा संशोधनवाद के हर ठोस बहि:प्रकाश के विरूद्ध कथनी व करनी में निरन्तर संघर्ष चलाएं। याद रखें कि संशोधनवाद के खिलाफ संघर्ष किये बिना क्रान्ति के लिए एक कदम भी आगे बढ़ना संभव नहीं। ✶

महाराष्ट्र

# आत्महत्या नहीं - संघर्ष की राह पर चलेंगे !

## – गन्ना किसानों का ऐलान

साम्राज्यवादी देशों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और पारराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा उत्पादित रासायनिक खादों, कीटनाशक दवाइयों, हाईब्रिड बीजों, टर्मिनेटर बीजों, कृषि यंत्रों के बाजार के लिए तथा उनके कारखानों-कम्पनियों के लिए जरूरी कच्चा माल के लिए भारतीय कृषि को साम्राज्यवादियों ने दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों की सहायता से इस्तेमाल करने के लिए चुना. दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों ने सामन्तवाद की सहायता से साम्राज्यवादी देशों की भरपूर सहायता की तथा भारतीय कृषि को साम्राज्यवादियों के रहमोकरम पर छोड़ दिया. नगदी फसलों पर ज्यादा जोर दिया गया. कपास, गन्ना, सोयाबीन, सूरजमुखी व अन्य तिलहन, मुर्गी पालन, दुग्ध व्यवसाय, मछली पालन पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा. भारतीय सरकार ने मीडिया के द्वारा इनका बड़े जोर सोर से प्रचार किया गया मानों इनकी कृषि करने से किसान खुशहाल हो जाएंगे. साथ ही अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक खादों, कीटनाशक दवाइयों, हाइब्रिड बीजों व आधुनिक कृषि यंत्रों की जरूरत के बारे में खूब प्रचार किया गया. एक प्रकार से इनका कृषि में उपयोग करने के लिए किसानों को मजबूर किया गया. पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र,आदि राज्यों में 'हरित क्रान्ति' को मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया. बढ़े उत्पादन का व्यापक प्रचार कर आत्मनिर्भरता के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा. उत्पादन लागत की तुलना में उत्पादन का प्रतिशत हमेशा छुपाया गया. बस बढ़ता उत्पादन ही दिखाया गया.

लेकिन कुछ सालों में ही सरकार द्वारा किसानों को दिखाए जाने वाला सुनहरा सपना टूटने लगा. पानी, बिजली, कृषि यंत्रों, कीटनाशक दवाइयों, रासायनिक खादों, बीजों व डीजल की बढ़ती कीमतों से कृषि उत्पादन की लागत बढ़ती गई. इस वजह से हर किसान बैंकों, सूदखोर-महाजनों का कर्जदार हो गया. साल दर साल किसानों के ऊपर कर्ज का बोझ बढ़ता ही चला गया. किसान जब भी खाद, पानी, बिजली, कीटनाशक, बीज व कृषि यंत्रों की कीमतों में कमी और कृषि उपज की मांग में वृद्धि के लिए आन्दोलन करते सरकार उन पर लाठी-गोलियों की बरसात कर किसानों की हत्या पर उतारू हो जाती. मजबूरन किसान कर्ज न चुका पाने की वजह से आत्महत्या करने लगे. आज आत्महत्या करने वाले किसानों की संख्या हजारों में पहुंच गई है.

महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में ही एक हजार से ज्यादा किसान कर्ज न चुका पाने की वजह से आत्महत्या कर चुके हैं. आत्महत्याओं की घटनाएं अभी भी जारी हैं. पूरे देश का पेट भरने वाला किसान जब कर्ज न चुकाने की वजह से आत्महत्याएं करने लगे, इससे शर्मनाक व दर्दनाक घटना हो ही नहीं सकती. तब भी हमारे राजनेताओं की सारी संवेदनाएं मर चुकी हैं. वे इन आत्महत्याओं का दूसरा कारण देखने लगे हैं. महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख का तो साफ कहना है कि किसान पैसों की लालच में आत्महत्याएं कर रहे हैं. इस तरह एक गलत तस्वीर पेश की जा रही है. इसके लिए विलासराव देशमुख की जितनी भी भर्त्सना की जाए कम होगी.

समस्याओं से जूझते विदर्भ और मराठवाड़ा सहनशील किसानों के दुख-तकलीफों तथा सरकार के रवैए को देखते हुए गन्ना उत्पादक किसानों ने साहसिक निर्णय लेते हुए संघर्ष करने की ठान ली है. किसानों का साफ कहना है कि वे चुपचाप रहकर आत्महत्या जैसा कोई कदम नहीं उठाएंगे. बल्कि अपनी समस्याओं के समाधान के लिए सरकार के खिलाफ संघर्ष का रास्ता अपनाएंगे. सरकार ने जहां गन्ने की कीमत 850 रुपए प्रति टन तय की है वहीं किसान 1800 रुपए प्रति टन की मांग को लेकर आन्दोलित हैं. सरकार ने आन्दोलनरत किसानों से सख्ती से निपटने की धमकी दी. लेकिन गन्ना उत्पादक किसानों ने सरकारी धमकियों से न डरते हुए अपने आन्दोलन को और तेज करने के लिए तैयारियां शुरू कर दीं. सरकारी स्तर पर उन्हें हर स्तर पर चेतावनी दी जाने लगी. इन सबकी परवाह न करते हुए किसानों ने अनेक इलाकों में खूब जुझारू संघर्ष चलाया. वाहन जलाया, सरकारी कार्यालयों की जमकर तोड़फोड़ की तथा पुलिस-प्रशासन को खूब छकाया. किसानों के संघर्षों का कोई जल्द अन्त होगा ऐसी कोई सम्भावना नहीं दिख रही है. श्र्योंकि सरकार के बयान जिस तरह आ रहे हैं उससे लगता है कि सरकार को केवल कारखाने की चिन्ता है, किसानों से उसे कोई हमदर्दी नहीं है.

गन्ना उत्पादक किसानों द्वारा समस्याओं का समाधान के लिए संघर्ष का रास्ता अख्तियार करना एक सही व क्रान्तिकारी निर्णय है. यह किसानों को आत्महत्या के बदले संघर्ष का रास्ता अपनाने में मददगार होगा. पूरे देश के किसानों के लिए यह सही दिशा-निर्देश का कार्य करेगा. इसके लिए विदर्भ व मराठवाड़ा के गन्ना उत्पादक किसान क्रान्तिकारी अभिनन्दन के पात्र हैं. ✶

*(.... पृष्ठ 21 का शेष )*

| | | | |
|---|---|---|---|
| 37. | पद्म सनकी | " | " |
| 38. | लश्के | ईदवाड़ा | " |
| 39. | एक अज्ञात महिला | नेतिकाकिलेर | " |
| 40. | आयती | पेद्दाकोरमा | बीजापुर |
| 41. | बुदरी | " | " |
| 42. | सोमली | " | " |
| 43. | ायती | मनकेली | " |
| 44. | सोमली | " | " |
| 45. | परसो मासे (35) | चिन्ना पल्ली | भैरमगढ़ |
| 46. | जैनी | नूंगूर | " |
| 47. | बुदरी | कुम्मुममेट्टा | " |
| 48. | भीमे | परकेली | " |
| 49. | फूलवती | एहकेल | " |
| 50. | सायबो | " | " |
| 51. | सामो | " | " |

वक्तव्य

# खैरलांजी में दलितों पर हुए पाशविक नरसंहार की निंदा करो !

## कानपुर में अम्बेडकर की प्रतिमा के साथ किए गए अपमान की भर्त्सना करो !

*17 नवम्बर 2006*

29 सितम्बर 2006 महाराष्ट्र के भण्डारा जिला के मोहाडी तहसील का एक छोटा सा गांव खैरलांजी में मनुवादी सवर्ण मानसिकता के सामन्ती वर्गों ने पाशविकता का नंगा नाच करते हुए दलितों का खून बहाया. एक तरफ देश की सरकारें दलितों के उद्धार के नाम से कानून-दर-कानून बनाते जा रही हैं, तो दूसरी तरफ ब्रह्मणवादी सामन्ती ताकतें समय-समय पर देश के कोने-कोने में दलितों का कत्लेआम करते जा रही हैं. खैरलांजी में सुरेखा भोतमांगे नामक एक गरीब दलित महिला, जिसने अपनी जमीन पर अधिकार पाने के लिए सवर्ण सामन्ती ताकतों के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत की थी और जिसने भीषण गरीबी को झेलते हुए भी अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया था, को 'सबक' सिखाने के लिए इस जघन्य हत्याकाण्ड को अंजाम दिया गया. गांव के हिन्दू सवर्णों ने, जिन्हें भाजपा का समर्थन प्राप्त है, 45 वर्षीया सुरेखा भोतमांगे और उसकी 18 वर्षीया बेटी प्रियंका भोतमांगे के साथ सामूहिक बलात्कार कर बुरी तरह मार डाला. सुरेखा के दो बेटों रोशन (23) और सुधीर (21) को उन्होंने चाकुओं से गोद-गोद कर मार डाला. मारने से पहले इन दोनों भाइयों और उनकी मां और बहन को नंगा कर अकथनीय एवं मानवता को कलंकित करने वाली यातनाएं दीं, जिनके बारे में लिखने के लिए शब्द नहीं मिलेंगे. यह सब गांव के चौपाल में सबके सामने होता रहा और पूरा गांव इसे देखता रह गया, जहां हिन्दू सवर्ण जातियों का वर्चस्व है. इस परिवार का पुरुष मुखिया, सुरेखा के पति भैयालाल ने इस सारे अमानवीय घटनाक्रम को थोड़ी ही दूर से अपनी आंखों से देखा, पर किसी तरह अपनी जान बचा ली. वही उस परिवार का एक मात्र सदस्य है, जो अब जिन्दा है. मानवता को कलंकित करने वाले इस जघन्य अपराध के बारे में पुलिस को उसी शाम खबर मिलने के बावजूद इस दलित परिवार को बचाने या दोषियों की तुरन्त धरपकड़ करने में कोई दिलचस्पी नहीं ली. इस घटना ने फिर एक बार हमें दिखा दिया कि आज भी ग्रामीण भारत में सवर्ण सामन्ती ताकतें किस तरह हावी हैं.

इस घटना के बाद, कुछ देर से ही सही, देश भर में और खासकर, महाराष्ट्र के कोने-कोने में जनता के विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हुआ. इस मामले पर सीबीआई जांच करवाने और दोषियों को गिरफ्तार करने की मांगें जोर-शोर से उठी. लेकिन पुलिस-प्रशासन ने सामन्ती व सवर्ण वर्गों के पक्षधर होने का सबूत पेश करते हुए नागपुर, अमरावती, शोलापुर आदि जगहों में प्रदर्शनकारियों पर लाठियां और गोलियां चलाईं जिसमें कई लोगों की जानें गईं. मीडिया के एक हिस्से ने भी तथाकथित सवर्णों का पक्ष लेते हुए इस हत्याकाण्ड के लिए अवैध सम्बन्धों को कारण बताकर जनता को गुमराह करने की भरसक कोशिश की. दूसरी तरफ शासन-प्रशासन ने इस हत्याकाण्ड के खिलाफ भड़क रहे जन आक्रोश के पीछे नक्सलवादियों के हाथ होने का झूठा आरोप लगाकर उसे नाजायज ठहराने की कोशिश की. माना कि यह आरोप सच भी है, तो क्या किसी न्यायपूर्ण आन्दोलन में नक्सलवादियों के शामिल होने से वह आन्दोलन नाजायज हो जाता है? अगर किसी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना ही 'नक्सलवाद' है तो उसमें गलत क्या है? क्या किसी न्यायपूर्ण आन्दोलन के पीछे 'नक्सलवादी हैं' कहने मात्र से उसका दमन करने के लिए वैधता मिल जाती है? जिस तरह अमेरिकी व ब्रितानी साम्राज्यवादियों के खिलाफ दुनिया के किसी भी हिस्से में, खासकर मध्य-पूर्व में होने वाली हर कार्रवाई के पीछे 'अल कायदा का हाथ' खोजा जाता है, ठीक उसी तरह आज भारत की सरकारें भी हर जगह 'नक्सलवादियों का हाथ' ढूंढ़ रही हैं. यह सब लुटेरे शासक वर्ग और मीडिया इसलिए प्रचारित कर रहे हैं ताकि खैरलांजी नरसंहार के खिलाफ आवाज उठाने वाली शोषित-उत्पीड़ित दलित जनता का दमन किया जा सके और इस दमन को जायज ठहराया जा सके.

खैरलांजी दलित नरसंहार के बाद खासकर महाराष्ट्र में जोर शोर से उठे दलितों के संघर्षों का भाकपा (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी तहेदिल से समर्थन करती है. हम इस मौके पर कानपुर में डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के पुतले के साथ किए गए अपमान की भी कड़े शब्दों में निंदा करते हैं. हम दण्डकारण्य, छत्तीसगढ़ एवं विदर्भ की मेहनतकश जनता, बुद्धिजीवियों एवं जनवादी व दलित संगठनों से अपील करते हैं कि आप खैरलांजी नरसंहार के खिलाफ व्यापक एवं जुझारू विरोध प्रदर्शनों को तब तक जारी रखें जब तक कि इस घृणित हत्याकाण्ड को अंजाम देने वालों और उनका सहयोग करने वाले पुलिस-प्रशासन के अधिकारियों को सख्त से सख्त सजा नहीं दी जाती. हम इस मौके पर तमाम शोषित-दलित जनता का आह्वान करते हैं कि दलितों पर हो रहे हमलों एवं कत्लेआमों को रोकना है तो देश के कई हिस्सों में हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) के नेतृत्व में जारी नव जनवादी क्रान्ति के साथ तालमेल रखना तथा उसमें शामिल होना ही एक मात्र रास्ता है ताकि वर्तमान शोषणकारी, दमनकारी व उत्पीड़नकारी व्यवस्था का जड़ से सफाया किया जा सके. सामन्तवाद, दलाल नौकरशाही पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंककर ही हम एक खुशहाल नव भारत का निर्माण कर सकते हैं जो समतामूलक, आत्मनिर्भर व आजाद हो और जहां लैंगिक, नस्लीय, जातिगत व धार्मिक भेदभावों का नामोनिशान तक न हो.

**(कोसा),**
**सचिव,**
**दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी**
**भाकपा (माओवादी)**

# विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) – औपनिवेशीकरण एक नए रूप में

## नंदिग्राम नरसंहार के लिए जिम्मेदार नकली कम्युनिस्टों का लाल नकाब उतार फेंको !

पिछले कई महीनों से देश में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड या सेज) को लेकर छिड़ी गंभीर बहस 14 मार्च 2007 को नंदिग्राम में हुए नरसंहार से जोर पकड़ी है. एक ओर सरकार एक के बाद एक विशेष आर्थिक क्षेत्रों के लिए अनुमति देती जा रही है तो दूसरी ओर जनता, विशेषकर किसान जनता, इनका विरोध कर रही है और उसका विरोध पश्चिम बंगाल स्थित नंदिग्राम की घटना से चरम पर पहुंच गया है. कई विपक्षी पार्टियां भी इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों का विरोध कर रही हैं. सिर्फ भाजपा इस मामले में विरोध करने की बजाए इसके कुछ पहलुओं पर पुनर्विचार की जरूरत बोलकर सिद्धान्ततः इसके पक्ष में कांग्रेस के साथ खड़ी है. इसमें कोई हैरानी वाली बात भी नही है, श्योंकि भाजपा नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के समय में ही इन क्षेत्रों के विकास का निर्णय लिया गया था. जहां तक माकपा का सवाल है तो वह बंगाल में इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों को अनुमति दे रही है और उसका विरोध करने पर किसानों पर गोलियां बरसाने में भी उसे कोई परहेज नहीं है लेकिन देश के बाकी हिस्सों में इनका विरोध करने का ढोंग कर रही है. बंगाल में इस प्रकार के तीन विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण के लिए अनुमति दे दी गई है, जिसमें नंदिग्राम एक है.

विपक्षी पार्टियों के विरोध के पीछे श्या कारण हैं, इन्हें समझना किसी के लिए जरा-सा भी मुश्किल नहीं है. यह भारत के तथाकथित लोकतंत्र का रिवाज रहा है कि जनता के हित इन पार्टियों को तभी नजर आते हैं जब ये विपक्ष में होती हैं, वरना सत्ता में आते ही इनकी आंखों पर पट्टी बंध जाती है और इन्हें केवल देश के बड़े पूंजीपतियों और विदेशी कम्पनियों के हित ही दिखाई देते हैं.

जनता का इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों के प्रति विरोध तेजी से बढ़ रहा है, खासकर महाराष्ट्र, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में. छत्तीसगढ़ में भी न क्षेत्रों की स्थापना की घोषणा की जा चुकी है, और यहां इनके खिलाफ विरोध के स्वर भी धीरे-धीरे मुखर होने लगे हैं. आइए, सबसे पहले विशेष आर्थिक क्षेत्रों की नीति पर नजर डालें –

विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाने का अर्थ श्या है?

वर्ष 2005 में भारत सरकार द्वारा लागू किए गए 'विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम – 2005' के अनुसार 'विशेष आर्थिक क्षेत्र' –

- एक कर-मुक्त क्षेत्र होगा जिसे व्यापार और कर मामलों के संदर्भ में विदेशी क्षेत्र माना जाएगा.
- यहां से आयात करने पर कोई लाईसेंस लेने की आवश्यकता नहीं होगी.
- तमाम आयातों पर कोई सीमा शुल्क नहीं.
- घरेलू बाजारों से खरीदे गए किसी भी पूंजीगत माल (जैसे कि मशीनें आदि) और कच्चे माल पर कोई उत्पाद शुल्क नहीं.
- पहले 5 सालों तक कोई आयकर नहीं. अगले 2 सालों तक 50 प्रतिशत से कम आयकर और अगले 3 सालों के लिए केवल 50 प्रतिशत आयकर.
- विदेशों से भी ठेके पर काम करवाने की छूट.
- विनिर्माण के क्षेत्र में कुछ क्षेत्रों को छोड़ कर बाकी तमाम क्षेत्रों में 100 प्रतिशत विदेशी प्रत्यक्ष पूंजी निवेश की खुली छूट.
- लघु उद्योगों के लिए आरक्षित रखी गई वस्तुओं में विदेशी पूंजी निवेश की कोई सीमा नहीं.
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों की इकाइयां श्रम सम्बन्धी कानूनों को मानने को बाध्य नहीं होंगी.
- विशेष आर्थिक क्षेत्रों में मजदूरों को हड़ताल, धरना या प्रदर्शन करने की इजाजत नहीं होगी. वे ये तमाम गतिविधियां इन क्षेत्रों से बाहर जाकर ही कर सकेंगे.

मई 2005 में कानून पारित होने के एक साल के भीतर-भीतर सरकार द्वारा गठित 'बोर्ड ऑफ अप्रूवल' (विशेष आर्थिक क्षेत्रों को हरी झंडी देने के लिए बनाया गया बोर्ड) ने 166 अनुमति पत्रों में से 148 को अपनी सहमति दे दी है. जिनकी संख्या इस प्रकार है –

| राज्य | अनुमति प्राप्त सेज | सिद्धान्ततः अनुमति प्राप्त सेज |
|---|---|---|
| आन्ध्रप्रदेश | 29 | – |
| महाराष्ट्र | 39 | 24 |
| हरियाणा | 11 | 23 |
| तमिलनाडू | 20 | 7 |
| कर्नाटक | 21 | 15 |
| गुजरात | 13 | 7 |
| उत्तरप्रदेश | – | 9 |
| पंजाब | – | 7 |
| अन्य | 15 | – |
| **कुल** | **148** | **92** |

कुल मिलाकर अश्टूबर 2006 की शुरूआत तक 181 विशेष आर्थिक क्षेत्रों को अनुमति दी जा चुकी है और 128 विशेष आर्थिक क्षेत्रों को सिद्धान्ततः अनुमति दी जा चुकी है. इन क्षेत्रों के लिए 75,000 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया जा चुका है और 2,25,000 एकड़ जमीन का अधिग्रहण और किया जाएगा. कारपोरेट घरानों की दादागिरी किस हद तक है इसका अंदाजा हरियाणा में रिलयंस के विशेष आर्थिक क्षेत्र से लगाया जा सकता है. हालांकि अभी तक इस विशेष आर्थिक क्षेत्र के लिए आवेदन तक भी बोर्ड ऑफ एप्रूवल के सामने नहीं आया है लेकिन रिलायंस ने न केवल हरियाणा में अपना काम शुरू कर दिया है, बल्कि जमीन का अधिग्रहण भी शुरू कर दिया है. इसी प्रकार दादरी (उत्तरप्रदेश) में जमीन अधिग्रहण सन् 2002 से शुरू हो चुका है और इस परियोजना की 80 प्रतिशत जमीन का अधिग्रहण पूरा भी हो चुका है, जबकि अभी तक उसे केवल सिद्धान्ततः ही सहमति मिली है. अगर इसे पूर्ण सहमति नहीं मिलती तो इस जमीन का श्या किया जाएगा? श्या इस जमीन को किसानों को वापिस किया जाएगा या उस पर अनिल अंबानी प्लॉट काटकर पैसा कमाएगा?

यूं भी केन्द्र द्वारा पारित विशेष आर्थिक क्षेत्र कानून के अनुसार कुल अधिग्रहित जमीन का केवल 25 प्रतिशत ही औद्योगिक प्रयोग में लाया जाएगा. बाकी का इस्तेमाल आधारभूत संरचना विकसित करने के लिए होगा. यानि विशेष आर्थिक क्षेत्रों में मनोरंजन स्थल, आवासीय स्थान, खेल के मैदान आदि-आदि के लिए होगा. बंगाल की वाम मोर्चा सरकार ने तथाकथित जनहित में इसके 50 प्रतिशत को औद्योगिक

इस्तेमाल के लिए रखने की घोषणा कर यह साबित करने की कोशिश की है कि वह आम जनता और देश के हित में सोचने वाली पार्टी है. जहां तक बाकी शर्तों की बात है, वे सब वाम मोर्चा सरकार को भी मंजूर हैं.

अभी तक जितने भी प्रदर्शन विशेष आर्थिक क्षेत्रों के खिलाफ हुए हैं, उनमें मुख्य मुद्दा खेती योग्य उपजाऊ जमीन का अधिग्रहण किए जाने के विरोध का है. अगर कल सरकार यह घोषणा कर देती है कि वह खेती योग्य जमीन का अधिग्रहण न करके बंजर जमीन पर इनका विकास करेगी तो कोई संदेह नहीं कि तमाम राजनीतिक पार्टियों का विरोध समाप्त हो जाएगा.

**श्या मुद्दा मात्र खेती योग्य जमीन के अधिग्रहण का ही है? दरअसल मामला इससे कहीं ज्यादा गहरा और खतरनाक है. विशेष आर्थिक क्षेत्र की पूरी अवधारणा ही देश-विरोधी, जनविरोधी और विकास विरोधी है.**

इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों का विकास देश के विकास और उन्नति के नाम पर किया जा रहा है. लेकिन ये कितना विकास करेंगे और किसका विकास करेंगे, यह सवाल बेहद महत्वपूर्ण है.

जैसे कि हम पहले बात कर चुके हैं, विशेष आर्थिक क्षेत्रों को विदेशी क्षेत्र के रूप में समझा जाएगा. 'विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम - 2005' में कहा गया है कि **इस देश में कुछ इलाके ऐसे भी होंगे जो भारत का हिस्सा होकर भी पूरी तरह भारत के अंग नहीं समझे जाएंगे.** ऐसा भारत के किसी इलाके की जनता की मांग पर नहीं किया जा रहा, बल्कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को असीम मुनाफा कमाने की इजाजत देने के लिए किया जा रहा है. जबकि कारगिल की कुछ चोटियों के लिए कुछ साल पहले इस देश के शासक वर्ग ने सैकड़ों सिपाहियों को मरवा दिया था, हजारों घायल हो गए थे, अरबों रुपए फूंक दिए थे. ये वे चोटियां हैं जिन पर घास का एक तिनका तक नहीं उगता. दूसरी तरफ भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने ही वर्ष 2000 में विशेष आर्थिक क्षेत्रों के विकास की नींव रखी थी, जिसे कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार तेजी के साथ आगे बढ़ा रही है. जिस जल्दबाजी से इन लोगों ने सैकड़ों की संख्या में विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण को मंजूरी दी है, वह जल्दबाजी यही इशारा कर रही है कि इन्होंने कुछ करोड़ रुपए रिश्वत लेकर देश की राजधानी के चारों ओर विशेष आर्थिक क्षेत्रों का एक गेरा बनू डाला है. इसका सीधा-सा अर्थ है कि राजधानी के चारों ओर छोटे-छोटे जापान, जर्मनी, अमरीका और इंग्लैण्ड स्थापित होने जा रहे हैं. सिर्फ यही नहीं, देश के हर भाग में इसी प्रकार के क्षेत्र विकसित करने की योजना है, जहां बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े पूंजीपतियों को मनमाने ढंग से व्यापार करने की इजाजत दी जाएगी. कोई सीमा शुल्क नहीं, कोई स्थानीय शुल्क नहीं; सस्ता श्रम, सस्ता कच्चा माल; तमाम सड़कें, संचार तथा यातायात के साधन भारत सरकार उपलब्ध करवा कर देगी. ऊपर से मजदूरों के आन्दोलनों का कोई 'झंझट' नहीं. इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों से होने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण होना अभी बाकी है.

**श्या कोई भी सच्चा देशभक्त इंसान इस चीज को बर्दाश्त कर सकता है कि इस देश में लाखों एकड़ जमीन पर भारत का कानून न चल कर कारपोरेट घरानों का अपना कानून चले! सर्वोच्च न्यायालय इन क्षेत्रों में कुछ भी करने में खुद को अक्षम महसूस करे! कारपोरेट घराने यहां से करोड़ों डॉलर कमा कर ले जाएं और जनता के किसी भी प्रतिनिधि का उस पर कोई नियंत्रण न हो! देश के गद्दार ही इस प्रकार का कानून बना सकते हैं. लेकिन अफसोस! इस प्रकार का कानून बनाने वाले आज खुद को देशभक्त बोल रहे हैं और इसका विरोध करने वालों को देशविरोधी और गद्दार करार दिया जा रहा है.**

विशेष आर्थिक क्षेत्रों की वजह से इस देश की जनता का कितना नुकसान होने वाला है इस पर केन्द्र सरकार का ही वित्त मंत्रालय कुछ रोशनी डाल रहा है. उसका कहना है कि सन् 2010 तक इन क्षेत्रों की वजह से कुल 1,60,000 करोड़ रुपए के राजस्व की हानि होने वाली है. केवल इतना ही नहीं, विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण को लेकर देश के शासक वर्ग इस कद्र उत्साहित हैं कि जिन विदेशी कारपोरेटों के साथ वे पहले समझौते कर चुके हैं और उन्हें पहले ही अनेक रियायतें दे चुके हैं, उनकी फैश्टरियों को भी वे विशेष आर्थिक क्षेत्रों का दर्जा देकर उनके मुनाफे में और ज्यादा वृद्धि कर रहे हैं. उड़ीसा का पोस्को स्टील इसका एक उदाहरण है. जब उसे पहले से ही बेहद सस्ते दामों पर कच्चा माल उपलब्ध करवाया जा रहा था तो अब उसे विशेष आर्थिक क्षेत्र का दर्जा देने की श्या तुक है?

**इन क्षेत्रों के निर्माण के बाद भारत में विकास के कुछ ऐसे द्वीप बन जाएंगे जहां बेहद सस्ते कच्चे माल और सस्ते श्रम की मदद से लगभग शून्य टैश्स देकर कारपोरेट जगत् मुनाफा कमाएगा और इन द्वीपों के बाहर विशाल समुद्र जैसे देश के बाकी इलाके होंगे जहां औद्योगिक विकास ठप्प हो जाएगा, किसान आत्महत्याएं कर रहे होंगे, कामकाज के अभाव में महिलाएं वेश्यावृत्ति करने पर मजबूर होंगी, बुनियादी सुविधाओं के अभाव में देश का आम नागरिक डेंगू, मलेरिया, टी.बी. व दस्त जैसी बीमारियों और भुखमरी के चपेट में आकर अकाल मृत्यु का शिकार होगा. द्वीपनुमा विशेष आर्थिक क्षेत्रों को विश्व पटल पर दिखाकर भारत के शासक वर्ग भारत के तथाकथित विकास का ढिंढ़ोरा पीटेंगे जबकि देश का 100 करोड़ जनमानस अमानवीय जीवन जीने को अभिशप्त होगा.**

छत्तीसगढ़ की रमन सरकार बार-बार कह रही है कि इससे छत्तीसगढ़ के लाखों लोगों को रोजगार मिलेगा. राजनांदगांव के पास 7 गांवों को उजाड़कर एक विशेष आर्थिक क्षेत्र की स्थापना के लिए समझौता हो चुका है. राजधानी रायपुर के पास माना में भी एक विशेष आर्थिक क्षेत्र बनने वाला है. खेती की बदहाली के चलते पहले ही छत्तीसगढ़ के किसान दूर-दूर तक पलायन करने को अभिशप्त हैं. अब सेज के नाम से किसानों की जमीनों का अधिग्रहण शुरू हो जाने से इस समस्या के और ज्यादा विकराल रूप धारण करने की पूरी सम्भावना है. चाहे विशेष आर्थिक क्षेत्र हों, या फिर बस्तर के लोहंड़ीगुड़ा में लगने वाला टाटा स्टील प्लान्ट हो या फिर दन्तेवाड़ा जिले के भांसी में लगने वाला एस्सार स्टील प्लान्ट हो, मतलब एक ही है, हजारों आदिवासियों और अन्य उत्पीड़ित जनता को उजाड़ने की कीमत पर प्रदेश की सारे प्राकृतिक संसाधनों को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हवाले कर देना. असल में इससे कितने लोगों को रोजगार मिलने जा रहा है, यह तस्वीर छुपाई जा रही है. इस प्रकार के विशेष आर्थिक क्षेत्रों में लगने वाले उद्योग उच्च तकनीक वाले होते हैं. इसलिए उसमें लगने वाला श्रम भी उच्च तकनीकी क्षमता वाला श्रम होता है, जिसकी संख्या कुछ सौ या कुछ हजार से ज्यादा नहीं होती. सरकारें जिन लाखों रोजगारों की बात करती हैं, उसमें माल ढुलाई आदि वाले अकुशल श्रमिकों से लेकर चाय-सब्जी की रेहड़ी लगाने वाले और वेश्याएं तक शामिल की जाती हैं. छत्तीसगढ़ प्रदेश जैसे आदिवासी बहुल इलाके में यह स्थिति और भी ज्यादा

बदतर होगी. चूंकि आम किसान, जिसकी जमीनों को हथियाकर ये विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाए जा रहे हैं, उसकी शिक्षा अभी भी कुशल श्रम वाली नहीं है इसलिए उसके लिए इन क्षेत्रों में कोई रोजगार होगा, इसमें पूरा संदेह है.

रोजगार के दावे में दूसरा मिथक है – कुल रोजगारों की संख्या में वृद्धि का. तमाम राजनीतिक पार्टियां जिसमें सीपीआई (एम) भी शामिल हैं, बड़े-बड़े दावे कर रही हैं कि विशेष आर्थिक क्षेत्रों के विकास से देश में कुल रोजगार में वृद्धि होगी. लेकिन इन क्षेत्रों की वजह से कितनी फैक्टरियां बन्द होंगी? कितने लोग जो आज रोजगार में हैं, कल सड़कों पर आ जाएंगे? इसकी एक तस्वीर मात्र इस तथ्य से मिल जाती है कि 1990 के बाद जब से भारत में नई आर्थिक नीतियां लागू की गई हैं, देश के एक तिहाई लघु उद्योग बन्द हो चुके हैं और उनमें काम करने वाले लाखों श्रमिक बेरोजगारों की कतारों में खड़े हो गए हैं. इसका परिणाम यह हुआ कि 1997 के बाद कुल श्रमिकों की संख्या में कमी आई है. ऐसा 1947 के बाद पहली बार हुआ है. विशेष आर्थिक क्षेत्र बनने के बाद कोई संदेह नहीं कि इस संख्या में और कमी आएगी.

विशेष आर्थिक क्षेत्रों का खतरनाक प्रभाव देश के स्थानीय उद्योगों पर भी पड़ने वाला है. हालांकि विशेष आर्थिक क्षेत्रों में उत्पादन निर्यात के लिए ही होगा. यानि इन क्षेत्रों में बनने वाला माल भारत के बाजारों में नहीं बिकेगा. लेकिन पाकिस्तान के विशेष आर्थिक क्षेत्रों में बनने वाला माल, बंगलादेश के विशेष आर्थिक क्षेत्रों में बनने वाला माल भारत के बाजारों में बिकेगा. चूंकि वहां भी यही सब सुविधाएं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को मिलने वाली हैं, वहां भी श्रम सस्ता है, इसलिए वहां बनने वाला माल भी सस्ता बनेगा. इस प्रकार स्थिति यह बन रही है कि पाकिस्तान या बंग्लादेश या इसी प्रकार के किसी गरीब देश में बनने वाला माल भारत के बाजारों में बिक कर यहां के उद्योगों को बर्बाद करेगा और भारत के विशेष आर्थिक क्षेत्रों में बनने वाला माल दूसरे गरीब देशों के स्थानीय उद्योगों को बर्बाद करेगा. चूंकि स्थानीय उद्योग ही बहुसंख्यक जनता को रोजगार उपलब्ध करवाते हैं, इसलिए रोजगार के अवसरों में और ज्यादा कमी आनी अवश्यंभावी है.

दो और मुद्दे हैं, जिन पर पहले ही अखबारों में काफी कुछ लिखा जा चुका है. पर उनके जिक्र के बिना विशेष आर्थिक क्षेत्रों के बुरे प्रभावों का वर्णन अधूरा रहेगा. ये दो मुद्दे हैं – खेती लायक जमीन का अधिग्रहण और इन क्षेत्रों के विकास के नाम पर किसानों से सस्ती जमीन खरीद कर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों या बड़े पूंजीपतियों को भूसम्पदा के कारोबार (रियल एस्टेट) के लिए लाखों एकड़ जमीन उपलब्ध करवा कर उन्हें करोड़ों-अरबों रूपयों का मुनाफा दिलवाना. यहां एक बात ध्यान देने लायक है कि जहां बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े पूंजीपतियों के हितों की रक्षा करने या उन्हें मुनाफा पहुंचाने की बात आती है तो सरकारें उदारीकरण की अपनी बनाई नीतियों को ही भूल जाती है. अगर किसी कारपोरेट घराने को किसी इलाके में विशेष आर्थिक क्षेत्र की स्थापना करनी है और उसके लिए उसे जमीन खरीदने की जरूरत है तो उसे सीधे किसानों से जमीन खरीदनी चाहिए. लेकिन कारपोरेट घराने जानते हैं कि ऐसा करना सम्भव नहीं है और उन्हें अधिक कीमत भी चुकानी पड़ेगी, इसलिए सरकार उनके लिए बिचौलिए का काम करती है और उन्हें किसानों से कम कीमत पर जमीन खरीद कर देती है.

केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें दावा कर रही हैं कि इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों के लिए उन जमीनों का अधिग्रहण नहीं करेंगे जहां साल में दो फसलें होती हों. लेकिन वास्तविकता इसके एकदम उलट है. इसमें भी खास बात यह है कि कारपोरेट घरानों का मुनाफा बढ़ाने में हमारे शासक वर्ग इस कद्र बेशर्म हो चुके हैं कि वे जनता से सरेआम झूठ भी बोलने लगे हैं. महामुम्बई के पास बनने वाला रिलायंस का विशेष आर्थिक क्षेत्र, दादरी (उत्तरप्रदेश) में बनने वाला अनिल अंबानी समूह का विशेष आर्थिक क्षेत्र, उड़ीसा में पोस्को और टाटा के विशेष आर्थिक क्षेत्र; ये सब ऐसे उदाहरण हैं जहां दो फसलें देने वाली जमीन का अधिग्रहण किया जा रहा है. लेकिन इन कम्पनियों के अधिकारी और देश के शासक वर्ग फिर भी बोले जा रहे हैं कि वे बंजर या गैर उपजाऊ जमीन का ही अधिग्रहण कर रहे हैं. क्या आम जनता के हितों के खिलाफ बार-बार निर्णय सुनाने वाला सर्वोच्च न्यायालय जनता के खिलाफ धोखाधड़ी करने के आरोप में, अपने कार्यकलापों के द्वारा जनता को भुखमरी और गरीबी में धकेल कर आत्महत्याएं करने के लिए मजबूर करने के आरोप में इस देश के शासक वर्गों के खिलाफ भी कोई मुकद्दमा चलाएगा?

छत्तीसगढ़ की जनता के पास विकास के नाम पर विस्थापन के ढेरों अनुभव हैं. विस्थापित किए जाने से पहले के वायदों और विस्थापन के बाद की वास्तविकता में क्या फर्क होता है, यहां के अधिकांश गांवों की जनता अच्छी तरह जानती है. भिलाई स्टील प्लान्ट, बैलाडीला लोहा खदान, नगरनार स्टील प्लान्ट, आदि कुछ उदाहरण मात्र हैं, जहां किसानों को वायदे के मुताबिक अभी तक मुआवजा नहीं दिया गया. फिर भी सरकारें लाखों रुपए का मुआवजा देने का सब्जबाग दिखा रही हैं. कई किसानों को भी यह लग रहा है कि तिना पैसा आने के बाद वे किसी दूसरी जगह जमीन खरीद सकते हैं या कोई काम-धंधा शुरू कर सकते हैं. चूंकि खेती से भी कुछ बच नहीं रहा है, इसके चलते यह भावना और भी मजबूत हुई है. लेकिन देश के कई हिस्सों की जनता, खासकर आदिवासियों के अनुभव क्या कहते हैं जो इस प्रकार के सब्जबाग देख चुके हैं? वहां के अनुभव बताते हैं कि किसी भी प्रकार के व्यापार या उद्योग धंधों के अनुभवों के बिना बहुसंख्यक जनता के ये लाखों रुपए कुछ महीनों या कुछ ही सालों में खत्म हो जाते हैं. तब उनके पास न तो पैसा बचता है और न ही जमीन. तब बिना किसी रोजगार और बिना किसी जमीन के ये लोग दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर हो जाते हैं.

देश के अन्य हिस्सों की ही तरह छत्तीसगढ़ में रोजगार कार्यालयों में दर्ज बेरोजगारों में ज्यादातर बिना किसी व्यावसायिक प्रशिक्षण वाले हैं, जिन्हें किसी किस्म के कुशल श्रम का कोई अनुभव नहीं है. इसी प्रकार खेतिहर मजदूरों की संख्या भी तेजी से बढ़ी है. यहां किसी भी किस्म का विकास करते वक्त इस विशिष्टता का ध्यान रखना आवश्यक है. श्रम आधिक्य वाले उद्योग इस प्रकार के श्रम को समाहित करने में सक्षम होते हैं. लेकिन जिस प्रकार के उद्योग इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों में लगने वाले हैं वे उच्च तकनीक आधारित उद्योग हैं, जहां इस प्रकार के श्रम के लिए कोई स्थान नहीं होगा. परिणामतः इन विशेष आर्थिक क्षेत्रों से छत्तीसगढ़ की ज्यादातर श्रम शक्ति तो बाहर ही रहेगी.

संक्षेप में, विशेष आर्थिक क्षेत्र बड़े पूंजीपतियों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और इनके पे-रोल पर पलने वाली अफसरशाही का विकास तो कर सकते हैं, लेकिन इस देश की जनता का विकास नहीं कर सकते. उल्टे आज जो भी न्यूनतम जीने लायक साधन आम जनता के पास उपलब्ध हैं, उन्हें भी ये तेजी से छीन लेंगे. साम्राज्यवादी नीतियों के प्रभाव और विश्वबैंक-आईएमएफ के दिशा-निर्देश में बनाए गए ये तथाकथित विकास क्षेत्र इस देश की जनता के लिए शवगृह अवश्य बनने जा रहे हैं. इसलिए यह इस देश की जनता को सोचना है कि वह इन्हें सहन करेगी या इन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए कमर कसेगी ! ✶

**गड़चिरोली**

# सूर्जागढ़ लौह खदान को साम्राज्यवादियों के हाथों जाने से रोककर यह ऐलान करो कि जल-जंगल-जमीन पर अधिकार हमारा है !

पिछले 5-6 सालों से सूर्जागढ़ की पहाड़ियों से लोहा निकालने के लिए समाचार पत्रों में खबरें आते रही हैं. कांग्रेस, भाजपा, शिवसेना, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के छुटभैया नेताओं से लेकर बड़े नेताओं के बयान आते रहे हैं कि सूर्जागढ़ लौह खदान खुलने से गड़चिरोली जनता की बेरोजगारी दूर हो जाएगी. ऐसे कोरे आश्वासनों से ये दोगले नेता असलियत को छुपा लेते हैं जिन्हें जानना हर नागरिक का हक है.

महाराष्ट्र राज्य विदर्भ क्षेत्र के अन्तर्गत गड़चिरोली जिला आता है जो अपने प्रचुर वन सम्पदा व घने जंगल के लिए मशहूर है. गड़चिरोली जिले के एटापल्ली तहसील में सूर्जागढ़ गांव से लगे पहाड़ों में लोहे का भण्डार है. एक अनुमान के अनुसार इन पहाड़ों में लगभग 9 करोड़ टन का लोहे का भण्डार है. बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, बड़े दलाल पूंजीपतियों और विदेशी कम्पनियों की गिद्ध दृष्टि सूर्जागढ़ लोहे के भण्डार पर पड़ चुकी है. वे येन केन प्रकारेण सूर्जागढ़ के लोहे को ले जाने के लिए उतावले हैं. इन्हें रोके रखा है तो माओवादी पार्टी के नेतृत्व में यहां की जनता का चल रहा क्रान्तिकारी आन्दोलन. अतः दलाल नेता इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और विदेशी कम्पनियों के पक्ष में तरह-तरह के प्रचार कर रहे हैं. कोई तो कह रहा है कि लोहा खदान को इन्हें देने से गड़चिरोली में बेरोजगारी दूर हो जाएगी, कोई इसे विकास की गंगा बताने में लगा है. इनमें सबसे आगे है गड़चिरोली जिले का प्रभारी मंत्री धर्माराव आत्रम. सूर्जागढ़ लोहा खदान की लीज बहुराष्ट्रीय कम्पनी 'एस्सार' को दे दिया गया है. एस्सार कम्पनी में भारत के बड़े दलाल पूंजीपतियों का भी हिस्सा है. एस्सार कम्पनी को खदान खोलने के लिए मंत्री धर्माराव बाबा आत्रम ने 100 एकड़ जमीन भी मुहैया कराया है ताकि लौह खनिज को पहाड़ों से खोदकर नीचे रखा जा सके. एस्सार कम्पनी को लोहा खदान खोलने की अनुमति देकर धर्माराव आत्रम ने देशद्रोही होने का ही परिचय दिया है. अपने कमीशन की लालच में उसने अपने गड़चिरोली की लौह खनिज सम्पदा को एस्सार जैसी विदेशी कम्पनियों के हाथ बेच दिया है.

सूर्जागढ़ लोहा खदान को एस्सार कम्पनी के हाथों में जाने से गड़चिरोली जनता को कोई फायदा नहीं होने वाला है. इससे निकलने वाले लोहे का उपयोग गड़चिरोली की जनता नहीं कर सकेगी. उल्टे उसे विस्थापन का शिकार होना पड़ेगा. सूर्जागढ़ से लगे 40 गांवों को हटाया जाएगा. हजारों एकड़ उपजाऊ जमीन बेकार हो जाएगी. दसियों हजार जनता बेघरबार हो जाएगी. उसे दर-दर भटकना पड़ेगा. सरकार चाहे कितने भी आश्वासन दे लेकिन सच्चाई तो यह है कि भारतदेश में विभिन्न कारखानों, परियोजनाओं और खदानों के कारण हुए विस्थापित जनता को आज तक स्थापित नहीं किया जा सका है. इसलिए यह कहना कि सूर्जागढ़ लोहा खदान से विस्थापित हुई जनता के हितों का पूरा-पूरा खयाल रखा जाएगा, कोरे आश्वासन के अलावा कुछ नहीं होगा. जिस पर विश्वास करना अपने आप को ठगाने के अलावा कुछ नहीं होगा. बेरोजगारों को जो रोजगार का झांसा दिया जा रहा है, वह सफेद झूठ के अलावा कुछ नहीं है. खदान का काम बड़े-बड़े व आधुनिक मशीनों से किया जाएगा. इसमें बहुत ही कम लोगों को काम मिलेगा. हमारे गड़चिरोली में प्रशिक्षित बेरोजगार नहीं के बराबर हैं. अतः सूर्जागढ़ लोहा खदान में बाहरी राज्य के लोगों को ही रोजगार मिलेगा. यहां के कुछ लोगों को रोजगार मिलेगा भी तो सफाई काम, सड़क बनाने का काम व पेड़ों की कटाई का काम ही मिलेगा, वह भी दैनिक मजदूरी के रूप में.

सूर्जागढ़ लोहा खदान खुलने से यहां की जनता को क्या-क्या नुकसान होगा, आइए इसे बिन्दुवार जानें -

- सूर्जागढ़ लोहा खदान को एस्सार कम्पनी को देने का मतलब ही है बड़े दलाल पूंजीपतियों के जरिए साम्राज्यवादी देशों को गड़चिरोली की लौह खनिज सम्पदा को कौड़ियों के दाम पर बेच देना. यह कृत्य देशद्रोही है.
- सूर्जागढ़ लोहा खदान खुलने से 40 गांवों के लोगों को विस्थापन की समस्या झेलनी पड़ेगी. उन्हें अपने घरों व खेतों से हाथ धोना पड़ेगा. दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा. अतः जन विरोधी है खदान शुरू करना.
- पर्यावरण विरोधी है - सैकड़ों एकड़ जंगल काटे जाएंगे, लौह युक्त पानी से नदियों का पानी पीने लायक नहीं रहेगा, और तो और सूर्जागढ़ से निकलने वाले झरनों व नालों का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा. खदान खुलने से पर्यावरण का संतुलन ही बिगड़ जाएगा.
- खदान का काम बड़े-बड़े मशीनों से किया जाएगा जिसमें कुशल मजदूरों की आवश्यकता पड़ेगी. गड़चिरोली के बेरोजगारों को नाम मात्र का ही रोजगार मिलेगा. यह कहना कि खदान खुलने से बेरोजगारी दूर होगी, सफेद झूठ के अलावा कुछ नहीं है.
- गड़चिरोली के लोहे का उपयोग गड़चिरोली की जनता के लिए नहीं बल्कि साम्राज्यवादी देशों के फायदे के लिए किया जाएगा. इसलिए भी सूर्जागढ़ का खदान खोलना गड़चिरोली जनता के हित में नहीं होगा.
- सूर्जागढ़ खदान खुलने से बाहरी लोगों का यहां आना-जाना और निवास करना शुरू हो जाएगा. इस वजह से आदिवासी संस्कृति पर हमले होंगे और उन्हें नीचा देखा जाएगा.
- बाहरी लोगों के द्वारा आदिवासी महिलाएं यौन शोषण की शिकार होने लगेंगी. एक खदान इलाके की विकृत संस्कृति यहां फैलने लगेगी.
- लौह युक्त पानी पीने से यहां की जनता पेट दर्द, हृदयरोग, चर्मरोग, अल्सर व पीलिया जैसी जानलेवा बीमारियों के शिकार होने लगेगी.
- सूर्जागढ़ पहाड़ वह इलाका है जिसे गड़चिरोली के वीर सपूत वीर बाबूराव सड़मेक ने अपना आधार बनाकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह किया था. यहां खदान खुलने से गड़चिरोली जनता की यह ऐतिहासिक धरोहर समाप्त हो जाएगी.

*(शेष पृष्ठ 19 में ....)*

# प्रति-क्रान्तिकारी सलवा जुडुम सैनिक अभियान के पाशविक हमले

## सलवा जुडुम के नाम पर जारी हत्या, बलात्कार और आतंक का सिलसिला

इस दमनकारी सैन्य अभियान के खिलाफ जनता के बहादुराना प्रतिरोध तथा सलवा जुडुम को लगातार मिल रही विफलता से रमन सरकार बौखलाकर जनता पर और ज्यादा पाशविक हमले करवा रही है. खून के प्यासे केपीएस गिल को अपना सलाहकार नियुक्त कर उसके पंजाब फार्मुले पर अमल करते हुए निर्दोष आदिवासियों को झूठी मुठभेड़ों में मार डालने की नीति लागू कर रही है. अगस्त 2006 से दिसम्बर 2006 तक दक्षिण एवं पश्चिम बस्तर डिवीजनों में 40 से ज्यादा लोगों की सीआरपीएफ, नगा-मिजो पुलिस एवं जिला पुलिस बलों ने मुठभेड़ के नाम पर हत्या की. इसके अलावा खासकर नगा जवानों, मिजो जवानों और स्थानीय एसपीओ ने दर्जनों आदिवासी महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया है. बस्तर में तैनाती के लिए आए मिजो जवानों ने अश्टूबर 2006 में राजधानी रायपुर शहर में ही महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार कर आते ही बदनामी हासिल की. सरकार ने दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की जिम्मेदारी से पल्ला झाड़कर उन्हें आनन-फानन में बस्तर भेजने की घोषणा की. बस्तर में भोलीभाली आदिवासी महिलाओं और युवतियों के साथ वे आए दिन अत्याचार कर रहे हैं. कभी-कभार ही नकुलनार जैसी घटनाएं रोशनी में आ रही हैं.

13 जुलाई 2006 को सीआरपीएफ और एसपीओ के संयुक्त दल ने भैरमगढ़ इलाके के पुलादी गांव पर हमला कर धान कटाई कर रहे लोगों पर अंधाधुंध गोलीबारी की. इस एकतरफा गोलीबारी में 4 लोग मारे गए. ऐमला पाण्डे नामक गर्भवती महिला पर इन दरिन्दों ने गोली चलाई जो उसकी कोख को चीरते हुए चली गई, जिससे वह मौके पर ही अपने अजन्मे बच्चे के साथ मारी गई. खून से लथपथ इस महिला की लाश को उन्होंने जूतों से रौंदकर अपनी पाशविकता का नंगा प्रदर्शन किया.

11 अगस्त 2006 को मद्देड एरिया के गांव बेल्लमनेण्ड्रा पर हमला कर 30 घर जला दिए. इससे जनता की लाखों रुपए की कीमती सम्पत्ति नष्ट हो गई. गाय चराने वाली 11 साल की लड़की ओयम बुज्जी को पुलिस ने जंगल में पकड़कर गोलियों से भून डाला. इस बच्ची की हत्या करने के बाद सीआरपीएफ और एसपीओ ने उसकी जीभ काट डाली, कान को फोड़ दिया और लाश तालाब के पास फेंक दी.

*(.... पृष्ठ 18 का शेष )*

कुल मिलाकर देखें तो सूर्जागढ़ लोहा खदान खुलने से यहां की जनता को कोई फायदा नहीं होने वाला है. उल्टे यह खदान खुलने से यहां की जनता को जो नुकसान होने वाला है उसकी भरपाई कभी भी नहीं हो सकती. मंत्री धर्माराव आत्राम जैसे दलाल, जन विरोधी और देशद्रोही नेता सूर्जागढ़ लौह खदान खुलवाने के लिए एड़ी-चोटी एक किए हुए हैं. इनका एक मात्र मकसद है कि बड़े दलाल पूंजीपतियों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और साम्राज्यवादियों को कुछ कमीशन के बदले फायदा पहुंचाना है. अतः गड़चिरोली जनता का यह महत्वपूर्ण कर्तव्य बनता है कि वह किसी भी हालत में सूर्जागढ़ लोहे के खदान को खुलने मत दे तथा ऐसे सभी नेताओं को मार भगाए जो सूर्जागढ़ लोहे के खदान को खुलवाने की पैरवी कर रहे हैं. ✶

2006 के नवम्बर माह के पहली सप्ताह में नेशनल पार्क एरिया के गांव पेद्दा काकिलेर में घर में धान कूटने वाली एक महिला और उसकी बेटी दोनों को पुलिस ने पकड़कर बुरी यातनाएं दीं. दोनों के साथ सामूहिक बलात्कार कर मां को मार डाला जबकि बेटी को अधमरी हालत में छोड़ दिया.

26 नवम्बर 2006 को गांव करेंगुण्डम पर हमला करने वाली पुलिस ने पद्दाम मुंगडू और पद्दाम मंगलू को पकड़कर बुरी यातनाओं का शिकार बनाकर उनकी हत्या कर डाली. बाद में उनके जननांगों को काटकर लाशें जंगल में फेंक दीं.

30 नवम्बर 2006 को सीआरपीएफ, जिला पुलिस और एसपीओ ने मिलकर ऊरेपाल गांव पर धावा बोला. उन्होंने बोगामी राधे और माड़वी सुश्कू को पकड़कर बुरी तरह पीटा. राधे के साथ सामूहिक बलात्कार कर उसे गोलियों से भून डाला. सुश्कू को पेड़ पर लटकाकर डंडों एवं बन्दूक की कुंदों से पीट-पीटकर आखिर में गोलियों से भून डाला. बाद में यह वक्तव्य दिया कि नश्सलियों के साथ हुई मुठभेड़ में एक महिला नश्सली समेत दो नश्सलियों की मौत हो गई.

ग्राम चेरपाल स्थित पुलिस कैम्प के पास पदेड़ा और रेगड़गट्टा गांवों के 4 निरीह लोगों को पकड़कर बुरी किस्म की यातनाएं देने के बाद मुठभेड़ के नाम पर मार डाला गया. दरअसल 30 नवम्बर 2006 को चेरपाल से निकली सीारपीएफ एवं एसपीओ की संयुक्त टुकड़ी ने रेगड़गट्टा एवं पदेड़ा में अपने खेतों में धान काट रहे 20 स्त्री-पुरूषों को दौड़ा-दौड़ाकर पकड़ लिया. पदेड़ा गांव के निवासी एवं स्थानीय जन नेता कॉमरेड हपका लश्खू, जो अपने परिवार वालों से मिलने आए हुए थे, पकड़े गए लोगों में शामिल थे. बाद में इन सभी को चेरपाल कैम्प ले जाया गया, जहां उन्हें अमानवीय यातनाएं दी गईं. उन दरिंदों ने मानवता को ही कलंकित करते हुए पकड़ी गई ग्रामीण महिलाओं के साथ उनके बच्चों के सामने ही सामूहिक बलात्कार किया. उसके बाद रात के 8 बजे इनमें से हपका लश्खू (40), कोरसा कोवाल (28), कोरसा बुधराम (30) और हपका गुण्डा (30) को चेरपाल नदी के पास ले जाकर गोलियों से भून डाला. अगले दिन बस्तर रेंज के आई.जी. आर.के. विज ने इस जघन्य हत्याकाण्ड पर एक झूठी कहानी के सहारे परदा डालने की कोशिश की. उसने बयान जारी किया कि चेरपाल गांव में स्थित पुलिस कैम्प एवं राहत शिविर पर करीब एक हजार नश्सलवादियों ने हमला किया. रात में 2-3 बार उन्होंने धावा बोलने की कोशिश की, जिसे नाकाम किया गया. इस गोलीबारी में 4 नश्सली मारे गए - यह था उसके बयान का सारांश. लेकिन आसपास की समूची जनता जानती है कि सच्चाई श्या है. इस तरह की हत्याओं से वे जनता में दहशत फैलाकर क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलना चाह रहे हैं. लेकिन वे यह भूल रहे हैं कि ऐसा करके जनता को और भी ज्यादा तीखी नफरत एवं तीव्रता से लड़ने पर मजबूर कर रहे हैं. कोतरापाल से लेकर गंगलूर, विंजरम, एर्राबोर, दरभागूड़ा, बासागूडेम, एनएमडीसी (बैलाडीला), मुरकीनार... और अब रानिबोदली तक जारी बस्तरिया आदिवासी जनता के भूमकाल प्रतिरोध में हजारों हजार लोगों की प्रत्यक्ष और परोक्ष भागीदारी इसी सच्चाई को फिर एक बार साबित कर रही है कि सिर्फ और सिर्फ जनता ही इतिहास का निर्माता है. ✶

# महिलाओं पर हिंसा और बलात्कार के जरिए क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचल नहीं सकते !

पिछले डेढ़ साल से जारी दमनकारी सलवा जुडूम से दक्षिण व पश्चिम बस्तर में आदिवासी जन जीवन अस्तव्यस्त हुआ है. कॉर्पेट सेश्यूरिटी के नाम से हजारों सीआरपीएफ, नगा, मिजो पुलिस बलों को उतारकर हिंसा का नंगा नाच किया जा रहा है. मुठभेड़ों के नाम से ग्रामीणों को मारना पुलिस, अर्ध सैनिक बलों एवं एसपीओ की दिनचर्या बन गया है. इस सर्वाधिक जुल्मी अभियान का सबसे ज्यादा शिकार बनाया जा रहा है महिलाओं को. क्रान्तिकारी आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी को खत्म करने के साथ-साथ पुरुषों को क्रान्तिकारी आन्दोलन से दूर करने के लिए भी उनकी घर की महिलाओं (पत्नी, मां, बहनों और बच्चियों) के साथ बलात्कार पुलिस-अर्ध सैनिक बलों के द्वारा एक हथियार के तौर पर ही इस्तेमाल किया जा रहा है. पति के सामने, बच्चों के सामने महिलाओं के साथ बलात्कार करना, बाद में मार डालना, मध्ययुगीन बर्बरता को भी पीछे छोड़ते हुए महिलाओं के स्तनों को काट डालना, गुप्तांगों को कुल्हाड़ियों से काटना आदि घटनाओं के बारे में सुनकर हर इन्सान का खून खौल जाता है. केवल पश्चिम बस्तर में ही अब तक 60 से ज्यादा महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया. (दक्षिण बस्तर और माड़ डिवीजन के इन्द्रावती इलाके में भी सलवा जुडूम जारी है, जहां के पूरे आंकड़ें फिलहाल उपलब्ध नहीं हैं - सं) 100 से ज्यादा महिलाओं को झूठे केसों में फंसाकर बिना किसी मुकदमा के जेलों में क़ैद कर रखा गया. कम से कम 20 महिलाओं को सामूहिक बलात्कार के बाद गोलियों से भून डाला गया, जिनमें 3 गर्भवती महिलाएं थीं. पेश है इन महिलाओं के ब्यौरे -

## सलवा जुडूम के नाम पर जारी फासीवादी दमन अभियान के तहत सामूहिक बलात्कार के बाद मारी गई महिलाओं की सूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कोरसा संतो (20) | पुलगट्टा | 2/9/05 | सीआरपीएफ व स.जु. गुण्डों ने सामूहिक बलात्कार कर हत्या के बाद स्तनों को काटकर गुप्तांगों को चाकुओं से गोद डाला. लाश को झाड़ियों में फेंक दिया. |
| 2. | भोगाम सोमारी (36) | दोरुम | 2/9/05 | स.जु. गुण्डों ने उनके पति के सामने ही कुल्हाड़ी से मार डाला. |
| 3. | वेडिंजे नंगी | मूकावेल्ली | 5/10/05 | नौ माह की इस गर्भवती पर नगा पुलिस ने गोलियां चलाकर कोख को छलनी कर दिया, जिससे बच्चा और मां तड़प-तड़प कर खत्म हो गए. |
| 4. | वेडिंजे मल्ली (20) | मूकावेल्ली | 5/10/05 | नंगी की सौतेन है जिसे नगा पुलिस ने गोलियों से भून डाला. |
| 5.<br>6. | मोड़ियम सुश्की (25)<br>कुरसम सुश्की (23) | पेद्दा कोरमा | 7/10/05 | नगा पुलिस और स.जु. गुण्डों के हमले के समय अपने गांव की सुरक्षा के लिए पहरेदारी कर रही थीं. सामूहिक बलात्कार कर स्तनों को कुल्हाड़ियों से काट डाला गया. |
| 7. | मोड़ियम बुदरी (30) | पेद्दा कोरमा | 16/12/05 | पुलिस एवं स.जु. के गुण्डों ने मार डाला. |
| 8. | मड़कम सन्नी (35) | एटेपाड़ | 2/9/05 | नगा पुलिस ने गोली मारकर हत्या की. |
| 9.<br>10. | हेमला डोकरी (50)<br>हेमला सोमारी (19) | कर्रेमरका | 10/11/05 | दोनों मां-बेटी की पुलिस व स.जु. गुण्डों ने हत्या की. |
| 11. | ताती मंगली (20) | परालनार | 11/7/06 | सीआरपीएफ और एसपीओ के संयुक्त गश्ती दल ने निहत्थी मंगली की गोली मारकर हत्या की. |
| 12. | हेमला पाण्डे (27) | पुलादी | 13/7/06 | नौ माह की इस गर्भवती जब खेत में काम कर रही थी, तब सीआरपीएफ व एसपीओ ने इसकी कोख को गोलियों से छलनी कर दिया जिससे क्षत-विक्षत भ्रूण बाहर निकल आया. |
| 13. | पूनेम गुट्टो (45) | पुलादी | 13/7/06 | खेत में बुआई करते समय सीआरपीएफ ने गोली मारकर मुठभेड़ की कहानी गढ़ दी. |
| 14. | माड़वी मोन्डो (25) | गोरनम | 28/8/06 | गर्भवती रही इस महिला को सीआरपीएफ ने झूठी मुठभेड़ में मार डाला. |
| 15. | माड़वी लखमी (25) | गोरनम | 28/8/06 | इस महिला को झूठी मुठभेड़ में मार डाला गया. |
| 16. | एक अज्ञात महिला | नेतिकाकिलेर | .../11/06 | इस महिला को उसकी बेटी के साथ पकड़ कर दोनों के साथ सामूहिक बलात्कार कर मां को मारडकर बेटी को अधमरा कर दिया. |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 17. | भोगामी राधे (30) | दोरूम | 30/11/06 | स.जु. के डर से अपना गांव छोड़कर उरेपाल में रह रही थी, जहां पुलिस ने पकड़कर सामूहिक बलात्कार के बाद मुठभेड़ के नाम से गोली मार दी. |
| 18. | ओयाम बुज्जी (19) | बेल्लमनेन्ड्रा | 11/8/06 | गाय चरा रही इस युवती को सीआरपीएफ और स.जु. गुण्डों ने पकड़कर निर्ममतापूर्वक मार डाला. जीभ काट डाली. |
| 19. | पोयामी मोती (21) | जांगला | 26/11/06 | वाजेड़ एलओएस सदस्या रही इस युवती को चेरला के पास आन्ध्र के ग्रे-हाउण्ड्स ने हत्या की. |
| 20. | बेको मुन्नी (20) | रेंगेयगूड़ेम | 9/6/06 | देवरपल्ली गांव में पकड़कर कुकर्म के बाद मुठभेड़ के नाम पर मार डाला गया. |
| 21. | माड़वी एंकी (20) | गुमपाड़ | 29/1/06 | गंगलूर राहत शिवर में पीएलजीए द्वारा किए गए हमले के दौरान पुलिस की गोलाबारी की शिकार हुई. |
| 22. | वेको फगनी (19) | परकेली | 25/3/06 | परकेली गांव में पुलिस ने फर्जी मुठभेड़ में मार डाला. |
| 23. | माड़वी भीमे (20) | ईदवाड़ा | 25/3/06 | परकेली गांव में पुलिस ने इसे पकड़कर यातनाएं देकर फर्जी मुठभेड़ में हत्या की. |
| 24. | पूनेम बुधी (25) | तोयनार (भै.ग.) | 25/3/06 | विवरण नहीं मिला पाया. |
| 25. | गंटला श्रीदेवि (19) | लिंगागिरी | 15/12/06 | विवरण नहीं मिल पाया. |
| 26.<br>27. | सीलोकं वेको (25)<br>आयते आत्रम (28) | ताकिलोड़ | 11/2/07 | 9/2/07 को ये दोनों शादीशुदा महिलाएं जब साग-सब्जी की तलाश में जंगल में गई हुई थीं, तब गश्त पर आई पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया. दो दिन तक बुरी यातनाएं देकर, बलात्कार कर गोली मार दी और मुठभेड़ में दो महिला नक्सलियों के मारे जाने की घोषणा की. |

## सलवा जुडूम के नाम पर जारी फासीवादी दमन अभियान के तहत सामूहिक बलात्कार का शिकार हुई महिलाओं की सूची

| क्र.सं. | नाम | गांव | ब्लॉक |
|---|---|---|---|
| 1. | माड़वी बुदरी | कोंडम | भैरमगढ़ |
| 2. | सोमली | " | " |
| 3. | मुन्नी | " | " |
| 4. | मोड़ियम संपो | करेंबोदली | " |
| 5. | मोड़ियम सीमो | " | " |
| 6. | ओयम बाली | पल्लेवाया | " |
| 7. | माड़वी पार्वती | करेंपोंदुम | " |
| 8. | माड़वी कोपे | " | " |
| 9. | भोगाम गूगो (गर्भवती) | नीलाम | " |
| 10. | कड़ती मुन्नी | फुलगट्टा | " |
| 11. | कड़ती पाण्डे | वेचाम | " |
| 12. | सुकनी बाई | " | " |
| 13. | फूलवती | " | " |
| 14. | शांति | " | " |
| 15. | कोरसा मुन्नी (22) | जांगला | " |
| 16. | कोरसा बुटकी (16) | " | " |
| 17. | कलमू ज्योति (16) | जांगला | " |
| 18. | माड़वी सरिता (23) | करेंमरका | " |
| 19. | तेलम जमली (23) | " | " |
| 20. | कड़ती जयमति | हरियाल (पिटोडगूडेम) | " |
| 21. | सुखमती | " | " |
| 22. | कुंजाम लखमी (26) (गर्भवती) | पोट्टेनार | " |
| 23. | वेंजाम जोगी (23) | बड़े डुंगाली | " |
| 24. | कोवासी सोमली | केशकुत्तुल | " |
| 25. | कोवासी हिड़मे | पोट्टेनार (आटुम) | " |
| 26. | मंगली | " | " |
| 27. | कुरसाम हिड़मे | " | " |
| 28. | उरसा सनकी | केशकुत्तुल | " |
| 29. | कोवासी शांति | " | " |
| 30. | बोयाम बुदरी | कोतरापाल | " |
| 31. | मिड़ियाम मंगली | " | " |
| 32. | पोड़ियम सुश्की | " | " |
| 33. | उरसा मंगली | केशकुत्तुल | " |
| 34. | पोड़ियम सनकी | " | " |
| 35. | पूनेम पायके | सावनार | बीजापुर |
| 36. | हेमला बुदरी | केशकुत्तुल | भैरमगढ़ |

*(शेष पृष्ठ 13 में ....)*

# महिलाओं के साथ अपमान और अत्याचार, यही है 'राहत' शिविरों की सच्चाई

दक्षिण बस्तर (दन्तेवाड़ा जिला) में सलवा जुडूम शुरू होने के बाद हजारों लोगों को जोर-जबर्दस्ती से गांवों से लाकर 20 'राहत' शिविरों में रखा गया है. लोगों के घर जलाकर, फसलों और खेतों में आग लगाकर, सम्पत्ति लूटकर, शिविर में न आने पर जान से मार देने की धमकियां देकर उन्हें इस प्रकार 'राहत' शिविरों में रहने पर मजबूर किया किया गया. दरअसल ये नाल्सीवादी बन्दी शिविरों से पूरी तरह मेल खाते हैं, बाहर की जनता को, खासकर मध्यमवर्ग के बुद्धिजीवियों को धोखा देने के लिए ही इनका नामकरण 'राहत शिविर' के रूप में किया गया. इन शिविरों में रह रही आदिवासी युवतियों की स्थिति बहुत ही खराब है. इन कैम्पों का नियंत्रण करने वाले एसपीओ तथा इनकी 'सुरक्षा' में तैनात सीआरपीएफ बल आधी रात को शिविरार्थी युवतियों को उठा ले जाते हैं और उन्हें अपनी हैवानियत का शिकार बनाते हैं. ऐसी कई महिलाएं इसलिए भी इन अत्याचारों को चुपचाप सह लेती हैं श्योंकि विरोध करने पर उन्हें 'महिला नश्सली' बताकर मार डालने का खतरा हमेशा बना रहता है. पुलिस-प्रशासन 'सामूहिक विवाह' के नाम पर शिविरों में रह रही युवतियों का विवाह एसपीओ के साथ करवा रहा है. इस तरह भोलीभाली युवतियों को जबरन अपने दमनकारी मशीन का हिस्सा बना रहा है.

शिविरों में रहने वाले अत्यधिक ग्रामीण अपने गांव जाकर खेती-किसानी करते हुए जीना चाहते हैं. किन्तु पुलिस, एसपीओ और स.जु. के गुण्डे उन्हें जाने नहीं देते हैं. उदाहरण के लिए कोतरापाल और परालनार के ग्रामीणों को उनके खेतों की जोताई करने से रोका गया है. मिरतुल, पिनकोंडा, माटवाड़ा, गंगलूर, चेरपाल, पामुलवाया, आदि पुलिस थाना व शिविरों के आसपास के गांवों पर पुलिस के लगातार हमलों के चलते धान की कटाई नहीं हो पाई है. दल्ला नेंड्रा, पुसनार, आदि गांवों में खलिहानों में रखी फसल (खरही) में पुलिस ने दिसम्बर 2006 में आग लगाई. इसके अलावा, शिविरों में खाने-पीने की व्यवस्था एवं रहने की सुविधाओं का हाल बहुत ही बुरा है. बीजापुर, बंगापाल, एर्राबोर, आदि शिविरों में रह रहे कई लोग उल्टी-दस्त का शिकार हो कर बेमौत मारे गए, जिनमें ज्यादातर महिलाएं एवं बच्चे हैं. हजारों लोग खुजली के रोग से परेशान हैं. इन से तंग आकर अधिकांश लोग शिविर से भागकर अपने गांव जा रहे हैं. लेकिन पुलिस एवं एसपीओ इन्हें मारपीट कर दोबारा शिविरों में घसीटकर ले जा रहे हैं. इसीलिए दिसम्बर के पहली सप्ताह में 'राहत' शिविरों का निरीक्षण करने आए राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्यों मालिनी भट्टाचार्य और स्नेहलता हेम्ब्रम के सामने बंगापाल शिविर में रह रही महिलाओं ने अपनी आपबीती सुनाई और सलवा जुडूम के भय से 'राहत' शिविर में रहने की बात स्पष्ट शब्दों में कही. कारपेट सेश्यूरिटी के नाम पर बीजापुर पुलिस जिले में हर 3-5 किलोमीटर के दायरे में एक पुलिस कैम्प खोला गया है. इस प्रकार यहां का जन-जीवन संगीनों के साये में है. परम्परागत तीज-त्यौहार, मेला-मण्डई, आदि से भी वंचित हो रहे हैं. पुलिसिया आतंक के चलते कई गांव वीरान हैं. इससे खासतौर पर महिलाएं मानसिक तौर पर बेहद तनावग्रस्त हैं.

पुलिस एवं सलवा जुडूम के गुण्डों ने दिसम्बर 2006 तक केवल बीजापुर पुलिस जिले में ही 250 से ज्यादा लोगों की हत्या की है. कोतरापाल, जांगला, हरियाल, पुलादि, पुसनार, मनकेली, आदि गांवों में 10-10 से ज्यादा लोगों की हत्या की गई. इन गांवों में लगभग सभी महिलाएं अपने पति, भाई, पिता या अन्य किसी रिश्तेदार को खोने की पीड़ा को झेल रही हैं. अपने पुरुषों को खोकर बच्चों को गोद में लेकर पुलिस के आतंक से बचते हुए जंगल में पेड़ों के नीचे इधर से उधर, उधर से इधर भटकते हुए जी रही हैं.

पुलिस व सलवा जुडूम के अत्याचार सिर्फ ग्रामीण आदिवासी महिलाओं तक सीमित नहीं हैं. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और स्कूली छात्राओं को भी नहीं बख्शा जा रहा है. कई ऐसे उदाहरण भी हैं कि कुछ जगहों पर युवतियों के साथ पुलिस व एसपीओ पहले सामूहिक बलात्कार कर शिविरों में रखकर बाद में उन्हीं को एसपीओ बनाया गया है. उदाहरण के लिए बीजापुर-भैरमगढ़ सड़क पर स्थित जांगला गांव की युवतियों मुन्नी, बुटकी और ज्योति के साथ नगा पुलिस, एसपीओ और सलवा जुडूम के गुण्डों ने सामूहिक बलात्कार कर अपने शिविरों में कैद कर दिया था. वर्तमान में ये तीनों युवतियां एसपीओ बनकर काम कर रही हैं. उन्हीं को 'नश्सली आतंक के खिलाफ बन्दूक थामी' युवतियों के रूप में प्रचारित किया जा रहा है. लगभग सभी महिला एसपीओ जिला पुलिस, नगा पुलिस, सीआरपीएफ एवं पुरुष एसपीओ की कामवासना की भेंट चढ़ाई जा रही हैं. बीजापुर जिले में लगभग 50 ऐसे मामले प्रकाश में आए हैं जिनमें महिला एसपीओ का गर्भपात करवाया गया.

जेलों में बन्द महिलाओं की स्थिति बहुत ही बदतर है. नश्सलियों के नाम पर जगदलपुर जेल में 350 से ज्यादा लोगों को बन्दी बनाकर रखा गया है, जिनमें 40 महिलाएं शामिल हैं. इसके अलावा दन्तेवाड़ा और सुकमा सब-जेलों में सैकड़ों लोगों को बन्दी बनाकर रखा गया है. महिला बन्दियों को नियमित रूप से पेशी में न्यायालय नहीं ले जाया जा रहा है. इनके साथ अभद्र व्यवहार आम बात है. तमाम सुविधाओं और विधिक सहायता से इन्हें वंचित किया जा रहा है.

दन्तेवाड़ा जिला में सलवा जुडूम के नाम से चल रहे इस दमनकारी अभियान में महिलाओं के साथ बलात्कार को एक हथियार के बतौर इस्तेमाल किया जा रहा है. आज भैरमगढ़, बीजापुर, भोपालपट्टनम, ऊसूर, कोंटा, सुकमा, कुआकोंडा विकासखण्डों में नागरिक प्रशासन नाम की कोई चीज ही नहीं रह गई है. पुलिस, सीआरपीएफ, सलवा जुडूम के गुण्डा नेता और एसपीओ ही प्रशासन को चलाते हैं. संघम सदस्य या नश्सली के नाम पर किसी को भी पकड़कर यातनाएं देना, मुठभेड़ में हत्या कर देना उनका रोजमर्रा का काम बन गया. घरों में पुरुष सदस्यों के मारे जाने से बढ़े पारिवारिक बोझ, अभावों के बीच बाल-बच्चों को पालने-पोसने की जिम्मेदारी और इन सबसे उपजे मानसिक तनाव के चलते महिलाओं की जिन्दगी बेहद दयनीय है. आज बस्तर की महिलाओं की हालत की तुलना पूर्वोत्तर के मणिपुर आदि इलाकों में भारतीय सेना के अत्याचारों को झेल रही महिलाओं, इराक और अफगानिस्तान पर अमेरिकी कब्जे के बाद पीड़ा झेल रही महिलाओं से की जा सकती है. आए दिन 'लोकतंत्र' की रट लगाने वाले तथा नश्सलियों को 'लोकतंत्र के विरोधी' बताने वाले नेता अपनी ही सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय महिला आयोग की रिपोर्ट को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं. दरअसल महिला आयोग ने सिर्फ सड़कों के किनारे बसे सरकारी तंत्र द्वारा संचालित 'राहत' शिविरों में रहने वाली महिलाओं से कुछ घण्टों में की गई बातचीत, वह भी पुलस-एसपीओ की देखरेख में, तक सीमित होकर अपनी रिपोर्ट तैयार की. इस सीमित रिपोर्ट पर भी इनकी बौखलाहट से साबित होता है कि इनके अन्दर लोकतांत्रिक समझ कितनी ज्यादा है!? दरअसल महिला आयोग ने अपनी रिपोर्ट में जो कुछ कहा वह बस्तर की महिलाओं पर जारी अनगिनत अमानवीय जुल्मों का हजारवां हिस्सा भी नहीं है. ✶

# प्रति-क्रान्तिकारी सलवा जुडूम अभियान में अब तक मारे गए लोगों की सूची

('प्रभात' के अश्टूबर-दिसम्बर '05 के अंक में हमने 64 लोगों की सूची दी थी. तब से इकट्ठे किए गए नामों की सूची क्रमांक 65 से पेश है. - सं.)

| क्र. | नाम | उम्र | गांव | तारीख |
|---|---|---|---|---|
| 65 | पुनेम मंगलू | 55 | मनकिल | 25/9/05 |
| 66 | मोड़ियम भदरु | 18 | मनकिल | 15/9/05 |
| 67 | मोड़ियम आयतू | 30 | मनकिल | 25/9/05 |
| 68 | सोड़ी कोसाल | 21 | गोस्नम | 15/5/05 |
| 69 | उरसा मनी | 20 | गोस्नम | 18/11/05 |
| 70 | हपका मुन्नाल | 25 | - | 20/7/05 |
| 71 | कोरसा लखमू | 30 | - | 2/12/05 |
| 72 | हपका विज्ञाल | 28 | - | 20/2/05 |
| 73 | सोड़ी फग्नू | 32 | - | 2/5/05 |
| 74 | कोरसा मुन्ना | 20 | - | 2/5/05 |
| 75 | ताती लच्छू | 22 | काकेक्कोरमा | 27/9/05 |
| 76 | मोड़ियम सोमलू | 25 | पदेड़ा | 12/9/05 |
| 77 | पुनेम मंगू | 45 | पदेड़ा | 15/12/05 |
| 78 | ताती शंकर | 23 | रेगड़गट्टा | 1/12/05 |
| 79 | कोरसा बदरु | 30 | रेगड़गट्टा | 1/12/05 |
| 80 | ताती गुडूम | 20 | पालनार | 21/12/05 |
| 81 | पुरण यादव | 20 | पालनार | 6/4/05 |
| 82 | कारम भरत | 18 | पालनार | 11/7/05 |
| 83 | हेमला सुखराम | 25 | पालनार | 12/10/05 |
| 84 | हेमला मासाल | 28 | सावनार | 10/4/06 |
| 85 | उरसा सोनू | 28 | मल्लूर | 7/11/05 |
| 86 | पोटम बुदरू | 25 | मल्लूर | 7/11/05 |
| 87 | पोटम सोमलू | 23 | मल्लूर | 7/11/05 |
| 88 | पोटम लखू | 20 | मल्लूर | 7/11/05 |
| 89 | कड़ती सुक्कू | 25 | पुंबाड़ (पुसनार) | 12/9/05 |
| 90 | पूनेम सुखराम (सन्नू) | 30 | पुसनार | 1/9/05 |
| 91 | पोटम सुदरू | 20 | पुसनार | 12/5/05 |
| 92 | पोटम पण्डरू | 28 | पुसनार | 30/1/06 |
| 93 | पूनेम मंगू | 21 | मेड्डापाड़ | 12/6/06 |
| 94 | कुंजाम सोमलू | 35 | मेड्डापाड़ | 20/6/06 |
| 95 | पूनेम पण्डरु | 40 | मेड्डापाड़ | 20/6/06 |
| 96 | कुंजाम राजू | 22 | मेड्डापाड़ | 20/6/06 |
| 97 | लेकाम विज्ञाल | 28 | मर्रूम | 12/2/06 |
| 98 | कोरसा सोनू | 25 | मोसला | 8/10/05 |
| 99 | रेयम सुकलू | 35 | मोसला | 8/10/05 |
| 100 | विजयलाल दुग्गा (शिक्षक) | 47 | मोसला | 8/10/05 |
| 101 | अवलम सन्नू | 35 | कैका | 5/5/06 |
| 102 | कारम बदरु | 30 | एड़सुम | 10/2/06 |
| 103 | कारम लखू | 30 | एड़सूम | 10/2/06 |
| 104 | माड़वी सनकू | 28 | कावड़ | 30/1/06 |
| 105 | ओयाम पाण्डू | 50 | पिड़िया | 8/10/05 |
| 106 | लेकाम बुधराम | 35 | कोतरापाल | /8/05 |
| 107 | ईच्चम लुदरु | 35 | कोतरापाल | 1/3/06 |
| 108 | वंजाम जग्गू | 17 | जापुर | 18/2/05 |
| 109 | मड़कम बुधराम | 35 | जापुर | /1/06 |
| 110 | मड़कम सन्नू | 35 | उरेपाल (उरमे) | 6/10/05 |
| 111 | ओयाम जोगाल | 35 | बेचापाल (वेचम) | 9/3/06 |
| 112 | ओयाम मड्डाल | 55 | बेचापाल (वेचम) | 20/6/06 |
| 113 | कड़ती मुकाल | 25 | कोकूड़ | 20/9/05 |
| 114 | पुनेम कोवाल | 50 | पुसनार (पुम्बाड़) | 20/12/06 |
| 115 | माड़वी मुन्नाल | 22 | मुण्डेर | 10/1/05 |
| 116 | मोड़ियम पाइकू | 19 | मुण्डेर | 22/9/05 |
| 117 | एमला कल्लू | 23 | मुण्डेर | 3/10/05 |
| 118 | कड़ती लक्ष्मण | 35 | मुण्डेर | 20/1/06 |
| 119 | एमला मासाल | 25 | नुकनपल्ली | 5/10/05 |
| 120 | कोरसा कनाल | 32 | पोन्नूर | 21/7/06 |
| 121 | माड़वी राजू | 21 | गोमण्डी | 4/1/04 |
| 122 | ताती सोमारू | 35 | मुकराम | 10/5/05 |
| 123 | लखमू | 20 | मुकावेली | 8/4/06 |
| 124 | एमला कुटाल | 52 | कर्रेमरका | 31/10/05 |
| 125 | एमला मुन्नाल | 22 | कर्रेमरका | 31/10/05 |
| 126 | - | - | कर्रेमरका | 31/10/05 |
| 127 | रामाल | 32 | केतानपाल | 1/9/05 |
| 128 | वेड्डिंज कोरके | - | कोम्पाल | 20/12/05 |
| 129 | ओड़ी जोगाल | 35 | पोटेनार | 18/7/06 |
| 130 | एमला मुन्नाल | 25 | कर्रेमरका | 18/12/05 |
| 131 | ताती सुक्कू | 45 | कोतरापाल | 20/5/05 |
| 132 | पाइकू | 25 | कोतरापाल | 15/10/05 |
| 133 | माड़वी अंदाल | 55 | कोतरापाल | 7/10/05 |
| 134 | वंजाम इरियाल | 58 | कोतरापाल | 9/9/05 |
| 135 | एमला चमरू | 30 | पोदमुर | 25/6/06 |
| 136 | उइके सोनू | 45 | कमकानार | 9/6/06 |
| 137 | एमला पेदियाल | 30 | कमकानार | 9/6/06 |
| 138 | एमला मंगू | 45 | कमकानार | 9/6/06 |
| 139 | मोड़ियम पाण्डू | 35 | चेरकंटी (रेकाल) | 20/6/06 |
| 140 | वरगेम समलू | 40 | कोटेर | 10/1/06 |
| 141 | पोड़ियम भीमा | 55 | केतानपाल | 1/06 |
| 142 | हपका उण्डाल | 55 | रेगाड़गट्टा | 1/12/06 |
| 143 | कोरसा कोवाल | 35 | रेगड़गट्टा | 1/12/06 |
| 144 | कोरसा बुधराम | 49 | पदेड़ा | - |
| 145 | एमला सोमलू | 25 | पुलादी | 1/12/06 |
| 146-9 | चार ग्रामीण | - | धरमपुर | 13/12/06 |
| 150 | बोगामी कमलू | 35 | भोगाम गुड़ा | 18/12/06 |
| 151-2 | दो ग्रामीण | - | मलेपाड़ | 18/12/06 |
| 153 | सोड़ी जोगा | 25 | नेण्ड्रा | 6/2/06 |
| 154 | पोड़ियम नन्दा | 20 | नेण्ड्रा | 6/2/06 |
| 155 | मंगूडू धुरवा | 50 | ओड़ेरपारा | 10/2/06 |
| 156 | मड़कम देवा | 20 | कोत्ताचेरुवु | 10/2/06 |
| 157 | मड़कम राकेश | 15 | वीरापुरम | 21/2/06 |
| 158 | माड़वी बहेड़ा | 15 | सिसिरगुड़ा | 20/2/06 |
| 159 | बोड्डी मुन्ना | 25 | गगनपल्ली | 12/4/06 |

| 160 | मुसाकी भीमा | 33 | नेण्ड्रा | 16/4/05 |
|---|---|---|---|---|
| 161 | मुसाकी रामा | 50 | नेण्ड्रा | 15/4/05 |
| 162 | मुसाकी गंगा | 25 | नेण्ड्रा | 15/4/05 |
| 163 | वेको पुल्ला | 35 | नेण्ड्रा | 18/4/05 |
| 164 | पद्दाम लिंगा | 30 | ककेरलंका | 1/5/06 |
| 165 | माड़वी बीरा | 16 | नीलमड़गू | 8/5/06 |
| 166 | माड़वी उंगा | 35 | पोलमपल्ली | 1/5/06 |
| 167 | माड़वी मुन्नाल | 35 | ईप्पागुड़ेम | 8/5/06 |
| 168 | माड़वी कोसा | 30 | गेंदापाड़ | 8/5/06 |
| 169 | ताती कन्ना | 25 | गगनपल्ली | 16/4/06 |
| 170 | कुचाकी दुला | 25 | नेण्ड्रा | 18/4/06 |
| 171 | ताती दुला | 22 | गगनपल्ली | 16/5/06 |
| 172 | ओड़ी सिंगा | 23 | गगनपल्ली | 16/5/06 |
| 173 | कुंजाम जोगा | 35 | गगनपल्ली | 16/5/06 |
| 174 | सोड़ी जोगा | 16 | गगनपल्ली | 16/5/06 |
| 175 | माड़वी उंज्जाल | 35 | कोलाईगूड़ेम | 16/5/06 |
| 176 | परसाकी अब्बैया | 35 | पुसगुड़ा | 18/6/06 |
| 177 | नंगाल (तिरपति) | 20 | पुसगुड़ा | 27/12/06 |
| 178 | ककेम कोसान | 22 | भै.ग. तोयानार | 27/12/06 |
| 179 | बोटी | 22 | टेकला | 10/1/06 |
| 180 | वेको दुकारु | 40 | डुंगा | 20/11/06 |
| 181 | बुदरू | – | वेड़मा | 20/11/06 |
| 182 | डोडी संतोष | – | गुण्डेमड़गू | 20/11/06 |
| 183 | मड़कम राकेश | 15 | वीरापुरम | 21/2/06 |
| 184 | माड़वी बहेड़ा | 15 | सिसिरगुड़ा | 20/2/06 |
| 185 | बोड्डी मुन्ना | 25 | गगनपल्ली | 12/4/06 |
| 186 | मुसाकी भीमा | 33 | नेण्ड्रा | 16/4/05 |
| 187 | मुसाकी रामा | 50 | नेण्ड्रा | 15/4/05 |
| 188 | मुसाकी गंगा | 25 | नेण्ड्रा | 15/4/05 |
| 189 | वेको पुल्ला | 35 | नेण्ड्रा | 18/4/05 |
| 190 | पद्दाम लिंगा | 30 | ककेरलंका | 1/5/06 |
| 191 | माड़वी बीरा | 16 | नीलमड़गू | 8/5/06 |
| 192 | माड़वी उंगा | 35 | पोलमपल्ली | 1/5/06 |
| 193 | माड़वी मुन्नाल | 35 | ईप्पागुड़ेम | 8/5/06 |
| 194 | माड़वी कोसा | 30 | गेंदापाड़ | 8/5/06 |
| 195 | ताती कन्ना | 25 | गगनपल्ली | 16/4/06 |
| 196 | कुचाकी दुला | 25 | नेण्ड्रा | 18/4/06 |
| 197 | ताती दुला | 22 | गगनपल्ली | 16/5/06 |
| 198 | ओड़ी सिंगा | 23 | गगनपल्ली | 16/5/06 |
| 199 | डोडी महेश | – | गुण्डेमड़गू | 20/11/06 |
| 200 | कड़ती मनी | – | गुण्डेमड़गू | 20/11/06 |
| 201 | कड़ती रूपा | – | वोड़गा | 22/3/06 |
| 202 | रामसू | – | वोड़गा | जनवरी 06 |
| 203 | देवाहर्फ सुरेश | – | भांसी | 3/11/06 |
| 204 | दुब्बा साम्बन्ना | 32 | आरेपल्ली | 9/9/06 |
| 205 | ओड़ी लच्छू (गंगू) | 47 | दोड्डी तुमनार | 7/10/06 |
| 206 | राजू | 12 | कौण्डे | 10/1/06 |
| 207 | दसरू | 20 | टेकला | 10/106 |
| 208 | पुनेम सन्नू | 18 | पुलादी | 13/7/06 |
| 209 | वाचमी मंगू | 55 | कोतरापाल | 18/1/05 |
| 210 | उइका सन्नू | 55 | कोतरापाल | 1/8/05 |

| 211 | ओयाम बुज्जी | 11 | बेल्लम नेण्ड्रा | 11/8/06 |
|---|---|---|---|---|
| 212 | हपका बैय्या | 35 | पुसगुड़ा | 18/8/06 |
| 213 | माड़वी मेण्डो | – | गोरनम | 29/8/06 |
| 214 | माड़वी लखमी | – | गोरनम | 29/8/06 |
| 215 | हपका लच्छू | 30 | अलवूर | 29/8/06 |
| 216 | हेमला सन्नू | 28 | अलवूर | 18/8/06 |
| 217 | पूनेम लच्छू | 17 | काकेकोरमा | 26/9/06 |
| 218 | ताती सोनू | 30 | कारनार | 12/9/06 |
| 219 | उरसा बदरू | 20 | मनकील | 4/10/06 |
| 220 | रैयाम धरकु | 55 | मनकील | 4/10/06 |
| 221 | उइके बुंगाल | 29 | कमकानार | 7/10/06 |
| 222 | उइके चिन्नाल | 38 | कमकानार | 7/10/06 |
| 223 | तेलाम लखमु | 35 | तुमनार | 30/10/06 |
| 224 | हेमला मंगू | 37 | कोकेरा | 9/10/06 |
| 225 | पूनेम बुधराम | 37 | काकेकोरमा | 15/10/06 |
| 226 | हेमला बदरू | 18 | मोसला | 7/10/06 |
| 227 | लेकाम मंगलू | 19 | कोतरापाल | 19/10/06 |
| 228 | हपका सोमलू | 40 | अलवूर | 7/10/06 |
| 229 | कड़ती सन्नू | 35 | तोयानार–भै.ग. | 8/10/06 |
| 230 | ककेम सुकड़ा | 35 | तोयानार–भै.ग. | 13/10/06 |
| 231 | विद्यम लक्ष्मण | 16 | उरेपाल | 15/10/06 |
| 232 | बैय्याल | 25 | कुड़मेर | 11/11/06 |
| 233 | पूनेम उंगा | 38 | अवनार | 31/10/06 |
| 234 | ताती सुक्कू | 35 | तोड़का | 31/10/06 |
| 235 | ताती मंगू | 45 | तोड़का | 31/10/06 |
| 236 | पद्दम मंगडू | 35 | कोण्डापाल | 28/11/06 |
| 237 | पद्दम मंगलू | 28 | कोण्डापाल | 28/11/06 |
| 238 | भोगामी राधे | 30 | दोरूम | 30/11/06 |
| 239 | माड़वी सुक्कू | 25 | उरेपाल | 30/11/06 |
| 240 | पुनेम मंगलू | 35 | बुरगील | 15/11/06 |
| 241 | हपका लखू | 40 | पदेड़ा | 1/11/06 |
| 242 | रावत बसुराम | 18 | एड़समेट्टा | 19/8/06 |
| 243 | पुनेम पाण्डे | 30 | तोयानार–भै.ग. | 19/8/06 |
| 244 | कड़ती बुदरु | 35 | केशकुतुल | 19/8/06 |
| 245 | कोवासी लखन | 18 | केसामुण्डे | 19/4/06 |
| 246 | लेकाम लखू | 35 | जांगला | 19/4/06 |
| 247 | इसमी डेंगाल | 30 | उरेपाल | 18/8/06 |
| 248 | मड़कम बुदरु | 35 | जापुर | 18/9/06 |
| 249 | लेकामी मंगलू | 16 | कोतरापाल | 19/7/06 |
| 250 | ईसमी लुदरू | 25 | कोतरापाल | 19/7/06 |
| 251 | लेकाम बुधराम | 55 | कोतरापाल | 17/6/06 |
| 252 | वेट्टी पाइकू | 25 | कोतरापाल | 16/6/06 |
| 253 | वंजामी डेडाल | 55 | कोतरापाल | 28/6/06 |
| 254 | आटामी मोतीराम | 35 | कोतरापाल | 28/6/06 |
| 255 | पोड़ियाम भीमाल | 25 | कोतरापाल | 19/6/06 |
| 256 | गंटाला कन्नैया | 50 | लिंगगिरी | 18/12/06 |
| 257 | पुजारी मोत्रोया | 45 | लिंगगिरी | 18/12/06 |
| 258 | पुजारी रामय्या | 40 | लिंगगिरी | 18/12/06 |
| 259 | मिड़ियम मल्लाल | 20 | मलेपाड़ | 19/12/06 |
| 260 | उइके बोड्डाल | 30 | मलेपाड़ | 19/12/06 |
| 261 | कुंजाम मासाल | 30 | दरमापुरम | 26/12/06 |
| 262 | पोड़ियमी जोगा | 25 | तेमेलवाड़ा | 22/12/06 |

**वक्तव्य**

# एर्राबोर घटना के लिए रमन सरकार जिम्मेदार !

*दिनांक – 28 जुलाई 2006*

2006 जुलाई 16–17 की दरमियानी रात हमारी पीएलजीए की अगुवाई में करीब एक हजार आदिवासी जनता ने एर्राबोर स्थित तथाकथित राहत शिविर पर धावा बोल दिया. दन्तेवाड़ा जिले के बीजापुर तहसील में पिछले एक साल से और कोंटा तहसील में पिछले 7 महीनों से 'सलवा जुडूम' के नाम पर जारी बर्बरतापूर्ण व आतंकी दमन अभियान में नगा पुलिस, छग पुलिस, सीआरपीएफ, एसपीओ और गुण्डों ने अब तक करीब 250 निरीह लोगों को मौत के घाट उतार दिया, जिनका न तो कोई एफआईआर है न ही कोई रिकार्ड. 100 से ज्यादा महिलाओं के साथ इन पशु बलों ने सामूहिक बलात्कार कर करीब 35 महिलाओं की हत्या की. 2 साल के बच्चे से लेकर 60 साल के बूढ़ों तक को इन दरिंदों की गोलियों का शिकार होना पड़ा. करीब 700 गांवों के 3 हजार से ज्यादा घरों को जलाकर राख कर दिया गया. 500 करोड़ रुपए की सम्पत्ति लूट ली गई या तबाह कर दी गई. गाय, बैल, बकरे, मुरगे सब कुछ लूट लिए गए. कई लोगों की हत्या कर लाशों को इन्द्रावती नदी में बहा दिया गया. बस्तर क्षेत्र में पिछले 25 सालों से जारी क्रान्तिकारी आन्दोलन का सफाया कर इस क्षेत्र को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूट का चारागाह में तब्दील करने के मकसद से जारी इस सर्वाधिक जुल्मी अभियान के चलते अब तक 2 लाख से ज्यादा लोग विस्थापित हो चुके हैं. इनमें से करीब 50 हजार लोग सरकारी बलों के दबाव में 'राहत शिविरों' में बन्दियों की तरह जिन्दगी गुजार रहे हैं तो बाकी लोग जंगलों में दर–दर भटक रहे हैं. बस्तर के आदिवासियों को जंगलों से बाहर निकालकर बन्दूक की नोक पर बन्दी शिविरों में रखने की एक सोची–समझी साजिश के तहत ही सामन्ती मुखिया महेन्द्र कर्मा और दलाल रमन सरकार के नेतृत्व में इस अभियान को चलाया जा रहा है. महेन्द्र कर्मा और रमन सिंह टाटा, एस्सार, जिन्दल, मित्तल जैसे बड़े पूंजीपति घरानों से करोड़ों रुपए की रिश्वत लेकर एक षड़यंत्र के तहत इसे 'शांति अभियान' या 'आदिवासियों का सस्फूर्त आन्दोलन' का नाम देकर संचालित कर रहे हैं. बस्तर में हजारों पुलिस व अर्ध सैनिक बलों को तैनात कर, 3 हजार से ज्यादा आदिवासी नौजवानों को एसपीओ के रूप में नियुक्त कर हत्या, बलात्कार, लूट, आगजनी, आदि जघन्य अपराधों को अंजाम दिया जा रहा है. इन सबसे त्रस्त बस्तर के हजारों आदिवासियों के दिल में भड़के आक्रोश का परिणाम ही था एर्राबोर की घटना.

दरअसल तथाकथित राहत शिविरों का संचालन एसपीओ और गुण्डों (जिन्हें सलवा जुडूम कार्यकर्ता कहा जाता है) के द्वारा किया जा रहा है. वे जनता को दबाकर रखते हैं और उसकी हर गतिविधि पर कड़ी नजर रखते हैं. उन्हें हांककर अपने हमलों में शामिल करते हैं. जो लोग इन बन्दी शिविरों से वापस जाना चाहते हैं उन्हें डरा–धमकाकर या मार–पीटकर रोकते हैं. पुलिस बल राहत शिविरों को सुरक्षा नहीं देते बल्कि अपने थाने व कैम्प के इर्द–गिर्द मौजूद 'राहत शिविर' से वे खुद को सुरक्षित रखते हैं. उसमें रहने वाले लोगों को वे ढाल की तरह इस्तेमाल करते हैं. गुण्डे व एसपीओ पुलिस बलों की आंख और कान की तरह काम कर रहे हैं, जिनका सफाया किए बिना जनता का इस व्यापक तबाही से बचना मुश्किल है. इस हमले के पीछे जनता और उसकी अगुवाई कर रही पीएलजीए का मकसद इन्हीं आतंकी गुण्डों व विशेष पुलिस अधिकारियों का सफाया करना था जिन्होंने कोंटा, दोरनापाल आदि इलाकों में लोगों का जीना मुश्किल कर रखा था. वे पुलिस व अर्ध सैनिक बलों के साथ गांवों में आकर आंतक का ताण्डव मचा रहे थे. गांव में जो भी मिलता उसे मार डालना, महिलाओं के साथ बलात्कार करना, घरों को जलाना, सम्पत्ति को लूटना, खेती करने नहीं देना, खेतों में काम करने वालों पर गोलियां बरसाना, झूठी मुठभेड़ की कहानियां गढ़ना, आदि तमाम दमनकारी कुकृत्यों से आदिवासी जनता का दिल दहल उठा. इसीलिए इस हमले में एक हजार से ज्यादा जनता ने शिरकत की. अब तक सैकड़ों गांवों के हजारों घरों को जलाने व तबाह करने में सक्रिय रूप से शामिल गुण्डों व एसपीओं के अड्डों में आग लगाकर उन्हें उनकी ही भाषा में सबक सिखाने की मांग इस इलाके की समूची जनता से जोर–शोर से उठ रही थी. साथ ही साथ, बन्दूक की नोक पर उन 'राहत शिविरों' में जी रही असहाय व बेबस जनता को मुक्त कराना भी हमारा लक्ष्य था. हमारे पीएलजीए के कॉमरेडों ने जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप ही सीआरपीएफ व थाना पुलिस पर हमला कर उन्हें घण्टों निष्क्रिय बनाए रखा था और जनता गुण्डों व एसपीओं पर टूट पड़ी. गुण्डों व जनता के बीच हुई घमासान लड़ाई में 30 से ज्यादा गुण्डे व एसपीए मारे गए और जनता व पीएलजीए के कुछ साथी घायल हुए. रात के अंधेरे में हुई उस भीषण लड़ाई से मची अफरातफरी के चलते गलती से 2 बच्चे और दो निर्दोष महिलाएं भी मारी गई थीं, जोकि अत्यंत दुःखद है. इस कार्रवाई में किसी भी निर्दोष व्यक्ति को हमारे सैनिकों व जनता ने **इरादतन** नहीं मारा. बाद में जनता और जन सैनिक 42 लोगों को गिरफ्तार कर अपने साथ ले गए थे. उनमें से 6 लोगों का सफाया कर दिया गया, जबकि बाकी को छोड़ दिया गया क्योंकि वे कट्टर अपराधी नहीं थे और किसी को नाहक मारना हमारा इरादा नहीं था.

इस घटना के बाद सरकार ने मीडिया के जरिए हमारी पार्टी के खिलाफ एक व्यापक दुष्प्रचार मुहिम छेड़ दी. जबसे सलवा जुडूम शुरू हुआ, तभी से सरकार ने मीडिया का सुनियोजित तरीके से अपने पक्ष में इस्तेमाल करना शुरू किया. टीवी चैनलों ने राहत शिविर में जनता और पीएलजीए सैनिकों द्वारा जलाए गए गुण्डों व एसपीओ के घरों की फुटेज बार–बार दिखाई. लेकिन पिछले एक साल से जनता के ऐसे हजारों मकान सलवा जुडूम गुण्डावाहिनी व पुलिस–अर्ध सैनिक बलों के द्वारा जलाए गए थे, जिनकी एक भी तसवीर दिखाने की कोशिश विजुअल मीडिया ने नहीं की. लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहलाने वाली मीडिया की भूमिका आज बेहद संदिग्ध बन गई है. किसी भी अखबार ने इसकी पड़ताल करने की कोशिश नहीं की कि आखिर इस हमले में हजार से ज्यादा आदिवासी लोग क्यों शामिल हुए होंगे. क्यों वे ऐसे कठोर कदम उठाने पर मजबूर हुए होंगे.

सुरक्षा सलाहकार केपीएस गिल ने एक अखबार को दिए

साक्षात्कार में आरोप लगाया कि जनता और जन सैनिकों ने एक महिला एसपीओ को मारने से पहले सामूहिक बलात्कार किया था. गृहमंत्री रामविचार नेताम, अपर मुख्य सचिव और दन्तेवाड़ा कलेक्टर केआर पिसदा ने भी इस आरोप को दोहराया. 'उलटा चोर कोतवाल को डांटा' वाला कहावत इनके लिए सटीक बैठता है. एक महिला आइपीएस अधिकारी के साथ छेड़छाड़ करने के जुर्म में सर्वोच्च अदालत द्वारा सजा भुगत चुके केपीएस गिल हम पर ऐसा नीचतापूर्ण आरोप लगाकर सूरज पर थूंकने का दुस्साहस कर रहे हैं. खुद बलात्कारी पुलिस बलों का नेतृत्व करने वाले गृहमंत्री जी और अपर मुख्य सचिव (गृह) बीकेएस रे हम पर बलात्कार का आरोप लगा रहे हैं. पिछले एक साल से जारी सलवा जुडूम के तहत 100 से ज्यादा महिलाओं के साथ बलात्कार करने वाले, यहां तक कि एक गर्भवती महिला (वेड़िंजे नंगी, ग्राम मूकावेल्ली, भैरमगढ़ विकासखण्ड, 5 अक्टूबर 2005) की कोख को चीरकर भ्रूण को बाहर निकालकर फेंक देने वाले खुद पुलिस बल और पुलिस–प्रशासन द्वारा पाले–पोसे जा रहे गुण्डे व एसपीओ ही थे. मोडियम सुक्की (ग्राम पेद्दा कोरमा), कुरसम लक्के (ग्राम पेद्दा कोरमा), मड़काम सन्नी (गर्भवती – ग्राम एटेपाड़), वेडिंजे मल्ली (ग्राम मूकावेल्ली), बोग्गम सोमवारी (ग्राम कोटलू) – इन तमाम महिलाओं के साथ पहले सामूहिक बलात्कार करके बाद में इनकी हत्या करने वाले खुद नगा पुलिस, सीआरपीएफ जवान और एसपीओ थे. सरकारी बलों की निर्ममता और पाशविकता की जीवन्त मिसाल – श्रीमती मासे परसो (उम्र 35 साल, गांव चिन्ना पल्ली, भैरामगढ़ विकासखण्ड) की दर्दभरी दास्तान सुनिए. 1 फरवरी की रात सलवा जुडूम के 10 गुण्डों ने इस गांव पर हमला कर मासे परसो के साथ सामूहिक बलात्कार कर उनके गले को चाकुओं से गोदकर बुरी तरह घायल कर दिया था. उसे मरी समझकर वहीं छोड़कर चले गए थे. अगले दिन वहां पहुंचे पीएलजीए के सैनिकों ने तुरन्त इस महिला का इलाज किया तो उसकी जान तो बच गई, पर स्वरपेटी क्षतिग्रस्त होने से वह अब बोल नहीं पा रही है. ऐसी दर्जनों महिलाओं के उदाहरण हैं जिन्हें पिछले एक साल के दौरान पुलिस, अर्ध–सैनिक बलों व गुण्डावाहिनी ने अपने वहशीपन का शिकार बनाया. विडम्बना यह है कि इन तथ्यों को कोई भी अखबार प्रकाशित करने को तैयार नहीं है. सलवा जुडूम पर एक निष्पक्ष जांच बिठाने से ऐसे कई तथ्य सामने आ सकते हैं, लेकिन इसके लिए न तो केन्द्र सरकार न ही राज्य सरकार तैयार है.

कामरेड मोति (20) छत्तीसगढ़–आंध्रप्रदेश सीमा पर हत्यारे ग्रेहाउण्ड्स बलों पर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में शहीद हुईं।

एर्राबोर घटना में गलती से दो बच्चों और दो निर्दोष महिलाओं की मौत होने पर हम पर कीचड़ उछालने वाले पुलिस–प्रशासन क्या इस सवाल का जवाब देंगे कि किसके कहने पर मूकावेल्ली गांव में डेढ़ साल के बच्चे के सिर में नगा पुलिस ने गोली मारी थी. क्यों ग्राम हरियाल (चेरली) में 10 साल का बच्चा कड़ती कुम्माल को मार डाला गया था? 14 साल का किशोर बारसे सोनू (ग्राम परालनार) का क्या कसूर था कि उन्हें निर्ममता के साथ मार डाला गया था? ग्राम सेन्ड्रा में 6 और 8 साल के दो आदिवासी बच्चों पर सीआरपीएफ ने गोलियां क्यों दागीं? क्या रमन सिंह यह भूल गए कि वे आज छत्तीसगढ़ में जिस भाजपा का शासन चल रहा है, उसके हाथ 2002 के गुजरात दंगों में मारे गए दर्जनों बच्चों के खून से रंगे हैं? क्या महेन्द्र कर्मा और रमन सिंह इन हत्याओं के लिए सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने को तैयार होंगे?

जैसे कि हम शुरू से ही कह रहे हैं, सलवा जुडूम 'शांति अभियान' नहीं है, न ही वह जनता का सस्फूर्त आन्दोलन. यह टाटा, एस्सार, जिन्दल जैसे बड़े पूंजीपतियों और अमेरिका, जापान जैसी साम्राज्यवादी ताकतों के हित में चलाया जा रहा दमनकारी अभियान है. इसका मकसद है बस्तर की जनता को जंगलों से बाहर लाकर बन्दी शिविरों में ठूंसकर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूटखसोट का रास्ता साफ करना. इसके लिए वे सैकड़ों–हजारों लोगों की हत्या करने से भी नहीं चूकेंगे. लेकिन बस्तर की संघर्षशील जनता इस षड्यंत्र को जरूर चकनाचूर कर देगी. कुछ मध्यमवर्गीय उदारपंथी बुद्धिजीवी यह कहते हुए कि ''गोली इधर से चले या उधर से, मर तो आदिवासी रहे हैं'', जनता के जायज प्रतिरोधी संघर्ष पर उंगली उठा रहे हैं. लेकिन वे यह भूल रहे हैं कि सलवा जुडूम के खिलाफ बस्तर में जारी न्यायपूर्ण जन–प्रतिरोध का विरोध कर वे लुटेरे शासकों के ही हाथ मजबूत कर रहे हैं. जन–प्रतिरोध को समाप्त करने का मतलब है जनता के अस्तित्व को ही खतरे में डालना. यह जंग है – सलवा जुडूम से बेघरबार हुए हजारों आदिवासियों की, बलात्कार का शिकार हुई बीसियों आदिवासी बहनों की, अपने बेटों व बेटियों को खोने के गम में खून के आंसू बहाने वाली अनगिनत आदिवासी माताओं की, अपना जल–जंगल–जमीन को बचाने के लिए छटपटा रहे हजारों बस्तरियों की, झूठे व भ्रष्ट लोकतंत्र का खात्मा कर सच्चे व नए लोकतंत्र की नींव डाल रहे मेहनतकश किसान–मजदूरों की. इसलिए हम तमाम जनवाद पसन्द लोगों से अपील करते हैं कि वे सलवा जुडूम को नेस्तनाबूद कर बस्तर के आदिवासी अवाम को तबाही, विस्थापन और मौत से बचाने के लक्ष्य से जारी हमारे प्रतिरोधी संघर्ष का समर्थन करें. हमारी कार्रवाइयों के दौरान होने वाली गलतियों के लिए हमारी आलोचना जरूर करें, हम जरूर स्वीकारेंगे और खुद को सुधारेंगे, पर इस वजह से जनता के जायज प्रतिरोधी संघर्ष का विरोध मत करें.

हम जनता व जनवादी संगठनों से अपील करते हैं कि वे राज्य व केन्द्र सरकारों पर दबाव डालें कि सलवा जुडूम के नाम पर आदिवासियों को आदिवासियों से लड़ाने के खूनी खेल को तत्काल बन्द किया जाए; अब तक सरकारी बलों व गुण्डावाहिनी द्वारा किए गए कत्लेआम, बलात्कार, लूटपाट व आगजनी की तमाम घटनाओं पर निष्पक्ष जांच बिठाई जाए; एसपीओ नाम से आदिवासी युवकों की नियुक्ति तुरन्त बन्द किया जाए, उनसे हथियार वापस लिए जाएं; नगा बटालियन समेत तमाम अर्ध सैनिक बटालियनों को वापस भेजा जाए; राहत शिविरों को बन्द कर आदिवासियों को उनके गांव वापस भेजा जाए.

(कोसा) (गुड़सा ऊसेंडी)
सचिव, प्रवक्ता,

**दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी**
**भाकपा (माओवादी)**

**सभा-सम्मेलन-संघर्ष**

# भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दूसरी वर्षगांठ समूचे दण्डकारण्य में मना

गड़चिरोली डिवीजन में पेरिमिलि एरिया कमेटी ने पार्टी की दूसरी वर्षगांठ के अवसर पर 150 पोस्टर, 4 बैनर तथा कई जगह दीवार-लेखन के जरिए प्रचार किया. 21 सितम्बर को एक सभा का आयोजन किया जिसमें 70 जनता व 9 एलओएस सदस्य शामिल हुए थे. सभा में एमसीसीआई एवं भाकपा (माले) (पीपुल्सवार) के विलय के महत्व पर कई कॉमरेडों ने भाषण दिए. डीएकेएमएस और केएएमएस ने भी कई स्थानों पर 21 सितम्बर को पार्टी का स्थापना दिवस मनाया. कसनसूर एरिया में भी पार्टी का स्थापना-दिवस मनाया गया. तीन कॉमरेडों ने पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर भाषण दिया. इस सभा में 120 पुरुषों और 30 महिलाओं ने भाग लिया. यह सभा बड़े अनुशासनपूर्वक और क्रान्तिकारी नारों व गीतों के साथ सम्पन्न हुई.

उत्तर बस्तर डिवीजन के केसकाल एरिया में 21 सितम्बर के अवसर पर सीएनएम, डीएकेएमएमस और केएएमएस के करीब 16 प्रचार दलों ने प्रचार कार्यक्रम चलाया. 36 बैनर, 1000 पोस्टरों से पूरे इलाके में व्यापक प्रचार किया गया. किसकोडो एरिया में कुल 19 गांवों की जनता ने एक जगह जमा होकर पार्टी का स्थापना दिवस मनाया. दूरघाट एरिया में भी 10 गांवों के लोगों ने एक सभा में भाग लिया. इन दोनों जगहों में कुल 4 हजार स्त्री-पुरुषों ने कार्यक्रमों में भाग लिया. इस मौके पर 21 सितम्बर 2004 को पार्टी की स्थापना के बाद से अब तक शहीद हुए तमाम वीर योद्धाओं को याद करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजली पेश की गई. गौरतलब है कि ये कार्यक्रम छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा चलाए जा रहे सघन दमन अभियानों के बीचोबीच ही पीएलजीए की सुरक्षा में सम्पन्न हुए.

माड़ डिवीजन के डौला इलाके में पार्टी के स्थापना दिवस के अवसर पर सभी जन संगठनों ने पोस्टर, बैनर, पर्चा आदि से व्यापक प्रचार किया. 21 से 27 सितम्बर तक एक-एक एलओएस इलाके में एक-एक बड़ी मीटिंग का आयोजन किया गया. अलग-अलग सभाओं में 2,000 से ज्यादा जनता पुलिस दमन की परवाह न करते हुए भाग लिया. इन सभी सभाओं में वक्ताओं ने पार्टी का संदेश सुनाया. इसके अलावा सीएएम के कॉमरेडों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए.

**28 जुलाई**

## दण्डकारण्य के गांव-गांव में मना शहीद सप्ताह

गड़चिरोली डिवीजन के अहेरी एरिया में शहीद सप्ताह के अवसर पर 150 पोस्टर, दीवार लेखन व बैनरों के जरिए प्रचार किया गया. 7 गांवों की 200 जनता ने, जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों शामिल थे, एक सभा का आयोजन किया. इस सभा की अध्यक्षता कॉमरेड नीलेश ने किया. लाल झण्डे के नीचे जनता ने शहीद कॉमरेडों की याद में 2 मिनट का मौन धारण किया और उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की. सभा में कॉमरेड रासो शहीद महिला साथियों को याद करते हुए क्रान्तिकारी आन्दोलन में उनकी भूमिका से जनता को परिचय कराया. कॉमरेड डुंगा ने क्रान्तिकारी आन्दोलन को तेज करने के लिए जनता का आह्वान किया. इसके लिए पीएलजीए में बड़ी संख्या में नौजवानों को भर्ती होने के लिए संदेश दिया. भारी दमन की परिस्थिति में अहेरी एरिया में सभा करना ही एक बड़ी बात है.

गड़चिरोली डिवीजन में शहीद सप्ताह हर गांव में मनाया जाता है. इसी क्रम में चादगांव एरिया में कुल 3 स्थानों पर शहीद दिवस मनाया गया, जिसमें 800 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया. कसनसूर एरिया में कुल 5 स्थानों में शहीद स्मारकों का निर्माण किया गया. इनके अनावरण के मौके पर आयोजित अलग-अलग सभाओं में कुल 1300 लोगों ने भाग लिया. टिप्रागढ़ एरिया में जनता ने हर गांव में 28 जुलाई मनाया. ग्रामवासियों ने शहीदों की याद में एक दिन काम बन्द कर उन्हें श्रद्धांजली दी. टिप्रागढ़ दस्ते के द्वारा कुल 9 गांवों में 28 जुलाई शहीद सभा का आयोजन किया गया जिसमें करीब 1000 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया.

माड़ डिवीजन के डौला एरिया में 28 जुलाई शहीद दिवस के मौके पर पोस्टर, बैनर और दीवार-लेखन के जरिए प्रचार अभियान चलाया गया. गांव-गांव में मौजूद शहीद स्मारकों पर लाल पेन्ट पोतकर सजाया गया. इस मौके पर कवानार गांव में एक विशाल सभा आयोजित की गई जिसमें 3,000 से ज्यादा स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया. सीएनएम के कॉमरेडों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए.

**8 मार्च**

## डौला एरिया में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

माड़ डिवीजन के डौला एरिया में 8 मार्च 2007 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस बड़े जोशोखरोश के साथ मनाया गया. इस बार केएएमएस के आह्वान पर अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'सरकार की विस्थापन की नीतियों एव फासीवादी सलवा जुडूम अभियानों के चलते बस्तर की महिलाओं की बदहाली' के केन्द्र बिन्दु बनाकर कार्यक्रम बनाए गए. इस मौके पर आयोजित सभी सभाओं में महिलाओं का यह आह्वान किया गया कि एसईजेड, स्टील प्लान्ट, सलवा जुडूम आदि के जरिए सरकारों द्वारा लाई जा रही विस्थापन की नीतियों के खिलाफ जुझारू संघर्ष का निर्माण करें. इस मौके पर झारा इलाके के ग्राम कुयनार में आयोजित सभा में 400 लोगों ने भाग लिया, जिनमें महिलाओं की संख्या ज्यादा थी. बेनूर-मर्दापाल इलाकों में ग्राम पड़मबाड़ में आयोजित एक सभा में 600 लोगों ने भाग लिया. डौला इलाके के कवानार में आयोजित सभा में 300 लोगों ने भाग लिया. इन सभाओं ने सीएनएम की टोलियों ने नाच, गाना, नाटक आदि रूपों में सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए.

## पृथक बस्तर की मांग को लेकर 1 नवम्बर 2006 को बस्तर बन्द सफल

1 नवम्बर 2000 को मध्यप्रदेश से अलग होकर छत्तीसगढ़ एक पृथक राज्य बन गया. लेकिन तभी से बस्तर की जनता यह मांग करते

आ रही है कि बस्तर का एक अलग राज्य होना चाहिए. इस मांग को लेकर अब तक कई बार रैलियों एवं प्रदर्शनों का आयोजन हुआ, जिसमें लाखों बस्तरिया आदिवासियों ने शिरकत की. इस वर्ष (2006) भी 1 नवम्बर को 'पृथक बस्तर' मांग के समर्थन में भाकपा (माओवादी) ने 'बस्तर बन्द' का आह्वान किया था. पश्चिम बस्तर डिवीजन में भैरमगढ़, गंगलूर व मद्देड इलाकों में कई पोस्टर और बैनर लगाकर लोगों से बन्द को सफल बनाने की अपील की गई. इस आह्वान को पाकर हजारों जनता इसे सफल बनाने को तैयार हुई. बन्द के दिन बीजापुर से भोपालपट्टनम एवं गंगलूर मार्ग में कई जगहों पर सड़क काटकर या पेड़ गिराकर अवरुद्ध किया गया. गीदाम से भोपालपट्टनम जाने वाली यात्री बसें एवं टैश्रिसियां नहीं चलीं. कई साप्ताहिक बाजार उस रोज बन्द रहे.

इसके अलावा, इस बन्द में खासतौर पर एनएमडीसी को निशाना बनाया गया. बैलाडीला खदानों से अब तक 2,00,000 करोड़ रुपए का लाखों टन लौह अयस्क जापान, दक्षिण कोरिया, आदि देशों की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को निर्यात किया जा चुका है. लेकिन इसका एक प्रतिशत राशि भी बस्तर की जनता की भलाई के लिए खर्च नहीं की गई है. यहां के जल, जंगल और जमीन पर आदिवासियों का कोई अधिकार नहीं रह गया है. टाटा, एस्सार जैसी कम्पनियां बस्तर की सम्पदाओं को लूटने की फिराक में तेजी से घुसपैठ कर रही हैं. इस पृष्ठभूमि में बैलाडीला से विशाखपट्टनम जाने वाले रेल मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए रेल पटरी को नष्ट किया गया ताकि लौह अयस्क के निर्यात को बाधित किया जा सके. इसी प्रकार बैलाडीला खदान क्रामांक 10 में कन्वेयर बेल्ट को जला डाला गया जिससे एनएमडीसी को करीब 275 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ. इस प्रकार 1 नवम्बर को समूचे बस्तर में बन्द रखा गया.

## गड़चिरोली डिवीजन में सीएनएम का प्रचार अभियान

जनवरी महीने में चेतना नाट्य मंच ने सूर्जागढ़ में लोहा खदान एस्सार कम्पनी को बेचने के खिलाफ एक व्यापक प्रचार अभियान चलाया. दलाल नौकरशाह पूंजीवादी एवं साम्राज्यवादी लूट के खिलाफ जनता के बीच प्रचार किया. किसी भी हालत में सूर्जागढ़ लोहे की खदान न खोलने देने का जनता को आह्वान किया.

सलवा जुडुम की तर्ज पर गड़चिरोली में चलाए जा रहे शांति यात्रा की असलियत जनता के सामने रखा. इस संदर्भ में कुल 6 नाटकों का मंचन किया गया. पुलिस दमन का, भामरागड़, टिप्रागढ़ एरिया में 5-5 आदिवासी जनता कुल 10 लोगों के आजीवन कारावास का विरोध किया. सरकारी सुधार कार्यक्रमों की असलियत का जनता के सामने पर्दाफाश किया तथा क्रान्तिकारी जनतना सरकार के विकास कार्यक्रमों पर बल दिया.

28 जुलाई के शहीद सप्ताह के अवसर पर कसनसूर एरिया में चेतना नाट्य मंच के कुल 23 टीमों ने भाग लिया. कॉमरेड्स श्याम, महेश और मुरली के स्तूप निर्माण में सीएनएम ने कार्यक्रम पेश किया जिसमें 1100 लोगों ने भाग लिया. कॉमरेड मुकेश के जन्मस्थल आशावंडी गांव में उनका स्मारक के अनावरण के समय 560 जनता ने सीएनएम कार्यक्रम को देखा. दो अन्य गांवों में आयोजित सीएनएम कार्यक्रमों में करीब एक हजार लोगों ने भाग लिया.

शहीद सप्ताह के अवसर पर पोटेगांव एलओएस एरिया में सीएनएम ने कुल तीन कार्यक्रम पेश किए, जिसमें क्रमशः 400, 500 और 1300 लोगों ने भाग लिया.

## केसकाल इलाके में पुलिसिया दमन - फर्जी मुठभेड़ें - फर्जी आत्मसमर्पण

केसकाल इलाके के बारदा के आसपास पुलिस दमन बेहद बढ़ गया. गांवों में छापेमारी करके लोगों के साथ मारपीट करना, लोगों को गिरफ्तार कर उन्हें इनामी नश्सली बताना, झूठी मुठभेड़ों में आम लोगों की हत्या करना, घरों में घुसकर खाने के अनाज और सामान को नष्ट करना, आदि रूपों में पुलिसिया अत्याचार जारी हैं. ग्रामीण महिलाओं को नश्सलवादी बताकर गिरफ्तार करना, उनके साथ अभद्र व्यवहार करना पुलिस का रोजमर्रा का काम बन गया. और तो और दिसम्बर 2006 के आखिर में पुलिस ने इसी इलाके में 70 से ज्यादा नश्सलियों के 'आत्मसमर्पण' का बेहद शर्मनाक व घिनौना नाटक खेला. छत्तीसगढ़ प्रदेश के चारों तरफ लोगों ने इस 'फर्जी आत्मसमर्पण' की जमकर निंदा की. पुलिस के आला अधिकारियों द्वारा सरकार से इनाम-इकराम पाने के चश्कर में आम आदिवासियों को उठा ले जाकर उन्हें इनामी नश्सली बताया जाता है, इसे प्रदेशवासियों ने विभिन्न टीवी चैनलों और दैनिक अखबारों के जरिए समझ लिया.

दूरघाट इलाके में पुलिस ने गांवों में छापेमारी कर कई किसानों के ट्रैश्टर एवं मोटरसायकल जब्त कर लिए. छोटा-मोटा धंधा या व्यापार कर रोटी कमाने वाले दुकानदारों, व्यापारियों को पुलिस नश्सलियों का सहयोग करने का झूठा आरोप लगाकर गिरफ्तार कर रही है. उनसे हजारों-लाखों रुपए ऐंठ रही है. 25 सितम्बर को पुलिस ने नारायणपुर हाट बाजार में सीएनएम अध्यक्ष कॉमरेड सोमारू और एक ग्रामीण सगनू को गिरफ्तार किया. 25 अश्टूबर को पुलिस के 4 दलों ने किसकोड्डो गांव को घेरकर कॉमरेड राजमन को गिरफ्तार किया और गांव में मौजूद शहीद स्मारक को ध्वस्त कर दिया. एक ग्रामीण के घर में घुसकर 600 रुपए भी लूट लिए. ✶

---

*(.... पृष्ठ 49 का शेष )*

अन्दर नफरत कूट-कूटकर भरी हुई थी. सहज ही उन्होंने क्रान्ति की जरूरत को दिल से महसूस किया. पार्टी के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने समझ लिया कि जब तक सामन्तवाद, साम्राज्यवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग का सफाया नहीं होगा तब तक उस जैसे मेहनतकशों को मुक्ति नहीं मिलेगी. कॉमरेड रामुलू की जीवनसाथी थाने पर हमले के दौरान हुए एक बम विस्फोट में शहीद हुई थीं. उनकी एक बेटी (सुनीता) थी जिसने अपने पिता को कभी नहीं देखा. अपने पिता की मृत्यु की खबर सुनने के बाद सुनीता ने कहा कि उसे गर्व है कि उसके पिता ने शोषितों और उत्पीड़ितों के लिए अपना सारा जीवन न्यौछावर किया. उन्होंने यह कहकर अपने गुस्से का इजहार किया कि उसे अपने पिता को जीवित देखने का मौका नहीं मिल पाया जिसके लिए हत्यारी सरकार जिम्मेदार है. दामेरा गांव में कॉमरेड रामुलु की अंत्येष्टी में हजारों लोगों ने भाग लिया और उनके अधूरे मकसद को पूरा करने का संकल्प लिया. ✶

# पीएलजीए की शानदार प्रतिरोधी कार्रवाइयों की अनवरत शृंखला

3 जून 2005 से जारी प्रति-क्रान्तिकारी सलवा जुडुम अभियान में अब तक 400 से ज्यादा लोगों की जानें गईं. सैकड़ों महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया. 600 से ज्यादा गांवों के हजारों घर सलवा जुडुम की बर्बरता की भेंट चढ़कर राख बन गए. हजारों लोग अपनी ही सरजमीन पर शरणार्थी बनकर जीने को मजबूर है. यह सब सिर्फ इसलिए हो रहा है ताकि यहां पनप रही जनता की नई जनवादी सत्ता का गला घोंटा जा सके और इस इलाके को बड़े एवं विदेशी पूंजीपतियों की लूट का चारागाह बनाया जा सके. लेकिन बस्तर की जनता ने इस जुल्मी अभियान के आगे अपने घुटने नहीं टेके, बल्कि प्रतिरोध का रास्ता अख्तियार किया. कोतरापाल में 19 जून 2005 को शुरू हुआ सलवा जुडूम-विरोधी प्रतिरोधी संघर्ष 15 मार्च 2006 को रानीबोदली पुलिस कैम्प पर किए गए शानदार हमले के साथ अपने चरम पर पहुंच गया. जून 2005 से फरवरी 2006 तक सलवा जुडुम द्वारा किए गए अत्याचारों और उसके खिलाफ किए गए प्रतिरोधी हमलों के बारे में 'प्रभात' जनवरी-मार्च 2006 के अंक में विस्तार से प्रकाशित किया गया था. मार्च 2006 से अब तक जारी सलवा जुडुम और जनता के प्रतिरोधी संघर्ष की कुछ रिपोर्टें इस अंक में पेश कर रहे हैं.

## विंजरम 'राहत' शिविर पर हमला - 4 एसपीओ का सफाया

13 मई के तड़के 4 बजे विंजरम स्थित नगा पुलिस कैम्पों के सुरक्षा घेरे में स्थित एसपीओ कैम्प पर लगभग 500 जनता ने पीएलजीए के छापामार सैनिकों की अगुवाई में हमला बोल दिया. जबकि छापामारों ने गोलीबारी के जरिए पुलिस बलों को उनके कैम्पों से हिलने-डुलने से रोके रखा, एसपीओ कैम्प पर जनता और छापामारों ने संयुक्त रूप से धावा बोल दिया. उन्होंने 4 एसपीओ का सफाया कर 5 को घायल किया. मनुष्यों को कच्चा चबाकर खाने वालों के नाम से प्रचारित नगा पुलिस बलों को पीएलजीए और जनता द्वारा एसपीओ को चुन-चुनकर मारने को चुपचाप देखते रहना पड़ा. कर भी श्या सकते थे श्योंकि बाहर निकलने पर खुद मारे जाने का डर जो था. मौके पर कुछ पर्चे छोड़े गए जिनमें यह लिखा गया था कि हाल में इसी कैम्प में रह रहे एसपीओ और सलवा जुडूम के गुण्डों ने गांवों पर हमले करके सैकड़ों जनता के घर जला दिए थे, और उसी की प्रतिक्रिया स्वरूप यह जवाबी हमला किया गया.

## बासागूड़ा राहत शिविर पर हमला

## एक पुलिस व तीन एसपीओ मरे - हथियार जब्त

बीजापुर पुलिस जिले में डेढ़ साल से जारी सलवा जुडूम में अभी तक सैकड़ों लोगों की जानें गई हैं. इस जिले में पुलिस ने लोगों को नश्सलवादियों से सुरक्षा मुहैया कराने के नाम पर तथाकथित राहत शिविरों में हजारों लोगों को बन्दी बनाकर रखा गया है. इसी प्रकार दक्षिण बस्तर डिवीजन के बासागूड़ा में एक राहत शिविर है. इसका नियंत्रण पुलिस बलों एवं एसपीओ के हाथों में रहता है. वे जब भी गांवों पर हमले के लिए निकलते हैं तो शिविर के लोगों को मानव ढाल

## पीएलजीए की छठवीं वर्षगांठ क्रान्तिकारी जोशोखरोश के साथ मना

भारतीय क्रान्ति की अगुवा पंक्ति के नेता कॉमरेड्स श्याम, महेश और मुरली की पहली बरसी - 2 दिसम्बर 2000 - पर भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास में पहली बार जनता की अपनी सेना - जन मुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) - की स्थापना हुई. तब से लेकर आज तक इस सेना ने लुटेरे वर्गों के भाड़े के पुलिस व अर्ध सैनिक बलों के खिलाफ दर्जनों हमले कर सैकड़ों का सफाया किया और सैकड़ों हथियार छीन लिए. दक्षिण में कर्नाटक से लेकर उत्तर प्रदेश तक, पूर्व में असम, बंगाल से लेकर पश्चिम में महाराष्ट्र तक इस सेना द्वारा किए गए कई शौर्यपूर्ण कारनामों ने भारत की उत्पीड़ित जनता का आत्मविश्वास बढ़ा दिया. खासकर पिछले एक साल से, यानी 2 दिसम्बर 2005 से 2 दिसम्बर 2006 तक सिर्फ दण्डकारण्य में ही देखेंगे तो गंगलूर, विंजरम, दरभागूड़ा, एनएमडीसी, मुरकीनार, बासागूड़ा, मनिकोंटा, एर्राबोर आदि कई बहादुराना हमलों में पीएलजीए के तीनों बलों के योद्धाओं तथा कोया भूमकाल मिलिशिया ने जनता की सक्रिय मदद से सीआरपीएफ, नगा पुलिस, राज्य पुलिस, एसटीएफ, एसपीओ, सलवा जुडुम गुण्डा गिरोहों के दर्जनों बलों को मार डाला. उनसे दर्जनों आधुनिक हथियार छीन लिए. इन कार्रवाइयों की बदौलत ही जनता के अस्तित्व के लिए ही खतरा बने सलवा जुडूम पर अंकुश लगा पाने में जनता समर्थ हो पाई है. 'अगर जनता के पास एक सेना नहीं है तो उसके पास कुछ भी नहीं है' माओ का यह कथन दण्डकारण्य के मौजूदा संदर्भ में पुरी तरह सच साबित हो जाता है. सच्चाई को देखने, परखने और समझने से जी चुराने और कतराने वाले मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी और तथाकथित तटस्थ लोग चाहे लाख चिल्लाएं, सच तो यह है इन तमाम कार्रवाइयों में जनता और जन बलों ने जो हिंसा की, वह शोषक-लुटेरों द्वारा सलवा जुडुम के नाम से जून 2005 से चलाए जा रहे भीभत्सपूर्ण हत्याकण्ड का सौवां हिस्सा भी नहीं है. यह जवाबी और जायज हिंसा है जिसके बिना इस विनाशकारी जुल्मी अभियान से जनता का बचना असम्भव था.

इसी परिप्रेक्ष्य में 2006 का पीएलजीए दिवस युद्ध की कार्रवाइयों के बीचोबीच ही बड़े उत्साह के साथ मनाया गया. दण्डकारण्य के सैकड़ों गांवों में इस मौके पर सभाओं और रैलियों का आयोजन किया गया. पीएलजीए की यूनिटों ने गांवों में मार्चिंग करते हुए गीत गाते हुए नारे लगाए. इस मौके पर नौजवानों को पीएलजीए में बड़ी संख्या में भर्ती होने का आह्वान किया गया. सलवा जुडूम को हराने के लिए जनता को बड़ी संख्या में परम्परागत हथियारों से लैस होकर पीएलजीए के तीन बलों के साथ तालमेल करते हुए लड़ने की जरूरत के बारे में अवगत कराया गया. ✶

बनाकर साथ में ले जाया करते हैं. लिंगागिरी, मल्लेपाड़, हीरापुरम, धरमारम, आदि गांवों के लोगों को यहां जोर-जबर्दस्ती रखा गया था. इस पर पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने सुनियोजित तरीके से हमला कर 3 एसपीओ और एक पुलिस जवान को मार गिराया. उनसे 4 हथियार छीन लिए जिनमें एक एलएमजी शामिल है. गौरतलब है कि इस कैम्प में पुलिस, अर्ध सैनिक बल और एसपीओ सैकड़ों की संख्या में तैनात थे. लेकिन पीएलजीए की योजना ही ऐसी थी कि उसकी मुख्य शक्ति को निष्क्रिय करते हुए कैंप के अन्दर ही रहने को बाध्य करके जो उसका कमजोर बिन्दु था वहीं पर चोट की गई. इसमें सबसे अहम योगदान आसपास के गांवों की जनता का रहा जिन्होंने न सिर्फ इस हमले में भाग लिया, बल्कि इसकी योजना बनाने में भी पीएलजीए के कमाण्डरों की मदद की. दरअसल पीएलजीए की शक्ति भी जनता में ही निहित है.

## 'आपरेशन मापना दिय्या' - पीएलजीए की एक और जबर्दस्त कामयाबी

16 अप्रैल को बीजापुर पुलिस जिला स्थित मुरकीनार पुलिस कैम्प पर पीएलजीए की एक विशेष कम्पनी ने दिन के उजाले में एक बहादुराना हमला किया. इस कार्रवाई का नाम 'आपरेशन मापना दिय्या' रखा गया था. गोण्डी भाषा के इस शब्द का अर्थ है दुश्मन के बलों का सफाया करने वाली कार्रवाई. चूंकि सलवा जुडूम सैन्य अभियान क्रान्तिकारी आन्दोलन का सम्पूर्ण सफाया करने के लक्ष्य से चल रहा है, इसलिए इसका मुकाबला भी इस अभियान में शामिल आतंकी बलों का सफाए से ही हो सकता है. मुरकीनार कैम्प भी सलवा जुडूम के शुरू होने के बाद सरकार द्वारा अपनाई गई कार्पेट सेश्यूरिटी नीति के तहत खोला गया था.

जनता की सक्रिय मदद से इस कैम्प की अच्छी तरह टोह लेने के बाद पीएलजीए के कमाण्डरों ने यह तय किया कि इस पर हमला करने का बढ़िया समय है दिन. इसी योजना के मुताबिक सुबह 9 बजे के आसपास एक यात्री बस को गुरिल्लों की एक टुकड़ी ने रोककर जंगल में लाया. यात्रियों और बस के कर्मचारियों को उतारकर विषय समझा दिया गया. बाद में पीएलजीए के सैनिक बस में चढ़ गए. एक छोटी टुकड़ी बस की छत पर चढ़ गई. 30 मिनट के अन्दर बस कैम्प के पास पहुंच जाती है. बस का ब्रेक लगते ही पीएलजीए के सैनिक पलक झपकते ही उतर जाते हैं और बिजली सी तेजी से गोलियां चलाते हुए कैम्प में घुस जाते हैं. अलग-अलग टोलियों में बंटकर अपने तयशुदा लक्ष्यों की तरफ बढ़ जाते हैं. दिन-दहाड़े हो रहे इस अप्रत्याशित हमले से वहां मौजूद करीब 60 पुलिस बल एवं एसपीओ भौचश्का रह जाते हैं. बहुतेरे लोग जान बचाने के लिए बदहवास भाग जाते हैं. जो लोग पीएलजीए का मुकाबला करने की कोशिश करते हैं उन्हें कुछ ही मिनटों में मार डाला जाता है. 40 मिनट के अन्दर यह कार्रवाई खत्म हो जाती है. कैम्प के सभी भवनों पर कब्जे में लिया जाता है. इसमें पीएलजीए ने बिना किसी नुकसान झेलते हुए 7 एसपीओ समेत 11 पुलिस बलों को मार गिराया. इनमें एक सहायक प्लटून कमाण्डर भी शामिल है. 7 अन्य पुलिस वाले घायल हो गए. पुलिस बलों से कुल 49 हथियार जब्त कर लिए गए.

### पीएलजीए द्वारा जब्त शस्त्रास्त्रों का विवरण :

एके-47 - 4; एसएलआर - 14; .303 रायफल - 25; स्टेनगन - 2; इन्सास - 1; एलएमजी - 1; 2 इंच मोर्टार - 1; 9 एमएम पिस्तौल - 1 और विभिन्न किस्म की 2500 से ज्यादा गोलियां.

जब यह हमला हो रहा था, तब पीएलजीए की अन्य टुकड़ियों ने बीजापुर और बासागूडा की तरफ जाने वाली सड़कों पर अवरोध खड़े कर दिए ताकि दुश्मन के बलों को रोका जा सके. बासागूड़ा से यह खबर सुनकर आए सीआरपीएफ वालों पर किए गए एम्बुश में 3 जवान बुरी तरह घायल हो गए. गौरतलब है कि इतना बड़ा हमला होने के बावजूद यहां सिर्फ 14 किलोमीटर दूर पर स्थित जिला मुख्यालय बीजापुर स्थित पुलिस अधिकारियों को शाम तक कोई खबर नहीं मिली.

## 'टिफिन बम' के विस्फोट में नगा अधिकारियों समेत 8 पुलिस वाले मरे - 12 से ज्यादा गायल

विनाशाकरी सलवा जुडूम अभियान के शुरू होने के बाद जनता और पीएलजीए सैनिक अपने प्रतिरोधी संघर्ष में नए-नए तरकीबों को अपनाते हुए दुश्मन के बलों को चकमा दे रहे हैं. एक बहुत बड़ा दुश्मन

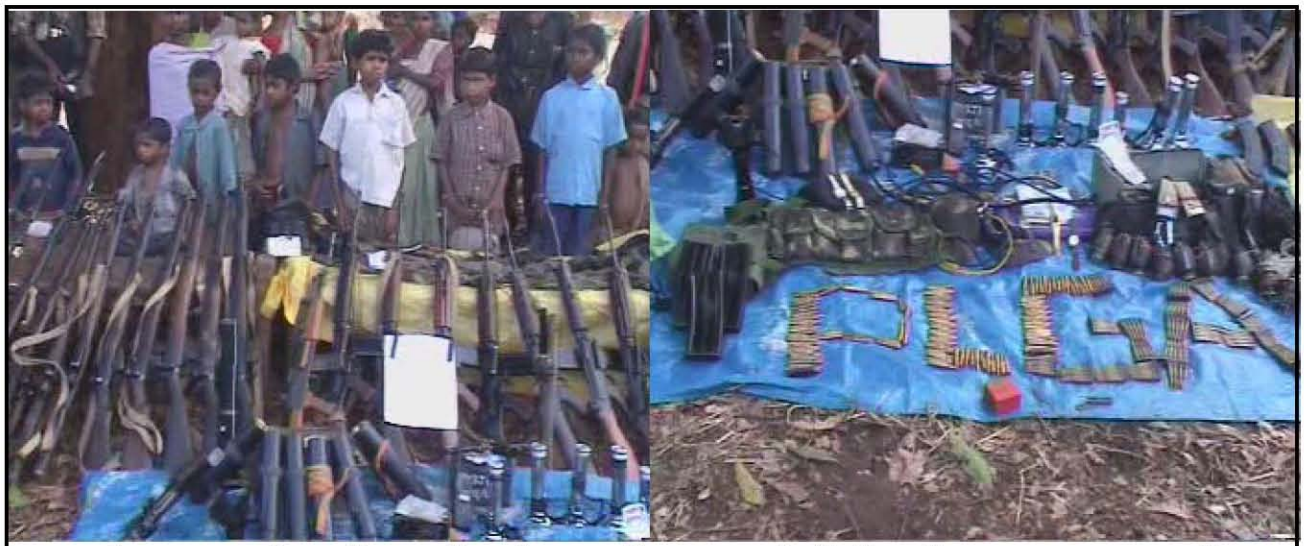

16 अप्रैल 2006 को मुरकीनार पुलिस कैम्प पर किए गए हमले में पीएलजीए द्वारा कब्जाए गए हथियार

9 फरवरी 2006 को एनएमडीसी बारूद डिपो पर किए गए हमले में पीएलजीए द्वारा कब्जाए गए हथियार

से टक्कर लेने वाली एक कमजोर पर मजबूत इरादों वाली सेना को, जिसे शक्तिशाली जनाधार प्राप्त है, हर हाल में छापामार दावपेंचों का सुचारू तरीके से इस्तेमाल करना ही होगा. अब उनकी तरकश में पहुंचा है 'टिफिन' बम जो पुलिस बलों के लिए एक बुरा स्वप्न साबित होने लगा है. 8 फरवरी 2007 को भैरमगढ़ के पास पूंड्री गांव के पास सड़क के बीचोंबीच पीएलजीए सैनिकों ने एक बारूदी सुरंग बिछा दी जोकि असल में एक टिफिन बम था. उसे ऐसा बिछाया गया ताकि पुलिस वालों की खोजी नजरों में आसानी से आ जाए. गश्त पर निकले पुलिस बलों ने उसे पहचानकर बाहर निकाला और तार काटकर उसमें लगे डिटोनेटर को अलग कर दिया. इसके बाद वे सुनिश्चित हो गए कि वह बम अब निष्क्रिय हो चुका है. बाद में नगा पुलिस के सहायक कमाण्डेण्ट और भैरमगढ़ थाने के सहायक प्रभारी समेत कुछ पुलिस वालों ने टिफिन डिब्बे को खोलने की कोशिश की तो उसमें शक्तिशाली विस्फोट हुआ. इस विस्फोट में 7 पुलिस वाले मौके पर ही मारे गए और 12 से ज्यादा एसपीओ, सलवा जुडूम के सरदार और पुलिस वाले घायल हो गए. बाद में एक और एसपीओ ने अस्पताल में दम तोड़ दिया. इसमें घायल हुए अजय सिंह और विक्रम मण्डावी भैरमगढ़ इलाके में सलवा जुडूम के सरगना थे.

## जुडूम के जुल्मी नेता अजय सिंह और विक्रम मण्डावी घायल

भैरमगढ़ का निवासी अजय सिंह ठाकुर मूलतः उत्तर प्रदेश का था. शुरू से यह जन विरोधी व लम्पट किस्म का आदमी था. आदिवासियों का निर्मम शोषण करते हुए उसने भैरमगढ़ में अच्छी-खासी कमाई की. बाद में अपने गुरू महेन्द्र कर्मा के 'आशीर्वाद' से भैरमगढ़ ब्लॉक के युवा कांग्रेस का अध्यक्ष बन गया. इसने कई महिलाओं की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ किया था. सलवा जुडूम के शुरू होते ही यह उसमें कूद पड़ा था. सलवा जुडूम ''स्थानीय जनता का सस्फूर्त आन्दोलन'' क्यों नहीं है, यह समझने के लिए भैरमगढ़ क्षेत्र में अजय

कॉमरेड कुम्माल, जिनकी शहादत देकर पीएलजीए ने झाराघाटी हमले को सफल बनाया.

# झाराघाटी के पास पीएलजीए का शानदार हमला
# 7 पुलिस वालों का सफाया – हथियार जब्त

*2007 के शुरू से ही पीएलजीए का प्रतिरोधी संघर्ष तीखा और धारदार होता जा रहा है. 16 जनवरी 2007 को माड़ डिवीजन के झाराघाटी के पास पैदल गश्त पर आने वाले पुलिस एवं अर्धसैनिक बलों पर पीएलजीए ने जबर्दस्त हमला किया. इस हमले में 7 पुलिस वाले मारे गए. कुछ अन्य घायल हुए. मारे गए पुलिस वालों से पीएलजीए के लाल सैनिकों ने 3 एके–47, 2 एसएलआर और 2 इन्सास रायफलें छीन लीं. हालांकि पीएलजीए की इस कामयाबी की कहानी में बहादुर योद्धा कॉमरेड कुम्माल की शहादत भी जुड़ी हुई है.*

*बगल के गांव में एक मुखबिर का सफाया कर पीएलजीए सैनिकों ने पुलिस को चारा डाला. योजना के मुताबिक पुलिस बल कैम्प से निकले थे. पहले से ताक में बैठे पीएलजीए योद्धाओं ने पुलिस बलों को अपने जाल में फंसाकर ताबड़तोड़ गोलीबारी की. पुलिस बलों की संख्या 40 के आसपास थी. इसके बावजूद भी पीएलजीए के सैनिक उन पर पूरी तरह हावी हो गए. करीब 40 मिनट तक पुलिस वालों पर जमकर गोलीबारी करते हुए उन्होंने इस हमले को सफल बनाया. हालांकि पुलिस वालों ने भी पीएलजीए के लाल योद्धाओं पर अंधाधुंध गोलीबारी की, लेकिन उन्हें दबा दिया गया. जब यह हमला हो रहा था, दोनों तरफ पास–पास में मौजूद पुलिस कैम्पों से इनकी सहायता के लिए पुलिस बलों ने हिलने तक की हिम्मत नहीं की. 7 लोगों को मार डालकर बाकी को पीएलजीए ने 2 किलोमीटर दूर तक दौड़ा–दौड़ाकर भगा दिया. पीएलजीए के हमलावर टुकड़ी के सदस्य कॉमरेड कुम्माल ने इस हमले में अनुपम शूरता का प्रदर्शन किया. पुलिस की गोलियों की बौछार की रत्ती भर भी परवाह न करते हुए उन्होंने अपने कमाण्डर के साथ मिलकर लड़ाई का बढ़िया नमूना पेश किया.* *(कॉमरेड कुम्माल की जीवनी पर रिपोर्ट पृष्ठ 37 पर पढ़ें).*

*इस सफल हमले से इस इलाके की जनता बेहद खुश हुई क्योंकि उससे ठीक 8 दिन पहले इसी इलाके के छिनारी गांव में पुलिस ने एक पाशविक हत्याकाण्ड में जन मिलिशिया के चार कॉमरेडों की हत्या की थी. चारों शहीद कॉमरेड इसी इलाके की जनता की संतानें थे. पीएलजीए ने उनकी हत्याओं का शानदार ढंग से बदला लिया. गौरतलब बात यह है कि छिनारी हत्याकाण्ड के मुख्य सूत्रधार साहू (पुलिस अधिकारी) इस हमले में कुत्ते की मौत मारे गए. एक और खास बात यह है कि जब यह हमला हो रहा था, तब भाकपा (माओवादी) की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस का सत्र जारी था. इस हमले की खबर रेडियो में सुनकर कांग्रेस के प्रतिनिधि बेहद उत्साहित हुए – पीएलजीए की जय–जयकार की.* ✶

सिंह का इतिहास और इस आन्दोलन में उसकी भूमिका पर नजर डालना पर्याप्त होगा. इसी तरह जनपद अध्यक्ष विक्रम मण्डावी भी जन-विरोधी शख्स था. इन दोनों ने सलवा जुडूम के जुल्मी हमलों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए इसने कई हमलों का सीधा नेतृत्व किया था. इस इलाके के लोगों के लिए ये दोनों घोर दुश्मन बन गए. 22 मई 2005 को भाकपा (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी द्वारा आहूत बन्द के खिलाफ अजय सिंह, विक्रम मण्डावी कुछ अन्य गुण्डों व सीआरपीएफ बलों के साथ मिलकर मोटार सायकिल रैली पर निकले थे. रास्ते में जनता व जन मिलिशिया द्वारा पेड़ काटकर बगल में एक 'प्रेशर बम' रखा गया था. अजय सिंह का पैर बम पर पड़ते ही वह फट पड़ा. उस विस्फोट में अजय सिंह, विक्रम मण्डावी समेत तीन गुण्डे और सीआरपीएफ के तीन जवान बुरी तरह घायल हो गए. अजय सिंह की जान बचाने के लिए पुलिस-प्रशासन ने तत्परता दिखाते हुए हेलिकाप्टर में उसे रायपुर पहुंचाया.

8 फरवरी 2006 को फिर एक हमले में इन दोनों की जोड़ी बुरी तरह घायल हो गई. भैरमगढ़ के निकट पूंड्री गांव के पास पीएलजीए द्वारा रखे गए टिफिन बम के फट जाने से 7 पुलिस वाले मारे गए और एक दर्जन से ज्यादा लोग घायल हो गए. घायलों में ये दोनों गुण्डा नेता शामिल थे. भले ही इन दो हमलों में वे बच गए हों, पर जनता के खिलाफ किए गए अत्याचारों व जुल्मों के लिए जनता के हाथों सजा मिलना निश्चित है.

## दरभागुड़ा के पास पीएलजीए का हमला
## 4 नगा जवानों समेत 8 का सफाया-हथियार जब्त

1 मार्च 2007 को दक्षिण बस्तर डिवीजन के दरभागुड़ा के निकट पीएलजीए के लाल योद्धओं ने एक ट्रक को बारूदी सुरंग से उड़ाकर उसमें सवार 8 पुलिस वालों का सफाया कर दिया. गौरतलब है कि मारे गए पुलिस वालों में 4 नगा जवान थे, जो इस इलाके में जनता को सबसे ज्यादा आतंकित करने वाले दरिंदे थे. अखबारों में छपी खबरों के मुताबिक विस्फोट के बाद दोनों ओर से काफी देर तक गोलीबारी हुई. बाद में पीएलजीए के योद्धा मौके से तीन एके-47 रायफलों समेत 7 हथियार लेकर चलते बने. सलवा जुडूम के आतंक के त्रस्त इस इलाके की जनता में इस कार्रवाई से खुशी की लहर फैल गई.

## गड़चिरोली डिवीजन में मुखबिरों का सफाया

चादगांव एरिया अन्तर्गत ग्राम तुकाम का निवासी रामदास गावड़े पुलिस मुखबिर के रूप में गांव-गांव घूमकर दस्ते की जानकारी एकत्रित कर पुलिस को पूरा समाचार पहुंचाया करता था. संगठन सदस्यों की जानकारी पुलिस को दिया करता था. रामदास की पार्टी-विरोधी व जनविरोधी गतिविधियों से परेशान होकर पार्टी की एरिया कमेटी और जनता ने उसे मौत की सजा देने का निर्णय सुनाया. एरिया कमेटी व जनता के इस निर्णय को भूमकाल मिलिशिया दस्ते ने अमल में लाया.

22 अगस्त 2006 को दयाराम गावड़े को मौत के घाट उतार दिया गया. चादगांव एरिया के अन्तर्गत ग्राम अलकानार का दयाराम गावड़े पुलिस की मुखबिरी व जनविरोधी कार्यों में लिप्त रहता था. जनता को डराना, धमकाना, पैसा वसूलना, दस्ते के पता के लिए मोटरसायकल में घूमना आदि किया करता था. एरिया कमेटी ने छानबीन की तो पता चला कि दयाराम गावड़े गोपनीय सैनिक था. 10 जुलाई 2006 को पीएलजीए सैनिकों के हाथ कुत्ते की मौत मारा गया.

कसनसूर एरिया कमेटी के अन्तर्गत ग्राम गेदा में 22 दिसम्बर 2006 को दस्ते के ऊपर कमाण्डो बलों ने हमला कर फायरिंग की थी. पूरा जांच-पड़ताल करने पर पता चला कि दस्ते के ऊपर हमला करने के लिए गेदा गांव का ही सचिन सातपुते पुलिस को लेकर आया था. 4 अश्टूबर 2006 को गेदा गांव में जन अदालत लगाई गई. जन अदालत ने सचिन सातपुते को उसके किए की सजा मौत सुनाई. जन अदालत के इस फैसले को जन मिलिशिया दल ने अमल कर सचिन सातपुते को मौत के घाट उतार दिया. ✶

# बैलाडीला खदानों को टाटा-एस्सार कम्पनियों को देने के छत्तीसगढ़ सरकार के फैसले का विरोध करो !

30 अक्टूबर 2006 को छत्तीसगढ़ सरकार ने बैलाडीला लौह खदानों के 1 एवं 3 डिपाजिटों को क्रमशः टाटा एवं एस्सार कम्पनियों को पट्टे पर देने का जन विरोधी फैसला लिया है. इस तरह उसने बैलाडीला खदानों के निजीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी. आगे जाकर इन्हें पूरी तरह बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हवाले करने की साजिश रची जा रही है. समूची दुनिया में बढ़िया किस्म के लोहे के लिए मशहूर बैलाडीला खदानों का एनएमडीसी द्वारा संचालित होने के बावजूद इनका दोहन जापानी एवं कोरियाई बहुराष्ट्रीय कम्पनियां ही कर रही हैं. यहां से इन देशों को बेहद सस्ते में लौह अयस्क बेचा जा रहा है, जबकि देश के मध्यम पूंजीपतियों को महंगे दाम पर बेचा जा रहा है. इससे एक तरफ कई छोटे एवं मध्यम स्पंज आयरन एवं स्टील कम्पनियां दम तोड़ती जा रही हैं, तो दूसरी तरफ भिलाई स्टील प्लान्ट भी गंभीर संकट का सामना कर रहा है. ऐसे में बैलाडीला में निजी कम्पनियों का प्रवेश का पुरजोर विरोध करना जरूरी है.

टाटा, एस्सार कम्पनियां बस्तर की आदिवासी जनता को बड़े पैमाने पर विस्थापित करने जा रही हैं. इसका विरोध करने पर उन्हें नक्सली या नक्सली समर्थक बताकर सलवा जुडूम द्वारा दबाया जा रहा है. यहां तक कि इस विस्थापन के खिलाफ भाकपा द्वारा प्रस्तावित रैली को भी अनुमति देने में आनाकानी करना छत्तीसगढ़ सरकार की अलोकतांत्रिक एवं जन विरोधी नीतियों का स्पष्ट उदाहरण है. सलवा जुडूम साम्राज्यवादियों एवं उनके दलाल बड़े पूंजीपतियों के हित में उन्हीं के निर्देशों पर चलाया जा रहा आदिवासी विरोधी फासीवादी हमला है. टाटा, एस्सार जैसी कम्पनियां महेन्द्र कर्मा, बलिराम कश्यप, आदि नेताओं को करोड़ों रूपए की दलाली देकर इस जुल्मी अभियान का संचालन करवा रही हैं. रमन सरकार द्वारा अब बैलाडीला के कुछ डिपाजिटों को टाटा और एस्सार को देने का फैसला भी इसी षड़यंत्र की कड़ी है. ✶

# 'सलवा जुडूम' के नाम पर पौने दो साल से बस्तर में जारी व्यापक आतंक, कत्लेआम, लूट और आगजनी का जवाब है 'रानीबोदली' प्रतिरोधी कार्रवाई !

## इस शानदार हमले को सफल बनाने हेतु अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर करने वाले जांबाज वीर योद्धा कॉमरेड्स मोहन, भगत, कैलास, लिंगाल, चैतू और भीमाल की बहादुराना शहादत जिन्दाबाद !

14-15 मार्च की दरमियानी रात पीएलजीए ने पश्चिम बस्तर डिवीजन (बीजापुर पुलिस जिला) के रानीबोदली पुलिस चौकी पर शानदार व ऐतिहासिक हमला किया. इस हमले में 39 एसपीओ समेत 55 पुलिस बल कुत्ते की मौत मारे गए, जबकि 11 अन्य घायल हो गए. घायलों में 9 एसपीओ थे. इस कैम्प से पीएलजीए ने कुल 33 हथियार छीन लिए. जिनमें 1 दो इंच का मोर्टार, 3 एके-47, 13 एसएलआर शामिल हैं. लेकिन पीएलजीए को यह जीत आसानी से नहीं मिली. छह कॉमरेडों ने अपने अनमोल प्राणों की आहुति देकर यह इतिहास रचा है. इन जांबाज शहीद कॉमरेडों के नाम इस प्रकार हैं - कॉमरेड मोहन (पश्चिम बस्तर डिवीजनल कमेटी सदस्य और डिवीजनल कमाण्डर-इन-चीफ), कॉमरेड भगत, कॉमरेड कैलास, कॉमरेड लिंगाल, कॉमरेड चैतू और कॉमरेड भीमाल. इन पराक्रमी कॉमरेडों ने अपनी जान की रत्ती भर भी परवाह न करते हुए, दुश्मन को ललकारते हुए अनुपम शूरता एवं अदम्य साहस का परिचय देते हुए दुश्मन के बलों की धज्जियां उड़ा दीं. (चूंकि यह खबर हमें पत्रिका के छपते-छपते मिली है, इसलिए इन शहीदों की जीवनियां इस अंक में नहीं दे पा रहे हैं. अगले अंक में हम इस कमी को जरूर पूरा करने की कोशिश करेंगे. - सं) भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास में दुश्मन के सशस्त्र बलों का इतनी बड़ी संख्या में सफाया करने का सम्भवतः यह पहला हमला था.

**39 एसपीओ समेत 55 पुलिस बलों का सफाया -**
**11 अन्य घायल**
**33 हथियारों के जखीरा पर जन बलों का कब्जा**
**पीएलजीए के 6 जांबाज लाल योद्धाओं की शौर्यपूर्ण कुरबानी**

करीब पौने दो साल पहले जून 2005 में बीजापुर पुलिस जिले के अम्बेली गांव, जो ठीक रानीबोदली गांव के करीब बसा हुआ है, में जन विरोधी सामन्ती गुण्डों और पुलिस बलों ने आदिवासी जनता पर हमला किया था. वहीं से तथाकथित 'सलवा जुडूम' की शुरूआत हुई थी जिसका वास्तविक अर्थ है 'सामूहिक शिकार'. आदिवासियों के सस्फूर्त व शांतिपूर्ण अभियान के रूप में प्रचारित इस सर्वाधिक जुल्मी अभियान में तबसे लेकर अब तक 400 से ज्यादा आदिवासियों को सीआरपीएफ, नगा पुलिस, मिजो पुलिस, राज्य पुलिस, एसपीओ और 'सलवा जुडूम' गुण्डा गिरोहों ने निर्ममतापूर्वक मार डाला. 10 साल के किशोर से लेकर 60 साल के बूढ़ों तक को इनकी बर्बरता की भेंट चढ़ा दी गई. कई लोगों को काटकर लाशें इन्द्रावती नदी में बहा दी गईं. 100 से ज्यादा युवतियों एवं महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया. कइयों को मार डाला गया. सैकड़ों गांवों में हजारों घर जला डाले गए. हजारों लोगों को जबरन 'राहत शिविरों' में घसीट लाकर नारकीय जिन्दगी जीने को मजबूर बनाया गया. सरकार ने मीडिया को अपने कब्जे में रखकर इन सभी सच्चाइयों को दबाए रखा. जनता की मांग पर और उसकी सक्रिय भागीदारी से माओवादी कार्यकर्ता जब कोई जवाबी कार्रवाई करते हैं उसी को बढ़ा-चढ़ाकर एकतरफा खबरें छापने का मानों रिवाज बन पड़ा. जो सच बोलने और लिखने की हिम्मत रखते हैं उन्हें न सिर्फ मारने की धमकियां दी गईं, बल्कि कई पत्रकारों की पिटाई कर दी गई. यहां तक कि जन-प्रतिनिधियों, व्यापारियों, ड्राइवरों, शिक्षकों को भी सलवा जुडूम गुण्डा गिरोहों व एसपीओ द्वारा मारा-पीटा गया, जबकि पुलिस अधिकारी तमाशा देखते रहे. कई मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के साथ भी छीना-झपटी जैसा अभद्र व्यवहार किया गया. खासकर नगा और मिजो जवान आतंक का पर्याय बन कर दर्जनों आदिवासी मां-बहनों के साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया. इन सब अपमानों, अत्याचारों एवं जुल्मों से बस्तर की हजारों आदिवासी जनता के दिलों में प्रतिशोध की आग सुलगती रही. और उसी आग ने 15 मार्च 2007 के भोर में रानीबोदली पुलिस चौकी को तबाह कर डाला. इसके लिए अमेरिकी साम्राज्यवादियों समेत टाटा, एस्सार, जिन्दल जैसे दलाल पूंजीपति, महेन्द्र कर्मा, रमन सिंह जैसे दलाल एवं चोर नेता जिम्मेदार हैं जो आदिवासियों के खून के प्यासे हैं.

इस हमले के कुछ ही घण्टे पहले पश्चिम बंगाल के नंदिग्राम में विशेष आर्थिक क्षेत्र के लिए अपनी जमीनें देने से इंकार करने वाले 14 निहत्थे किसानों को सामाजिक फासीवादी माकपा सरकार के आदेश पर पाशविक पुलिस बलों एवं गुण्डों ने गोलियों से भून डाला था. करीब 60 लोगों को घायल किया था. यह महज इत्तेफाक नहीं है. आज भारत में दलाल पूंजीपतियों एवं साम्राज्यवादियों की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का हितपोषण करने वाली सरकारें आदिवासियों और अन्य शोषित किसानों को विस्थापित करने पर तुली हैं. इसका विरोध करने पर गोलियां बरसा रही हैं, जैसे कि कलिंगनगर, सिंगूर और अब नंदिग्राम किया गया. बस्तर को टाटा, एस्सार, जिन्दल, आदि बड़े पूंजीपतियों की लूट का चारागाह बनाने के लिए ही 'सलवा जुडूम' चलाया जा रहा है. लेकिन देश के विभिन्न इलाकों में भाकपा

(माओवादी) के नेतृत्व में संघर्षरत जनता सामन्तवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के लिए कमर कस चुकी है. प्रतिक्रियावादी शासक कलिंगनगर, नंदिग्राम, सलवा जुडूम जैसे नरसंहारों को अंजाम दे रहे हैं, तो जनता और जनता की लड़ाकू सेना पीएलजीए को रानीबोदली जैसे हमले करने का पूरा–पूरा अधिकार है.

हाल ही में सम्पन्न हमारी पार्टी – भाकपा (माओवादी) की ऐतिहासिक एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस द्वारा सौम्पे गए नए एवं उन्नत कार्यभारों से लैस हमारी बहादुर पीएलजीए के वीर कमाण्डरों के नेतृत्व में सौ से ज्यादा लाल योद्धाओं और कोया भूमकाल मिलिशिया के सदस्यों ने जनता की सक्रिय मदद से इस जबर्दस्त हमले को कामयाबी के साथ अंजाम दिया. इस कैम्प के चारों तरफ पास–पास में कई अन्य पुलिस थाने एवं कैम्प मौजूद होने के बावजूद भी योजनाबद्ध तरीके से हमारे जांबाज जनयोद्धा बिजली सी तेजी से जुल्मी पुलिस बलों और आतंकी एसपीओ पर इस तरह टूट पड़े कि उन्हें बचने का कोई मौका ही नहीं मिला. पूरे 55 पुलिस बलों का सफाया कर 11 को घायल कर दिया गया. जनता को आतंकित करने एवं मार डालने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले 33 हथियार पीएलजीए ने जब्त कर लिए. दण्डकारण्य में माओवादी आन्दोलन का सफाया कर इस पूरे इलाके को साम्राज्यवादियों एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूट के चारागाह में तब्दील करने का दिवास्वप्न देख रहे तमाम प्रतिक्रियावादी शासकों को हम यहां की शोषित जनता की तरफ से इस मौके पर चेतावनी दे रहे हैं कि सलवा जुडूम को तुरन्त बन्द कर एसपीओ को वापस भेज दें और पौने दो साल से जारी पाशविक हत्याकाण्ड व विध्वंसकाण्ड को रोक दें वरना रानीबोदली जैसी कार्रवाइयां दोहराई जाएंगी. हम मांग करते हैं कि बस्तर से नगा, मिजो बटालियन समेत तमाम अर्ध–सैनिक बलों को वापस लें. झूठी मुठभेड़ों को बन्द करें. जनता की हत्या करने, घरों को जलाने, लूटने और महिलाओं के साथ बलात्कार करने वाले पुलिस बलों और गुण्डों को दण्डित करें. हम यह भी ऐलान करते हैं कि हजारों आदिवासियों को उजाड़ने वाली टाटा (लोहंड़ीगुड़ा ) और एस्सार (भांसी) कम्पनियों को बस्तर में कोई जगह नहीं है.

हम इस मौके पर एसपीओ (विशेष पुलिस अधिकारियों)से अपील करते हैं कि आप जाने–अनजाने में जनता के खिलाफ बन्दूक उठाकर जुल्मों एवं अत्याचारों को अंजाम जो दे रहे हों, इस पर जरा पुनरविचार कीजिए. रानीबोदली हमले में एसपीओ ही ज्यादा संख्या में मारे गए हैं, इससे आपकी आंखें खुल जानी चाहिए. इस घटना से आपको समझ में आया ही होगा कि चारों तरफ फैले हुए सैकड़ों पुलिस एवं अर्ध सैनिक बलों की छावनियां भी आपको जनता के आक्रोश से नहीं बचा सकेंगी. दरअसल सरकार आपको आगे रखकर आपके अपने ही माता–पिता एवं भाई–बहनों को मरवाने का घिनौना खेल खेल रही है. इसलिए हम आपसे आग्रह करते हैं कि आप यह नौकरी छोड़ दें. अपने ही भाई–बन्धुओं को अपनी बन्दूक का निशाना मत बनाइए. अपने अपराधों एवं गलतियों के लिए जनता से क्षमायाचना कीजिए. यह मत सोचिए कि जनता और पीएलजीए आपको मार देंगी. आप अगर सच्चे मन से माफी मांगते हैं और सामान्य जिन्दगी जीना चाहते हैं तो आपको कोई नुकसान नहीं होगा, यह हमारा वादा है. अभी तक ऐसे दर्जनों लोग अपनी नौकरी एवं हथियार छोड़कर अपने–अपने गांव लौट चुके हैं. हमारी अपील के बावजूद भी अगर आप मानवता को कलंकित करने वाले 'सलवा जुडुम' अभियान में बने रहना चाहते हैं और पुलिस व अर्ध सैनिक बलों का साथ देना चाहते हैं तो जनता एवं उसकी रक्षा में जी–जान लगा देने वाली पीएलजीए के सामने इस तरह की प्रतिरोधी कार्रवाइयों को तेज करने के अलावा कोई रास्ता ही नहीं बचता. सही फैसला लीजिए, अभी भी वक्त है. ✶

## सरकार आखिर एक सीडी से क्यों डरती है?

*'बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है!' एक जमाने में भगतसिंह और उसके साथियों ने यही बात दोहराकर नेशनल असेम्ब्ली में बम फोड़ा था, तब जाकर अंग्रेजी हुक्मरानों के कान खड़े हो गए थे. ठीक इसी प्रकार छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में भी एक सीडी के माध्यम से माओवादियों ने मार्च 2006 में कुछ ऐसा ही धमाका कर दिया. अपने प्रचार माध्यमों (टीवी, रेडियो और अखबारों) के जरिए सलवा जुडूम को 'शांति मिशन' और 'माओवादियों के खिलाफ जनता का सस्फूर्त आन्दोलन' कहकर दुष्प्रचार की मुहिम छेड़कर सरकार ने कई मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों और संघर्ष इलाकों के बाहर रहने वाली आम जनता को लगभग बहरा ही बना दिया था. ऐसे में माओवादी क्रान्तिकारियों को सलवा जुडूम की असलियत दुनिया को बताने के लिए सीडी का सहारा लेना पड़ा. सलवा जुडूम के द्वारा जलाए गए गांवों, मारे गए लोगों और अत्याचार की शिकार महिलाओं के सम्बन्ध में फिल्माई गई डाक्युमेन्टरी – ''सलवा जुडूम नहीं सरकारी जुल्म'' – की सीडियों को माओवादी कार्यकर्ताओं ने रायपुर शहर में जब वितरण करना शुरू किया, विधानसभा में खूब शोर–शराबा मच गया. इन सीडियों को विधायकों और मंत्रियों के नाम भी भेजा गया था. इससे सलवा जुडूम का सरगना महेन्द्र कर्मा और उसके सहयोगी बौखला उठे. सीडी भेजने वालों की पतासाजी करने में सारा खुफिया तंत्र जुट गया. पक्ष–विपक्ष के सारे लुटेरे नेता चिल्लाने लगे कि जब नक्सली विधायक विश्रामघर तक सीडी पहुंचा सकते हैं तो कल उसमें बम भी फोड़ सकते हैं. तुरन्त ही सीडी भेजने वाले संदिग्ध माओवादी की पोरट्रेट तैयार करवाकर सभी अखबारों में प्रकाशित किया गया. सारे नेताओं के बंगलों पर सुरक्षा का इंतजाम पुख्ता बनाया गया. सैकड़ों अतिरिक्त कमाण्डो व नगा जवानों को उनकी सुरक्षा में तैनात किया गया. लेकिन किसी ने खुलकर यह बताने की हिम्मत नहीं की कि आखिर में उस सीडी में ऐसी क्या बात थी जिससे वे इतना भयभीत हो गए.*

*सरकार आमतौर पर यह रटती रहती है कि वह लोकतंत्र पर विश्वास रखती है और माओवादी लोकतंत्र के विरोधी है. लेकिन लोकतंत्र के इन स्वयंभू ठेकेदारों की पोल तब खुल जाती है जब वे एक सीडी को भी बर्दाश्त नहीं कर पाते; सीडी में दर्शाए गए गांवों और लोगों के सम्बन्ध में कोई निष्पक्ष जांच के लिए तैयार नहीं होते; और उलटे सीडी बांटने वालों की धरपकड़ का अभियान छेड़ देते हैं.*

*आखिर सरकार एक सीडी से क्यों इतना डरती है? क्योंकि वह सच्चाई से डरती है. वह डरती है कि इससे कहीं जनता को सच्चाई का पता न चल जाए ! ✶*

# अपनी कुरबानियों से दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते को रोशन करने वाले दण्डकारण्य के वीर शहीदों को लाल-लाल सलाम !

**पश्चिम बस्तर डिवीजन**

**कॉमरेड कनकन्ना (36) :** पश्चिम बस्तर डिवीजन के नेशनल पार्क एरिया में 9 सितम्बर 2006 को हुई मुठभेड़ में कॉमरेड कनकन्ना शहीद हुए. उनका जन्म मद्देड़ इलाके के ग्राम लोदेड में हुआ था. माता-पिता ने उनका नाम साम्बन्ना रखा था. गरीब परिवार में जन्मे कॉमरेड कनकन्ना बचपन से ही मेहनती थे. बचपन में गाय-बैल चराते हुए क्रान्तिकारी गीतों को गुनगुनाया करते थे. बचपन में बाल संगठन में रहकर साथी बच्चों को उत्साहित किया करते थे. बड़े होने के बाद डीएकेएमएस का सदस्य बन गए थे. जन संगठनों द्वारा लिए गए हर संघर्ष में, जैसे कि हड़ताल, बन्द, रैली आदि, बड़े उत्साह के साथ भाग लिया करते थे. 1997 में वह मद्देड़ छापामार दस्ते में भर्ती हो गए. मार्च 1998 में तारलागुड़ा थाने पर किए गए हमले में हमारे प्यारे कॉमरेडों अशोक, जोगन्ना, कमलश्का, बाबू और राममूर्ति के शहीद होने बाद मद्देड़ इलाके में पुलिस बलों द्वारा चलाए गए तीखे दमन अभियान के बीच भी कॉमरेड कनकन्ना टस से मस नहीं हुए थे. मद्देड इलाके में दुश्मन के बलों पर किए गए कई हमलों में उन्होंने भाग लिया. बाद में उन्हें एसजेडसी सदस्य कॉमरेड का गार्ड नियुक्त किया गया. पार्टी के इस फैसले को उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया. गॉर्ड की जिम्मेदारी निभाते हुए नेतृत्वकारी कॉमरेड की सुरक्षा के लिए वह हर पल तत्पर रहा करते थे. बाद में उन्हें गॉर्ड के काम से बदलकर नेशनल पार्क दस्ते में सदस्य बनाया गया था. सहनशीलता, हंसमुख एवं मेहनती स्वभाव कॉमरेड कनकन्ना के अनुकरणीय गुण थे. सभी कॉमरेडों के साथ वह आसानी से घुलमिल जाया करते थे.

2005 से चलाए जा रहे दमनकारी अभियान के बीचोबीच जनता का ढाढ़स बांधते हुए शत्रु बलों का मुकाबला करने में कॉमरेड कनकन्ना अगुवा पंक्ति में रहे. ताड़मेंडरी गांव में सलवा जुडूम के गुण्डों के खिलाफ किए गए पहले जवाबी हमले में कॉमरेड कनकन्ना सैकड़ों लोगों के साथ बहादुरी के साथ भाग लिया. कॉमरेड कनकन्ना शत्रु के भीषण दमन अभियान के बीच सीएनएम (चेतना नाट्य मंच) के दस्ते के साथ घूम रहे थे. अकेले उनके पास ही हथियार था, बाकी सब निहत्थे थे. एक मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने उनके दस्ते को घेरकर भीषण गोलीबारी शुरू कर दी. कॉमरेड कनकन्ना को सीने में गोली लगने से वह वहीं शहीद हो गए. घायल अवस्था में कॉमरेड सपना और रामा को पुलिस ने पकड़ लिया. करीब 10 साल तक जनता की सेवा कर क्रान्ति के लक्ष्य के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले कॉमरेड कनकन्ना की कुरबानी कभी व्यर्थ नहीं जाएगी.

**कॉमरेड सोड़ी लच्छू उर्फ गंगू (25) :** कॉमरेड लच्छू पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर इलाके में कमकानार मिलिशिया प्लटून कमाण्डर के रूप में काम कर रहे थे. 7 अश्टूबर को वह गंगलूर गांव गए थे ताकि वहां मौजूद पुलिस वालों की टोह ली जा सके. लेकिन जिन पर उन्होंने विश्वास किया, उन्होंने गद्दारी कर पुलिस को सूचना दी. पुलिस, एसपीओ और सलवा जुडूम के गुण्डों ने मिलकर कुल्हाड़ियों और तलवारों से हमला कर उन्हें बुरी तरह मार डाला. तब वह निहत्थे थे. इस तरह भारत की क्रान्तिकारी आन्दोलन में कॉमरेड लच्छू एक लाल सितारा बन गए. उनका जन्म गंगलूर लिाके के डोड्डी तुमनार गांव में हुआ था. बचपन से ही वह बाल संगठन का सदस्य बन कर क्रान्तिकारी आन्दोलन में काम कर रहे थे. वे अपने बड़े भाई कॉमरेड तिरुपति उर्फ सन्नू, जो 2002 में वेदिरे रेड में शहीद हुए थे, की शौर्यपूर्ण शहादत से प्रेरित थे. उन्हीं के नश्शेकदम पर चलते हुए वह भी क्रान्ति के मकसद को आगे बढ़ाते हुए शहीद हो गए. 2004 में वह पीएलजीए का सदस्य बने थे. पहले उन्होंने गंगलूर एलओएस सदस्य के रूप में काम किया था. अगस्त 2006 में उन्हें मिलिशिया प्लटून के कमाण्डर का दायित्व सौम्पा गया था. इस जिम्मेदारी को तहेदिल से स्वीकारने वाले कॉमरेड लच्छू ने सलवा जुडूम दमन अभियान के खिलाफ किए गए कई हमलों में बहादुरी के साथ भाग लिया. गंगलूर 'राहत' शिविर पर हमला कर 8 एसपीओ-गुण्डों का सफाया करने की कार्रवाई में वह शामिल थे. इसके अलावा जुडूम गुण्डों और सीआरपीएफ के खिलाफ किए गए कई बूबी ट्रैप हमलों में वह शामिल थे. कॉमरेड लच्छू भले ही आज हमारे बीच मौजूद नहीं है, पर वह जिस तालपेर नदी के तट पर पले-बढ़े थे, उसकी लहरों में सदा जीवित रहेंगे.

**कॉमरेड एमला सन्नू (28) :** कॉमरेड सन्नू का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर इलाके के आवनार गांव के एमला परिवार में हुआ था.गांव तोड़का और बाद में बीजापुर में उन्होंने 8वीं कक्षा तक पढ़ाई की थी. पढ़ते समय ही बस्तर में जारी क्रान्तिकारी संघर्षों से बेहद प्रभावित थे. 2000 में पढ़ाई छोड़ने के बाद वह डीएकेएमएस सदस्य बन गए थे. प्रभात, विय्युश्का, पितूरी आदि क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाओं को वह काफी ध्यान से पढ़ा करते थे. 2002 में वह ग्राम सुरक्षा दल का सदस्य बन गए और बाद में उन्हें उसी दल का कमाण्डर बनाया गया था. सलवा जुडूम के शुरू होने के बाद गंगलूर-बीजापुर सड़क पर पुलिस बलों के खिलाफ किए गए कई हमलों में वह शामिल थे. बीजापुर और गंगलूर इलाकों में सलवा जुडूम के खिलाफ जनता और जन मिलिशिया के द्वारा खड़े किए गए शानदार प्रतिरोधी संघर्ष में कॉमरेड सन्नू का बड़ा योगदान रहा. चेरपाल कैम्प से पुलिस रेगड़गट्टा, अवनार, परालनार, तोड़का, आदि गांवों में घुसने से कांपती थी श्योंकि कॉमरेड सन्नू के नेतृत्व में जन मिलिशिया प्लटून ने उनकी नींद हराम कर रखी थी. खासकर जन मिलिशिया द्वारा लगाए गए बूबी ट्रैपों (अखबारी भाषा में 'प्रेशर बम' के नाम से मशहूर हुआ) से दुश्मन की दमनकारी गतिविधियों पर काफी हद तक अंकुश लगाया गया. सरकार के भारी-भरकम सशस्त्र बलों का एक छोटी जन सेना, जो हथियारों के मामले में भी बेहद कमजोर है, के द्वारा कैसा सफल मुकाबला किया जा सकता है, इसका नमूना कॉमरेड सन्नू जैसे दण्डकारण्य के हजारों नौजवानों

ने अपनी पहलकदमी, सूझबूझ और अदम्य शूरता के बल पर पेश किया. 18 सितम्बर 2006 को दुश्मन के आने का पता चलने से कॉमरेड सन्नू बूबी ट्रैप का कनेक्शन दे रहे थे. तभी दुर्घटनावश बम फटने से घटनास्थल पर ही वह शहीद हो गए. उनके अन्तिम संस्कार में दुश्मन के घेराव-दमन मुहिमों की परवाह न करते हुए आसपास के सैकड़ों लोगों ने भाग लिया. जनता ने कॉमरेड सन्नू की बहादुराना शहादत को नम आंखों से श्रद्धांजली पेश की.

**कॉमरेड हपका लच्छू (30) :** इस कॉमरेड का जन्म भैरमगढ़ इलाके के गांव हलवूर में हुआ था. 29 अगस्त 2006 को पुलस ने इनकी एक फर्जी मुठभेड़ में नृशंस हत्या की. पिछले पौने दो साल से जारी सलवा जुडूम के तहत भारी हत्याकाण्ड, लूट, आगजनी, बलात्कार का भयावह आतंक के बीच भी कॉरेड लच्छू ने आत्मविश्वास के साथ जनता को गोलबन्द किया. डर के मारे कुछ लोगों द्वारा आत्मसमर्पण किए जाने बाद भी वह प्रतिरोध की अगड़ी पंक्ति में डट कर खड़े रहे. 2002 में भैरमगढ़ बाजार में एक पुलिस जवान का सफाया करने की कार्रवाई का कॉमरेड सन्नू ने नेतृत्व किया. कई सलवा जुडूम गुण्डों का सफाया करने में उनकी पहलकदमी थी. जनतना सरकार के अध्यक्ष एवं ग्राम पार्टी कमेटी के सचिव के रूप में उन्होंने अपने पंचायत की जनता का सुचारू नेतृत्व किया. करीब 10 तक उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन में काम किया.

**कॉमरेड पोयामी मोती उर्फ बसन्ती (21) :** भैरमगढ़ इलाके के गांव जांगला के एक गरीब पोयामी परिवार में कॉमरेड मोती का जन्म हुआ था. माता-पिता की वह दूसरी संतान थीं. किशोर उम्र में वह बाल संगठन की सदस्या बन गई थीं. क्रान्ति के बिना नारी की मुक्ति सम्भव नहीं कहकर उन्होंने क्रान्ति का रास्ता चुना. गांव के मुखियाओं के शोषण और दमन का विरोध करते हुए वह अक्टूबर 2005 में पीएलजीए दस्ते में भर्ती हो हुई थीं. सलवा जुडूम के काले दिनों में भी वह हिम्मत के साथ पुलिस व गुण्डों की आंखों में धूल झोंकते हुए बड़ी कठिनाइयों का सामना करती रहीं. बाद में पार्टी के फैसले पर उत्तर तेलंगाना के वाजेड़ एलओएस की सदस्य बन कर गईं. 26 नवम्बर 2006 को चेरला के पास हत्यारे ग्रे-हाउण्ड्स बलों पर पीएलजीए के द्वारा किए गए वीरतापूर्ण हमले के दौरान कॉमरेड मोती एक अन्य कॉमरेड के साथ शहीद हो गईं. 'कम्युनिस्टों के लिए राज्यों या देशों की सीमाएं कोई बाधा नहीं होतीं' इस कथन को सच्चाई में बदलते हुए बस्तर से आन्ध्र जाकर शहादत को प्राप्त करने वाली यह संघर्षरत नारी कॉमरेड मोति क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास में सदा अमर रहेंगी.

**कॉमरेड भोगामी राधे (30) :** भैरमगढ़ इलाके के मिरतुल थाना अन्तर्गत आने वाले ग्राम दोरुम से थीं. यह गांव कई साल पहले यहां आकर बस चुका था. कॉमरेड राधे केएएमएस की सक्रिय कार्यकर्ता थीं. संगठन द्वारा आयोजित की रैलियों, सभाओं और अन्य कार्यक्रमों में उन्होंने भाग लिया. 1997 में उठे जन जागरण-2 के दौरान भी वह दृढ़तापूर्वक खड़ी थीं. पुलिस बलों के सामने उन्हेंने न कभी घुटने टेके, न ही संगठन से इस्तीफा दिया. इस बार जब सलवा जुडूम शुरू हुआ तो उनका घर, खेत सब कुछ उजड़ गया. गुण्डों एवं पुलिस ने उनका सब कुछ जला डाला. तब से वह ग्राम ऊरेपाल में अपने रिश्तेदारों के पास जाकर रहने लगी थीं. सलवा जुडूम के गुण्डों, एसपीओ और पुलिस ने उन्हें धोखे से पकड़ लिया और उनके साथ सामूहिक बलात्कार किया. बाद में उन्हें गोली मार दी. शायद उनकी हत्या कर उन्होंने यह सोच लिया होगा कि ऐसा करने से और कोई महिला क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ जुड़ने का साहस नहीं कर सकती. लेकिन इसे झूठ साबित करते हुए आज सैकड़ों महिलाएं माओवादी लोकयुद्ध में जुड़ रही हैं तथा रानिबोदली जैसे शौर्यपूर्ण हमलों में भाग लेकर अनगिनत शहीदों के खून का बदला ले रही हैं. दर्जनों महिलाओं के साथ पाशविकता से बलात्कार करने वाले एसपीओ, गुण्डों एवं पुलिस बलों का सफाया कर रही हैं.

**गड़चिरोली डिवीजन**

## पीएलजीए के बहादुर योद्धा कॉमरेड लाल्सू (दसरू)

24 मई 2006 को कासमपल्ली गाँव के करीब हमारे मुकाम पर हमला करने वाले पुलिस कुत्तों को खदेड़ते हुए हमारे पीएलजीए के बहादूर योद्धा कामरेड लाल्सु (जोगा दसरू गावड़े) शहीद हुए। गड़चिरोली डिविजनल कमेटी उस वीर योद्ध को नतमस्तक श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

कॉमरेड लाल्सु ग्राम नेंडवाड़ी के निवासी थे। यह गाँव भामरागड़ तहसील के अंतर्गत आता है। गट्टा पहाडियों की तलवटी में खड़ा उस गाँव का भौगोलिक दृष्टि से रणनीतिक महत्व है। वर्ग संघर्ष से उसका वैचारिक व व्यावहारिक रिश्ता है। शोषकों के लिए उनका नाम अपशकुन है। वह नाम लुटेरों की नींद हराम करने वाला है। इसीलिए उस गाँव के निरीह जीवों को अनेक कठिनाइयों व मुश्किलों को झेलना पड़ रहा है। कारावास, जेल, सजा, मारपीट, गिरफ्तारियों आदि नेंडवाडी वासियों की दिनचर्या सी बन गई है। ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि उस गाँव का नवजात बच्चा क्रांति का सपना लेकर जन्म लेता है। शोषकों का अंधा कानून बेकसूर लाल्सु को कसरवार बनाया। हिरासत में उन्होंने अमानवीय यातनाएँ झेली। इन यातनाओं को झेलते हुए पुलिस प्रशासन शोषणकारी राज्य यंत्र के प्रति उसके रग-रग में आक्रोश भर गया था। जेल से जमानत पर छूटते ही पार्टी एवं नव गठित जन छापामार सेना (पीएलजीए) में भर्ती हो गया। इसके पूर्व गाँव में रहते हुए पार्टी के अंशकालीन कार्यकर्ता के रूप में काम किया। उनकी कार्य कुशलता एवं पार्टी पर अटल विश्वास को देखते हुए घर पर ही उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई।

2001 जून से लेकर मार्च 2004 तक भामरागड़ स्थानीय सांगठनिक दस्ते में सक्रिय भूमिका निभाते रहे। उनकी सैनिक क्षमता व जुझारुपन को देखते हुए मार्च 2004 में पदोन्नति के साथ 7वाँ पलटन में उनका तबादला हुआ। पलटन पार्टी कमेटी (पीपीसी) के सदस्य रहते हुए धीरे-धीरे वे पलटन के उप कमांडर की जिम्मेदारी संभालने लायक अपनी क्षमताएँ बढ़ा ली। सैनिक कार्रवाइयों में पलटन के सभी सदस्यों का उन्होंने विश्वास जीत लिया। पार्टी के भीतर सभी श्रेणियों के कैडरों के लिए वे अत्यंत आत्मीय साथी रहे।

घर पर पढ़ाई से वंचित लाल्सु के भीतर सीखने की प्रबल इच्छा थी। दूसरों से सीखने का प्रयास करना उसकी खास विशेषता थी। अपने को जो बात समझ में नहीं आती उसे पूरी तरह समझने तक

नहीं छोड़ते थे। उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती उसे तन-मन और पूरी लगन एवं ईमानदारी से पूरा करने का प्रयास करते थे। बड़े-बड़े ग्रंथों को न पढ़ने के बावजूद मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के उजाले में वर्ग संघर्ष की राह पर सीना तानकर आगे की ओर बढ रहा था। उन्होंने लड़ाकू जोश से युवक-युवतियों को प्रोत्साहित कर उनमें संघर्ष की स्फूर्ति भरता था।

सरल व्यक्तित्व सीधा-साधा रहन-सहन उनका आदर्श था। फिजूल खर्च से वे बहुत छिड़ते थे। गरीबों के खून-पसीने से जुड़े एक-एक कौड़ी का नापतौल कर खर्च करने का वकालत करते थे।

गैर सर्वहारा विचारों एवं आदतों से उन्हें बहुत नफरत थी। अपने बचपन से ही वे तम्बाकू, दारू जैसी नशीले चीजों से दूर रहते थे।

अपनी जाति एवं भाषा पर उन्हें बड़ा अभिमान था। आदिवासियों की परायीकरण करने की शोषकों की साजिश को पहचानने में अशक्त स्कूली छात्रों को अपनी मातृभाषा छोड़ पराया भाषा बोलते हुए देख उनके मन में बहुत दुख होता था। माड़िया घर में पल बढ़कर माड़िया बोलने के लिए शर्माने वाले बच्चों को पहले डांटते फिर बाद में प्यार से उन्हें समझाते थे।

वर्ष 2002 में डिविजन स्तर पर पार्टी सदस्यों के लिए संचालित सैनिक प्रशिक्षण शिविर में उन्होंने भाग लिया। पुलिस की मारपीट से चूर-चूर हुआ उनका शरीर सहयोग न देने पर भी सीखने की दृढ़ संकल्प ने उन्हें सैनिक ग्राउण्ड में डटकर खड़ा किया। उसी वर्ष मार्च से शुरू दूसरा कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान मे सक्रियता से भाग लिया। नये दल सदस्यों एवं मिलीशिया कामरेडों को साथ लेकर भामरागड़ व लाहेरी पुलिस थानों पर फायरिंग किया। इनके अलावा अनेक प्रतिरोध कार्रवाईयों में सक्रियता से भाग लिया। वर्ष 2005 में कोसपूंडी टोला नलकूप के पास खाना बनाने वाले पुलिस वालों पर फायरिंग की घटना में पुलिस कुत्तों को खदेड़ते हुये ताड़गाँव कैम्प तक पीछा किया। उस घटना में एक 9 एमएम पिस्तौल, सिग्नल पेन गण सहित पुलिस के छः पिट्ठू उनके खाना बनाने का बर्तन, चावल वगैरह जप्त किये थे। 2003 सितंबर में मेडपल्ली गाँव के पास दल के मुकाम पर फायरिंग हुआ तो वहाँ भी उन्होंने हिम्मत के साथ मोर्चा संभाले और पुलिस का डटकर मुकाबला किये थे।

2005 नवंबर मे मल्लेमपोडूर गाँव के निकट लाहेरी पुलिस के साथ आमना-सामना हुआ, उस समय उन्होंने पलटन कमांडर की हैसियत से नेतृत्व प्रदान किया।

2005 में दोड़राज गाँव के नजदीक लाहेरी पुलिस थाने में जाने वाली राशन सामग्री जप्त करने की घटना उनके ही नेतृत्व में हुआ था।

2003 अगस्त से 2004 मार्च तक भामरागड़ स्थानीय सांगठनिक दस्ते एलओएस के उपकमांडर की जिम्मेदारी संभालते हुए सैनिक एवं सांगठनिक काम सीखने के लिए बड़ी लगन से परिश्रम किये थे। दमन के प्रतिकूल माहौल में हिम्मत के साथ संगठन बनाये थे। अपने को सौंपी गयी हर जिम्मेदारी को पूरा करने का उनमें विशेष क्रांतिकारी जिद एवं जोश था।

अगस्त 2005 से लेकर फरवरी 2006 तक वे पश्चिम बस्तर डिविजन नेशनल पार्क एरिया में जनता पर जारी सलवा जुडुम सैनिक फासीवादी हमले की प्रतिरोध में जुटे रहे। नगा पुलिस, सीआरपीएफ, सलवा जुडुम गुण्डों के हमलों से भयभीत जनता की हिम्मत बढ़ाते हुए प्रतिकूल परिस्थितियों में हिम्मत के साथ मोर्चा संभाले।

पार्टी में भर्ती होने के पहले ही वे शादी-शुदा थे, उनकी दो नन्ही बेटियाँ हैं। अपनी माँ भाई-बहन सभी को छोड़कर दबी कुचली कोया जाति की आकांक्षाओं को साकार करने की प्रतिज्ञा लेकर जंग-ए-मैदान में कूद पड़े।

कासमपल्ली गाँव मैदान-ए-जंग की उनकी आखिरी पड़ाव थी। दुश्मन से आमने-सामने की भीषण लड़ाई में उन्होंने अदम्य साहस का परिचय दिया था। अगुवा मोर्चा संभालकर उन्होंने दुश्मन को ललकारा था। पुलिस कुत्ते जब अपने पिट्ठू छोड़-छोड़कर भागने लगे तो उनको खदेड़ते हुए वे आगे दौड़ पड़े। पुलिस वालों के पिट्ठू, बर्तन, चावल वगैरह जब्त किये। जन मुक्ति छापामार सेना के योद्धाओं की इस वीरतापूर्ण प्रतिरोध को देखकर पुलिस वालों की पसीना छूटने लगा। आखिर में मरना नहीं तो आत्मसमर्पण करने की नौबत पुलिसवालों के सामने खड़ा हो गया। ऐन मौके पर तकनिकी लापरवाही के कारण अपने प्रिय साथी लाल्सु को गोली लगी तो वहीं पर शहीद हो गए। पीएलजीए के गुरिल्लाओं ने गोलियों की बौछार की परवाह किये बिना अपने कमांडर के लाश को लेकर पीछे हटे। क्रांतिकारी परंपराओं के साथ उनकी अंत्योष्टि हुई। पीएलजीए के योद्धाओं ने कतारों में खड़े होकर सैनिक श्रद्धांजलि दी। लाल सलाम कहते हुए सभी ने आँसू पोंछते हुए अपने प्रियतम कमांडर को विदाई दी।

कॉ लाल्सु की कुर्बानी व्यर्थ नहीं जायेगी। उनके खून से हजारों योद्धा जन्म लेंगे। उनके आधे-अधूरे सपनों को साकार करेंगे। मरते दम तक लड़ते हुए समाजवाद की मंजिल तक पहुँचने का उनके अरमानों को पूरा करने का शपथ लेंगे। तमाम वीर सपूतों को नत मस्तक हो क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

**माड़ डिवीजन**

## बहादुरी का दूसरा नाम कॉमरेड कुम्माल

कॉमरेड कुम्माल (कुहडामी गुड्डी) का जन्म ग्राम जप्पूर, विकासखण्ड भैरमगढ़, जिला बीजापुर में हुआ था. बचपन में ही उनके सिर पर से पिता का साया उठ चुका था. कॉमरेड कुम्माल का बचपन जनयुद्ध के खेलों से गुजरता-बढ़ता रहा. पहले बाल संगठन सदस्य और बाद में जुझारू जन मिलिशिया योद्धा के रूप में उनका विकास हुआ. पार्टी ने जब उन्हें पुकारा तो तुरन्त ही बिना किसी हिचकिचाहट के मिरतुल एलओएस का सदस्य बन गए. कुछ ही महीनों में उनका तबादला एलजीएस में कर दिया गया. बढ़ती फौजी फार्मेशनों को देखते हुए पार्टी ने उन्हें अश्टूबर 2004 में पीएलजीए की कम्पनी-1 में स्थानान्तरित किया. कंपनी पार्टी कमेटी ने कुछ ही दिनों के अन्दर उनका यह आंकलन लगाया कि वह देखने से भले ही भोलेभाले दिखता हो, पर दरअसल बेहद लड़ाकू, अनुशासित और मेहनती बोल्शेविक योद्धा हैं.

कॉमरेड कुम्माल को घुड्डी में ही आदिवासी जन गीतों, क्रान्तिकारी गीतों और शहीद गीतों की आदत पड़ी. ठीक से कपड़े पहनना भी नही आया होगा, तभी से तीर-धनुष हाथ में लेकर निशाना लगाना सीखा. जनता पर उनकी अटूट आस्था रही. संगठन की बात उनके लिए सर्वोपरि थी. 2005 से जारी सलवा जुडूम के पाशविक हमलों में उनका घर जलकर राख हो गया. उनके गांव के कई लोगों को जुडूम गुण्डों ने काटकर मार डाला. बाकी लोग अपनी जान बचाने के लिए जंगलों में रह रहे हैं. इस सबका दर्द कॉमरेड कुम्माल के सीने में दबा

हुआ था. दरअसल लुटेरे शासक वर्गों की साजिश यह थी कि इस तरह के पाशविक हत्याकाण्डों और अत्याचारों से जनता का मनोबल टूट जाएगा. और इन गांवों से जो पीएलजीए में भर्ती हुए हैं उनकी भी हिम्मत घट जाएगी. पर दुश्मन की इन तमाम कुटिल योजनाओं को नाकाम करते हुए सैकड़ों लोग पीएलजीए में भर्ती होने के लिए आगे आ रहे हैं.

कॉमरेड कुम्माल दुश्मन से लोहा लेने में हमेशा अग्रिम मोर्चे पर रहना पसन्द करते थे. भले ही कम्पनी में कॉमरेड कुम्माल नए थे, पर उन्होंने यह साबित कर दिया कि वीर योद्धाओं पर लिए नए-पुराने का कोई खास फर्क नहीं पड़ता. डौला कैम्प पर किए गए हमले में उन्होंने दीवार को ध्वस्त कर हमलावर टुकड़ियों के लिए आगे बढ़ने का रास्ता बनाने का काम किया. मुरकीनार कैम्प पर किए गए रेड में छत के ऊपर स्थित पुलिस के मोर्चे को ध्वस्त करने वाली टुकड़ी का सदस्य रहे. 2006 में चलाए गए कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान में उन्होंने भाग लिया था. बेनूर हाटबाजार में पुलिस के गश्ती दल पर हमला करके एक पुलिस जवान का सफाया कर उसकी एसएलआर छीन लाने की कार्रवाई में कॉमरेड कुम्माल भी थे. 16 जनवरी 2007 को झाराघाटी के पास किए गए एम्बुश में उन्होंने हमलावर टुकड़ी के सदस्य के रूप में भाग लिया. अपने टीम कमाण्डर के साथ फूर्ति के साथ आगे बढ़ते हुए दुश्मन का सफाया करने में सक्रिय भूमिका निभाई. जब वह दुश्मनों के पोजिशन का पता लगा रहा था तभी दुश्मन की एक गोली लगने से वह वहीं धराशाई हो गए.

कॉमरेड कुम्माल बोझा उठाने में माहिर थे. डौला रेड में जब कई कॉमरेड घायल हुए थे उन्हें उठाकर लाने में उन्होंने महत्वपूर्ण काम किया. प्रतिरोधी कार्रवाइयों के दौरान भारी-भरकम विस्फोटक या अन्य फौजी सामान उठाने के लिए वह मुस्कराते हुए आगे आते थे. झाराघाटी एम्बुश के लिए जाते समय भी वह अकेले ही तोप को उठा ले गए, जिसे आम तौर पर दो-दो साथी उठाया करते थे. दूसरे कॉमरेड उनका बोझा लेने के लिए आगे आने से वह हंसते हुए मना कर देते. 50 किलो तक का वजन वह आसानी से उठाकर चलते थे. कम बोलना और ज्यादा मेहनत करना उनकी खासियत थी.

अनुशासन के मामले में कॉमरेड कुम्माल एक अनुकरणीय पीएलजीए सैनिक थे. किसी भी कॉमरेड को कॉमरेड कुम्माल को लेकर कोई शिकायत नहीं होती थी. बीमारियों की परवाह किए बिना फौजी कसरत-कवायद में भाग लिया करते थे. कभी-कभी कमाण्डर खुद ही उनकी स्थिति को देखकर उन्हें आराम करने के लिए ग्राउण्ड से वापस भेजा करते थे. जब उनसे कोई गलती होती तो वह खुद कमाण्डर के पास आकर अपनी गलती के सम्बन्ध में बात रखते थे. इससे उन्हें ऐसा लगता था कि उनके दिल का बोझा हल्का हो गया.

झाराघाटी एम्बुश में पीएलीजए के सैनिकों ने दुश्मन के बलों को करारी मात दी. बाद में इस हमले में शहीद हुए कॉमरेड कुम्माल के पार्थिव शरीर को उठा ले गए. असपास के गांवों के सैकड़ों लोग इस जनयोद्धा का अन्तिम दर्शन करने आए थे. बाद में लाल झण्डों से कॉमरेड कुम्माल के पार्थिव शरीर को सजाया गया. उस मौके पर वहां उपस्थित पीएलजीए सैनिकों और जनता को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड्स ऊर्मिला (डौला एरिया कमेटी सचिव), कॉमरेड सम्पत (कम्पनी कमाण्डर), कॉमरेड रामू (माड़ डिवीजनल कमेटी सदस्य) और कॉमरेड अर्जुन (कम्पनी कमिस्सार) ने कॉमरेड कुम्माल की कुरबानी की प्रशंसा करते हुए उनकी क्रान्तिकारी जिन्दगी के कई पहलुओं से परिचय कराया. उन्होंने सभी का आह्वान किया कि कुम्माल की बहादुरी हमारी पीएलजीए के तमाम योद्धाओं के लिए अनुकरणीय है. कम्पनी कमाण्डर कॉमरेड ने कॉमरेड कुम्माल की चिता को अग्नि दी. 'कॉमरेड कुम्माल रहें' के नारों से सारा जंगल उठा.

## कॉमरेड गिन्नू, गोराल और कोपाल को लाल-लाल सलाम !

**कॉमरेड गिन्नू कलार (22) :** इन्द्रावती इलाके के भैरमगढ़ विकासखण्ड के धरमा गांव के एक गरीब कलार परिवार में कॉमरेड गिन्नू का जन्म हुआ था. सलवा जुडूम के आतंक के कारण इस गांव के लगभग सभी कलार और रावत परिवार गांव छोड़कर भाग गए. हालांकि गिन्नू का परिवार भी पहले यहां से भाग जा चुका था, पर वहां 'राहत' शिविरों में अत्याचारों और मुश्किलों को न सह पाने के कारण वापिस गांव आ गया. तबसे गिन्नू गांव के बाकी लोगों से मिलकर अपने खेत-खलिहानों के बचाव के लिए बारी-बारी से पहरेदारी किया करते थे. 11 नवम्बर 2006 को जब वह गाय चरा रहे थे तब गांव में आई पुलिस ने उन पर गोलियां चलाकर घायल कर दिया. बाद में उन्हें थाना ले गई. थाने में उन्हें बुरी यातनाएं देकर अगले दिन दोपहर गोली मारकर हत्या कर दी.

**कॉमरेड फागू ओयामी (40) :** इस कॉमरेड का जन्म ग्राम ऊतला में हुआ था. जबसे इन्द्रावती इलाके में क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरूआत हुई, तभी से कॉमरेड फागू पार्टी के पक्के समर्थक बन गए. किसान संगठन के नेतृत्व में चलने वाले हर कार्यक्रम में कॉमरेड फागू सक्रियता से भाग लिया करते थे. जून 2005 से शुरू हुए सलवा जुडूम के हमलों से डरकर जब लोग भाग जा रहे थे, तब कॉमरेड फागू ने जनता का हौसला बढ़ाकर उन्हें गांवों में ही रुकने के लिए बताया. कई बार उन्होंने गांव की जनता को जुडूम के हमलों से बचाया. 22 नवम्बर 2006 को जब वह अपनी नन्ही बच्ची को गोद में लेकर कहीं जा रहे थे, तभी गश्त पर आई पुलिस ने उन्हें घेरकर पकड़ लिया. उनकी नन्ही बच्ची को वहीं गिराकर उन पर गोलियां बरसाकर हत्या की. बाद में पुलिस उनकी लाश उठाकर ले गई ताकि उनकी हत्या का राज न खुल सके. यह खबर सुनने के बाद जनता ने कॉमरेड फागू को श्रद्धांजली पेश की और उनकी हत्या का बदला लेने का संकल्प लिया.

**कॉमरेड कोपाल (30) :** पोनाड़ गांव में कॉमरेड कोपाल का जन्म हुआ था. वह एक गरीब परिवार से थे. 1999 से वह पार्टी के सम्पर्क में थे. संगठन के हर कार्यक्रम में सक्रियता से भाग लिया करते थे. 2005 से जारी सलवा जुडूम अभियान के आतंक से विचलित न होकर वह उसे हराने के लिए जनता को गोलबन्द करते रहे. जुडूम के हमलों से गांव के बचाव के लिए कॉमरेड कोपाल के नेतृत्व में चारों तरफ पहरेदारी की जा रही थी.

22 नवम्बर 2006 को पुलिस इन्द्रावती नदी को पार कर आई. उसने कुल 15 गांवों में आतंक का ताण्डव मचाया. घर जलाए, जनता की अनमोल सम्पत्तियों को तहस-नहस किया, जो हाथ लगा उसकी पिटाई की, सुअर, बकरा, मुरगा जो मिला उसे मारकर खाया. पुलिस के हमलों से डरकर जो जनता जंगलों में शरण ले रही थी उन पर गोलियां बरसाईं. इसी प्रकार एक जगह की गई अंधाधुंध गोलीबारी में कॉमरेड कोपाल शहीद हो गए. अगले दिन उनकी लाश जनता को

मिल गई. जनता और पीएलजीए के सैनिकों ने क्रान्तिकारी परम्पराओं के साथ उनका अंतिम संस्कार किया.

## छिनारी अमर शहीदों को लाल-लाल सलाम !

खून के प्यासी रमन सरकार ने माड़ डिवीजन के छिनारी गांव में चार क्रान्तिकारियों की हत्या की. सीआरपीएफ, सीएएफ, जिला पुलिस और एसटीएफ के 700 से ज्यादा पुलिस बलों ने एक मुखबिर की सूचना पर 8 जनवरी 2007 की सुबह 5.30 बजे जन मिलिशिया के प्लटून को घेरकर अंधाधुंध गोलीबारी की. इस प्लटून के बहादुर सदस्यों ने दुश्मन के इस भयानक हमले से न डरते हुए डटकर मुकाबला किया और कमाण्डर कॉमरेड सुखलाल गावड़े, सेक्शन उप-कमाण्डर कॉमरेड कचरू यादव, प्लटून सदस्याएं कॉमरेड्स दसरी सलाम और रनाय गावड़े शहीद हुए. इस घटना में घायल कॉमरेड सोमारी को पुलिस बलों ने गिरफ्तार किया. इस घटना के बाद आसपास के गांवों की जनता ने पुलिस वालों से लाशें वापिस करने की मांग की. लेकिन पुलिस ने उनकी बात नहीं मानी. इसका विरोध करने पर जनता पर लाठियां बरसाईं और हवाई फायरिंग भी की. जनता को उनके बेटों और बेटियों की लाशें देने से भी इनकार कर उन्होंने यह साबित किया कि मानवाधिकारों की उन्हें कोई परवाह नहीं. इस घटना के बाद आसपास के गांवों की हजारों जनता अक्रोशित हुई क्योंकि मारे गए सभी कॉमरेड उन्हीं गांवों के थे. हत्यारी पुलिस पर बदला लेने की हर तरफ से मांग उठ रही थी. ठीक 8 दिन बाद झाराघाटी के पास पीएलजीए कम्पनी ने इन शहीदों के खून का शानदार बदला लेते हुए 7 पुलिस वालों का सफाया कर दिया और उनके सारे हथियार छीन लिए. गौरतलब छिनारी हत्याकाण्ड का मुख्य आरोपी हवलदार साहू, जिसके आतंक के पूरे इलाके में चर्चे हुआ करते थे, भी इस हमले में कुत्ते की मौत मारा गया. इस जबर्दस्त हमले से, खासकर इस जालिम की मौत से यहां के लोग बेहद खुश हुए. आइए, इस मुठभेड़ में शहीद हुए चारों कॉमरेडों की जीवनियों पर सरसरी नजर डाली जाए.

**कॉमरेड सुखलाल गावड़े (30) :** इस कॉमरेड का जन्म छिनारी गांव के दोबिनपारा में हुआ था. मां-बाप की वह आखिरी संतान थे. 7वीं कक्षा तक पढ़ाई कर चुके कॉमरेड सुखलाल क्रान्तिकारी राजनीति में उतर पड़े. 2004 से वह डीएकेएमएस का सदस्य बन गए. गांवों में आकर लोगों को आतंकित करने वाले और घरों को ध्वस्त करने वाले पुलिस बलों पर की गई कई हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयों में कॉमरेड सुखलाल ने भाग लिया. 2005 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई. 2006 में वह पेशेवर क्रान्तिकारी बन गए. पार्टी ने उन्हें जन मिलिशिया प्लटून का कमाण्डर नियुक्त किया. घर में माता-पिता और बीवी उनके इस फैसले से नाराज थे. फिर भी कॉमरेड सुखलाल ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि क्रान्ति के लिए लड़ना जनता के हित में, देश के हित में क्यों जरूरी है. कॉमरेड सुखलाल की शहादत छिनारी के आसपास के गांवों की शोषित जनता ने आंसू बहाए. उनके सपनों को साकार बनाने का संकल्प लिया.

**कॉमरेड कचरू यादव (27) :** इस कॉमरेड का जन्म छिनारी गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था. 1995 से, जब वह किशोरावस्था में थे, छापामार दस्ते के साथ उनका मेलजोल रहा. 2002 में वह डीएकेएमएस का सदस्य बन गए. 2004 में वह पार्टी सदस्य बन गए. पार्टी और जन संगठनों द्वारा चलाए गए कई राजनीतिक एवं आर्थिक संघर्षों में उन्होंने न सिर्फ भाग लिया, बल्कि आसपास के कई गांवों की जनता को गोलबन्द किया. विभिन्न मांगों को लेकर आयोजित रैलियों एवं प्रदर्शनों में उन्होंने उत्साहपूर्वक भाग लिया. बाद में उन्हें जन मिलिशिया प्लटून में सेक्शन उप-कमाण्डर बनाया गया. इस जिम्मेदारी में रहकर दुश्मन के साथ लड़ते हुए वह शहीद हो गए.

**कॉमरेड दसरी सलाम (17) :** इस कॉमरेड का जन्म छोटे फरसगांव के एक मध्यम किसान परिवार में हुआ था. दसरी ने 6वीं कक्षा तक पढ़ाई पूरी की. क्रान्तिकारी संस्कृति से प्रभावित होकर वह पार्टी के सम्पर्क में आई थी. माता-पिता की वह इकलौती बेटी थी. बाद में उन्होंने जन मिलिशिया प्लटून में भर्ती होकर अत्याचारी एवं बलात्कारी पुलिस बलों को दण्डित करने की ठान ली. इसी क्रम में मुखबिर की सूचना पर हुई मुठभेड़ में लड़ते-लड़ते शहीद हुई.

**कॉमरेड रनाय गावड़े (17) :** इस कॉमरेड का जन्म बेनूर इलाके के कोंदाहूर गांव में हुआ था. आदिवासी समाज में मौजूद पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों के खिलाफ लड़ने वह केएएमएस की सदस्या बन गई. बाद में फौजी कार्रवाइयों के प्रति उनके आकर्षण को देखते हुए स्थानीय पार्टी ने उन्हें जन मिलिशिया प्लटून के लिए चुन लिया. वह भी छिनारी मुठभेड़ में दुश्मन के साथ लोहा लेते हुए शहीद हो गई.

**उत्तर डिवीजन**

## कोरानार झूठी मुठभेड़ में मारे गए कॉमरेड मंगलू और सनवारू को लाल सलाम !

21 अक्टूबर 2006 की सुबह 5 बजे उत्तर बस्तर डिवीजन के धनौरा थाने से निकले सीआरपीएफ और जिला पुलिस के करीब 70 बलों ने दरोगा लम्बोदर पटेल की अगुवाई में और मुखबिर कमल यादव की सक्रिय मदद से कोरनार गांव का घेराव किया. चेतना नाट्य मंच का नेता कॉमरेड सनवारू और डीएकेएमएस सदस्य मंगलू को उन्होंने तब पकड़ लिया जब वे अपने-अपने घरों में सो रहे थे. उन्हें तरह-तरह की यातनाएं देकर बाद में बगल के जंगल में ले जाकर एक पेड़ में बांधकर गोली मार दी. पुलिस गांव के एक ट्रैक्टर में दोनों की लाशें डालकर थाना ले गई. साथ ही मंगलू के छोटे भाई को भी पुलिस पकड़कर ले गई जिसे बाद में झूठे केस में फंसाकर जेल में रखा गया. कोरानार गांव की जनता ने तुरन्त ही थाने के पास जाकर अपने ग्रामवासियों की लाशें वापिस देने की मांग की. लेकिन पुलिस ने लाशें देने से इनकार कर अपनी पाशविकता का परिचय दिया. इस इलाके की समूची जनता ने इस झूठी मुठभेड़ की जमकर निंदा की.

## जन मिलिशिया कमाण्डर कॉमरेड मणिराम को लाल-लाल जुहार !

21 सितम्बर 2006 को पार्टी का स्थापना दिवस मनाने हेतु जन मिलिशिया के 20 कॉमरेडों की प्लटून गांव-गांव घूम रही थी. ग्राम उचाड़ी में जब यह टोली गई थी तब वहां के एक मुखबिर ने पुलिस को इत्तला दिया था. एड़का कैम्प में स्थित पुलिस वालों ने तुरन्त ही मिलिशिया प्लटून को घेरकर गोलीबारी शुरू की. इस गोलीबारी में ग्राम सुरक्षा दस्ता कमाण्डर कॉमरेड मणिराम शहीद हुए. बाद में उनके गांव में जनता ने कॉमरेड मणिराम की यादगार में लकड़ी से एक स्तूप बनाकर एक सभा में उसका अनावरण किया. कॉमरेड मणिराम के अधूरे सपनों को पूरा करने का प्रण किया. ✶

# कॉमरेड सोमजी (भगवान कुड़िमेत) की शानदार शहादत को बन्द मुठ्ठियों का सलाम !

19 नवम्बर 2005 को उत्तर तेलंगाना के आदिलाबाद के जंगलों में आन्ध्र के ग्रे-हाउण्ड्स पुलिस के साथ हुई एक जबर्दस्त गोलीबारी में कॉमरेड सोमजी बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हुए. कॉमरेड सोमजी का जन्म गड़चिरोली डिवीजन के अहेरी तहसील के कण्यावंचा गांव के एक गरीब परिवार में हुआ था. माता-पिता ने उनका नाम भगवान रखा था, लेकिन सभी के लिए वह 'बग्गू' थे. बचपन से ही क्रान्तिकारी राजनीति के प्रभाव में रहने वाले कॉमरेड सोमजी जवानी में कदम रखते ही डीकेएमएस का सदस्य बन गए. कुछ ही दिनों में वह गांव का अध्यक्ष बन गए. 1997 में सम्पन्न डीकेएमएस के बांडे रेंज अधिवेशन में उन्हें रेंज कमेटी के लिए चुन लिया गया. रेंज स्तर पर जनता को कई आर्थिक व राजनीतिक संघर्षों में गोलबन्द करने में कॉमरेड सोमजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा.

डीकेएमएस में रहते हुए ही उन्होंने अपने गांव में जन मिलिशिया निर्माण की पहल की. गांव में गठित सुरक्षा दस्ता के वह कमाण्डर बन गए. पुलिस के दलालों का सफाया करते हुए सामन्ती मुखियाओं पर अंकुश लगाते हुए 'संगठन के ही सभी अधिकार' के आधार पर जनता की राजसत्ता की स्थापना के लिए उन्होंने प्रयास किया. उसी दौरान पार्टी ने उन्हें पार्टी सदस्यता दी. वर्ष 2000 में वह पीएलजीए के छापामार दस्ते में भर्ती हो गए. दस्ता में आने के बाद उन्हें एसजेडसी के एक सदस्य कॉमरेड का सुरक्षा गार्ड नियुक्त किया गया करीब डेढ़ साल तक उन्होंने गार्ड की जिम्मेदारी अत्यंत निष्ठा के साथ पूरी की. अगस्त 2002 में उन्हें एक्शन टीम सदस्य बनाया गया. बाद में 2003 में गठित नए प्लटून में उन्हें सेक्शन उप-कमाण्डर चुना गया. जनवरी 2002 में उन्होंने डिवीजन स्तर पर आयोजित सैन्य प्रशिक्षण कैम्प में छात्र के रूप में भाग लिया. जनवरी 2004 में उन्हें बूबी ट्रैपों के विशेष प्रशिक्षण के लिए चुन लिया गया. 2005 में कमाण्डरों के लिए आयोजित विशेष फौजी प्रशिक्षण कैम्प में भी उन्हें छात्र चुना गया था. सितम्बर 2005 में पीएलजीए के रंगरूटों के लिए आयोजित फौजी प्रशिक्षण कैम्प को उन्होंने प्रशिक्षक बनकर चलाया. इस दौरान उन्होंने प्रशिक्षुओं का विश्वास जीत लिया. फौजी मामलों में एक दक्ष योद्धा के रूप में उभरने के दौरान ही उनके शहीद होने से गड़चिरोली जिला आन्दोलन के लिए काफी नुकसान हुआ. मार्च 2004 में जब जिम्मलागट्टा इलाके में नए एलओएस का गठन करने का फैसला हुआ था, तब उसमें सदस्यों का चयन करते समय सबसे पहले कॉमरेड सोमजी का ही नाम आया. पार्टी की जरूरतों के मुताबिक कई बार उन्हें इधर से उधर, उधर से इधर स्थानान्तरित करना पड़ा. इसके बावजूद भी उन्होंने नेतृत्वकारी कॉमरेडों का बढ़िया साथ दिया. जुलाई 2004 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति दी गई. बाद में दुश्मन का प्रतिरोध करने के लिए पार्टी ने उन्हें उत्तर तेलंगाना भेजने का फैसला लिया तो उन्होंने बिना किसी संकोच के सहर्ष स्वीकार किया. पार्टी का फैसला उनके लिए सर्वोपरि था. इस बीच वह एक महिला कॉमरेड से शादी करने का प्रस्ताव भी पार्टी के सामने रखा था. पार्टी को उनका प्रस्ताव मंजूर था. लेकिन दुश्मन का प्रतिरोध करने के कार्यभार को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए वह अपनी होने वाली जीवन संगिनी को छोड़ आदिलाबाद जिले के लिए रवाना हो गए. वहां दुश्मन के साथ हुई लड़ाई ने उन्हें हमसे हमेशा के लिए छीन लिया.

ठीक 25 बरस पहले, यानि 2 नवम्बर 1980 को आन्ध्रप्रदेश के आदिलाबाद जिले से आए कॉमरेड पेद्दि शंकर ने महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले में अपना खून बहाया था. अपने खून से उन्होंने क्रान्ति के जो बीज बोए थे, उसी की फसलें हैं कॉमरेड सोमजी जैसे नौजवान कॉमरेड. इत्तेफाक से, गड़चिरोली से आदिलाबाद जाने वाले कॉमरेड सोमजी ने इसी नवम्बर महीने की 19 तारीख को कॉमरेड पेद्दि शंकर की बलिदानी विरासत को ऊंचा उठाए रखते हुए क्रान्ति के लिए अपना खून बहाया. इस नौजवान की शौर्यपूर्ण कुरबानी जरूर रंग लाएगी - लाखों-करोड़ों क्रान्तिकारी जनता उनके अधूरे मकसद को जरूर पूरा करेगी. ★

## एनएसजी कमाण्डो बैरंग लौटे !!!

एनएमडीसी के बारूद गोदाम और सीआईएसएफ कैम्प पर पीएलजीए और कोया भूमकाल मिलिशिया के कामयाब हमले और दरभागुड़ा में सलवा जुडूम गुण्डावाहिनी के 26 सदस्यों के मारे जाने के बाद केन्द्र सरकार ने आनन-फानन में एनएसजी कमाण्डो भेज दिए. लगभग 350 कमाण्डो विशेष विमानों में रायपुर पहुंच कर बस्तर की ओर रवाना हो गए. अखबारों में इनको लेकर तरह-तरह के चर्चाओं के बाजार गर्म हो गए. बताया गया था कि वे हेलिकाप्टर से सीधा नक्सली कैम्पों में उतरकर नक्सलवादियों को मार गिराएंगे. लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ. दरअसल सरकारों के साथ दिक्कत यह है कि वे कहने के लिए तो कहती हैं कि माओवादी आन्दोलन एक राजनीतिक-आर्थिक मसला है. पर व्यवहार में वे हमेशा इसे कानून और व्यवस्था की समस्या के रूप में ही देखती हैं और सैन्य तौर-तरीकों से ही इससे निपटने की कोशिश करते हैं. लगभग डेढ़ महीने तक तैनात रहने के बावजूद एनएसजी कमाण्डो के हाथ कुछ न लगा. इसके पहले, बहुचर्चित जहानाबाद जेल ब्रेक के बाद भी केन्द्र सरकार ने बिहार में एनएसजी कमाण्डो भेजे थे. उसका भी नतीजा सिफर ही रहा. कारण साफ है - माओवादी आन्दोलन एक व्यापक जन आन्दोलन हैं, मुट्ठी भर लोगों का आतंकवादी आन्दोलन नहीं, जिन्हें कमाण्डो सीधा उतरकर खत्म कर सकें. जमीनी सच्चाइयों से दूर दिल्ली या रायपुर में बैठकर नीति-निर्धारण करने वालों ने इस घोर शर्मिंदगी से बचने के लिए बस्तर में एनएसजी की तैनाती को 'कामयाब' बताया!? ★

# वंगेतोरी जंगलों में महाराष्ट्र-छत्तीसगढ़ पुलिस की संयुक्त झूठी मुठभेड़ !
# पीएलजीए के सेक्शन कमाण्डर कॉमरेड आयतू समेत दो निर्दोष युवकों सुब्बल कोवासी और रैनू गुण्ड्रम की नृशंस हत्या

गड़चिरोली डिवीजन के पलटन-14 के सेक्शन कमाण्डर कॉमरेड आयतू 16 दिसम्बर 2006 को किसी काम से सिविल ड्रेस में बिना हथियार के जा रहे थे. रास्ते में महाराष्ट्र पुलिस के गड़चिरोली कमाण्डो बैच ने उन्हें पकड़ लिया और 5 दिन तक उन्हें भीषण यातना देती रही ताकि पार्टी का भेद जान सके. लेकिन कॉमरेड आयतू ने उनके सामने पार्टी का कोई भेद नहीं खोला. थक-हारकर आखिर पुलिस ने 22 दिसम्बर 2006 को उन्हें मार डाला और झूठी मुठभेड़ की कहानी अखबारों में छपवा दी. मुठभेड़ को नाटकीय रंग देने के लिए गड़चिरोली जिले के सीमावर्ती छत्तीसगढ़ राज्य के माड़ पखांजूर गांव के 2 नव युवकों सुब्बल कोवाली और रैनू गुण्ड्रम को 22 दिसम्बर को पकड़कर कॉमरेड आयतू के साथ ही गोली मारकर हत्या कर दी.

सुब्बल कोवासी और रैनू गुण्ड्रम की गिरफ्तारी और फिर उनकी हत्या किए जाने का घटनाक्रम इस प्रकार है. माड़ पखांजूर गांव के पटेल जो अत्यंत ही बूढ़े हो चले थे. उनकी मौत हो जाने पर आदिवासी रीति-रिवाज के अनुसार एक उत्सव जैसा मनाया गया. जिसमें गांववासी किराए से टीवी और जेनरेटर लाकर फिल्म देखे. सबेरे टीवी और जेनरेटर वापस करने जा रहे थे कि रास्ते में महाराष्ट्र पुलिस और छत्तीसगढ़ पुलिस के संयुक्त गश्ती दल ने उन्हें पकड़ लिया. और फिर उन्हें कॉ. आयतू के साथ ही गोली मार दी. समाचार पत्र में वही घिसी-पिटी पुलिसिया कहानी फोटो सहित छपवा दी कि पुलिस और नक्सलवादियों के बीच मुठभेड़ में तीन नक्सलवादी मारे गए. समाचार पत्रों में फोटो और लाश देखकर ग्रामवासी आक्रोश से भर गए. गड़चिरोली जिले के 70 और छत्तीसगढ़ के 60 गांवों की करीब 20 हजार जनता एक आम सभा कर अपना विरोध प्रकट किया. एक दिन के लिए बांदे, पखंजूर बन्द का ऐलान किया जो शत प्रतिशत सफल रहा. बांदे थाने का दिन भर घेराव कर दिया. जनवरी 2006 से दिसम्बर 2006 तक महाराष्ट्र पुलिस द्वारा लगातार जारी झूठी मुठभेड़ों के प्रति आदिवासी किसानों के आक्रोश की यह चरम परिणति थी. पुलिस और प्रशासन ने भी जनता का इतना बड़ा जमावड़ा होगा, इसकी कल्पना तक नहीं की थी. आइए, इस झूठी मुठभेड़ में शहीद हुए पीएलजीए के सेक्शन कमाण्डर कॉ. आयतू की जीवनी का संक्षिप्त परिचय लें.

कॉमरेड आयतू (चमरू)

## पीएलजीए के साहसिक कमांडर कॉमरेड आयतू

हमारे प्रिय साथी, पीएलजीए के बहादुर कमांडर, पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ता, अटल संकल्प से अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित आदर्श कम्युनिस्ट, दुश्मन की यातनाओं से विचलित न होकर जान दांव पर लगाकर बलिदानों का आदर्श विरासत छोड़ने वाले कॉ. आयतू की शहादत 22 दिसम्बर 2006 के दिन वंगैतुरी के निकट बर्बर महाराष्ट्र पुलिस प्रशासन द्वारा की गई फर्जी मुठभेड़ में हुई.

कॉ. आयतू को माता-पिता ने चमरु नाम दिया था. उनका जन्म गांव बोडमेट्टा के गोवारी समुदाय में हुआ. उनकी माता कटकी गोटा और पिता कटु गोटा गरीब किसान थे. कॉ. आयतू का नाबालिग उम्र में ही शादी हुआ था. कुपोषण के कारण उनकी मासूम बेटी की मृत्यु हो गई. उनका पार्टी में आने के बाद पत्नी घर छोड़कर चली गई. गरीब गृहस्थी का आशा का किरण अपने मेहनती बेटे की बिदाई ने माता-पिता को बहुत दुख पहुंचाया. एक माता-पिता नहीं हजारों-लाखों गरीबों का दुख-दर्द एवं गरीबी का कारण इस शोषणकारी व्यवस्था को खत्म करने का संकल्प लिया. उसी संकल्प ने अन्तिम सांस तक उन्हें संघर्ष के पथ पर अडिग रखा.

कॉ. आयतू पहले बाल संगठन बाद में डीएकेएमएस के सदस्य बने. वर्ष 2000 में वे ग्राम रक्षा दल का सदस्य बने. बचपन से ही अनके मन में छापामार योद्धा बनने की ललक थी. कई बार पार्टी के सामने अपनी इच्छा जाहिर किया भी था. घर में रहते समय गांव से भागकर कस्बों में जा बसने वाले मुखबीरों की सफाया के लिए गठित विशेष कार्य दस्ता के सदस्य रहे. घर में काम करते समय वे उम्मीदवार पार्टी सदस्य बने. दिसम्बर 2002 की आखिर में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बने. तब से लेकर 2004 मार्च तक गट्टा सांगठनिक दस्ता के सदस्य रहते हुए राजनीतिक, सैनिक विषय सीखने का प्रयास किया. जन मानस को झुलसाने वाले दमन के बीच जनता से आत्मीय सम्बन्ध बनाकर उनकी हिम्मत बढ़ाते हुए कई राजनीतिक आन्दोलनों व सैनिक कार्रवाईयों में उन्हें गोलबन्द करने का अथक प्रयास किया. वह जहां कहीं भी रहता सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को निरंतर जारी रखता था. 2004 जनवरी में आयोजित सैनिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेकर अपनी सैनिक कुशलता बढ़ाया. अकेला रहने से भी कसरत-ड्रिल कभी नहीं छोड़ते थे. अपने साथियों को भी प्रोत्साहन देते हुए सैनिक मैदान में उतरवाते थे. 2004 मार्च में गठित स्थानीय छापामार दस्ते का सदस्य चुने गए. 2003 से लेकर 2006 तक तमाम टीसीओसी अभियानों में भाग लिया. पुलिस के साथ अचानक हुई मुठभेड़ हो या अपना सुनियोजित एम्बुश हो - सैनिक कार्रवाईयों में मोर्चे पर डटकर खड़े रहते थे.

अहेरी इलाके में रहते समय वेड़मपल्ली गांव के मुकाम पर कमाण्डो पुलिस ने हमला किया. उस समय कॉ. आयतू संतरी पर तैनात थे. संतरी मदद में रहने वाले साथी को कमांडर के पास भेजकर सामंजस्य बना लिया. एक घंटे तक वहीं पर डटकर प्रतिरोध करते रहे. पीएलजीए के इस वीरतापूर्ण प्रतिरोध ने कमाण्डो पुलिस बलों का पैर उखाड़ दिया. कमाण्डो बलों को खदेड़ने की घटना ने अहेरी संघर्षरत जनता के दिलों को बेहद खुशी से भर दिया.

कॉ. आयतू की बढ़ती राजनीतिक चेतना को देखकर डिवीजन पार्टी कमेटी ने उन्हें एसी स्तर दिया. नवगठित 14वीं पलटन के सेक्शन डिप्यूटी की जिम्मेदारी सम्भाले. अनुशासन के मामले में उन्हें कभी किसी को न कुछ बोलना पड़ा और न ही उन्हें समझाना पड़ा. अनुशासन के मामले में

*(शेष पृष्ठ 42 में ....)*

**गड़चिरोली**

# झूठी मुठभेड़ों से लोगों को तो मार सकते हो, पर उनके क्रान्तिकारी विचारों को नहीं !

गड़चिरोली जिले में एक तरफ बढ़ता क्रान्तिकारी आन्दोलन है तो दूसरी तरफ जिले में बढ़ता भयानक पुलिस दमन. गड़चिरोली की शोषित जनता के उत्तम सपूतों ने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की हथियारबन्द सेना – पीएलजीए में भारी पैमाने पर भर्ती होकर पुलिस को कई बार शर्मनाक पराजय का शिकार बनाया. दर्जनों पुलिस कमाण्डो और एसआरपी बलों को कुत्ते की मौत मारा है. अपनी बार-बार की हार की शर्म व झेंप को मिटाने के लिए गड़चिरोली पुलिस ने बड़ा ही घिनौना तरीका अपनाया है. जनवरी 2006 से अक्टूबर 2006 तक कुल 8 मुठभेड़ों में 17 आदिवासी जनता को पुलिस ने गांव से पकड़कर जंगल में ले जाकर गोली मारकर हत्या कर दी है. और सभी समाचार पत्रों में यह खबर छपवाई कि पुलिस व नक्सलवादियों के बीच हुई मुठभेड़ो की अलग-अलग घटनाओं में कुल 17 खूंखार नक्सलवादी मारे गए. और तो और कॉमरेड्स दिवाकर, ज्योति, सावजी, केदार, किशोर, चैनू, पाण्डू और कुछ अज्ञात नक्सलियों के मारे जाने का दावा भी पुलिस ने कर डाला है जबकि ये सभी कॉमरेड जीवित हैं और अपने-अपने दस्तों में काम कर रहे हैं. गड़चिरोली की जनता इन्हें रोज देख रही है. फिर सवाल उठता है कि गड़चिरोली पुलिस ने किनकी हत्या कर इन कॉमरेडों के ऊपर रखे इनाम की राशि हड़प ली है? अलग-अलग झूठी मुठभेड़ों में जिन 17 लोगों की हत्या पुलिस द्वारा की गई है उनमें कुछ के बारे में हमें जो जानकारी मिली है उसे यहां दे रहे हैं. लेकिन कुछ लोगों के बारे में यह पता नहीं चल रहा है कि उन्हें पुलिस ने कहां से पकड़ लाकर मार डाला है.

पुलिस दावा कर रही है कि 1 जनवरी 2006 को कनेली गांव के जंगलों में फायरिंग हुई है जिसमें 3 नक्सलवादियों की लाशें बरामद हुई हैं. इसमें ग्राम परवीडीह, तहसील मोहला, जिला राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ का निवासी अर्जुन हिड़ामी, जिसे गड़चिरोली पुलिस 30 दिसम्बर 2005 को उसके गांव से पकड़कर ले गई थी. दूसरी लाश अहेरी तहसील के बिडारगट गांव के निवासी बिच्चंग वेलादी की थी जिसे पुलिस उसके घर से गिरफ्तार कर ले गई थी. तीसरा व्यक्ति का पता अभी तक नहीं चला. 9 मार्च को पौरेली गांव, धनौरा तहसील, गड़चिरोली जिला के निवासी रामसाय जांगी की कमाण्डो पुलिस ने उनके गांव में गोली मारकर हत्या कर दी. जून 2006 को रामपुर जो मुरुमगांव थाना के पास का गांव है वहां गूरेकस्सा के धनसिंह गावड़े और बटमलांज गांव के रमेश पुड़ो को जो हिरंगे गांव में शादी में आए थे, पकड़ ले जाकर मार डाला. 2 अगस्त 2006 को वेड़मपल्ली और जामड़ीजोरा के जंगल में फुलबोड़ी में घर जवांई आए सोमजी मड़ावी, जामड़ीजोरा के एक ग्रामीण तथा एक अज्ञात ग्रामीण की हत्या कर दी. 22 अगस्त 2006 को एटापल्ली तहसील के सौगांव के जंगल में चादगांव एरिया के मरकागांव के देवराव धुरवे तथा दो अज्ञात लोगों की पुलिस द्वारा हत्या कर दी गई. पेंड्री थाने से लगे हुए झाड़पापड़ा के जंगल में जो छत्तीसगढ़ की सीमा से लगा हुआ है. वहां पर पुलिस ने 4 ग्रामीणों की हत्या कर दी. इनमें से सिरपुर से मनेश आतला, मंगतु पद्दा तथा 2 अज्ञात ग्रामीण शामिल हैं. धनौरा के पारा चुड़ियाल जंगलों में 2 अज्ञात ग्रामीणों की पुलिस ने हत्या कर दी. गूरेकस्सा के नांगसू गावड़े को रानकट्टा गांव से पुलिस पकड़कर ले गई तबसे वे लापता हैं. सितम्बर 2006 धनोरा तहसील के चुड़ियाल गांव के जंगल में 2 आदिवासी किसानों की पुलिस ने गोली मारकर हत्या कर दी. मनेश आतला, मंगतू पद्दा ग्राम सिरपुर, थाना झारावंडी, तह. एटापल्ली के साथ 2 अन्य ग्रामीणों को पुलिस ने एटापल्ली एरिया के झारापापड़ा गांव के जंगलों में ले जाकर मार डाला. मेलघाट की काली पहाड़ियों में दामा वेलादी, ग्राम बिज्जुरपल्ली, थाना रोमपल्ली, किष्टा गावड़े ग्राम मुड़ावाही, थाना वेंकटापुरम के साथ एक और आदिवासी किसान की गोली मार कर पुलिस द्वारा हत्या कर दी गई. यह झूठी मुठभेड़ पुलिस द्वारा 24 नवम्बर को की गई थी. जिब्बा जोहाय, ग्राम कल्लेम, एटापल्ली तहसील, सत्तू महार ग्राम चेल्लेवाड़ा, थाना रेपनपल्ली, मादा वेलादी ग्राम बेज्जूरपल्ली, अहेरी तहसील के निवासी की हत्या इन्हीं किन्हीं झूठी मुठभेड़ों में पुलिस ने हत्या कर दी.

उपरोक्त सारी मुठभेड़ों को पुलिस नक्सलवादियों के साथ मुठभेड़ की घटना तथा इसमें मारे गए लोगों को नक्सलवादी बता रही है. पर सच्चाई यह है कि इन स्थानों में नक्सलवादी दस्ते से उक्त समय में कोई मुठभेड़ हुई ही नहीं. इनमें मारे लोग साधारण ग्रामीण हैं जिन्हें उनके घरों से पकड़ कर पुलिस ने जंगलों में ले जाकर हत्या कर दी. ये सभी फर्जी मुठभेड़ें हैं. इसे एरिया के गांवों की जनता अच्छी तरह जानती है. इन फर्जी मुठभेड़ों की अधिकांश घटनाओं में कमाण्डो दल का दरोगा मुन्ना ठाकुर और एसपी शिरीष जैन का सीधा हाथ है.

हम सभी मानवाधिकार संगठनों, सामाजिक व राजनीतिक संगठनों, जनवाद प्रिय लोगों, बुद्धिजीवियों और सांस्कृतिक कर्मियों से अपील करते हैं कि इन झूठी मुठभेड़ों की जांच-पड़ताल करें और दोषी पुलिस गुण्डों को सजा देने के लिए आवाज उठाएं. पुलिस द्वारा किए जा रहे नरसंहारों पर रोक लगाने की कोशिश करें. साथ ही ग्रामीण जनता पुलिस द्वारा गिरफ्तारी या पूछताछ के लिए थाने ले जाने का विरोध करे. तथा झूठी मुठभेड़ के नाम पर आम आदिवासी जनता की पुलिस द्वारा की जा रही हत्या के खिलाफ सशक्त संघर्ष छेड़ दें. ✶

---

*(.... पृष्ठ 41 का शेष )*

स्वशासित थे. बहुत कम बोलते थे, अपने साथियों के साथ मिलजुलकर रहते थे.

सैनिक मामलों में उनकी क्षमताओं को देखते हुए उन्हें विशेष कार्य टीम के लिए चुन लिया तो वे तैयार हुए. 'पार्टी जो भी जिम्मेदारी देगी उसे पूरा करने के लिए मैं तैयार हूँ.' कहते हुए नई जिम्मेदारी को तहेदिल से स्वीकार लिया. उसी सिलसिले में विशेष काम पर जाते समय पुलिस के शिकंजे में फंसे. अपनी जान बचाने के लिए या मार से बचने के लिए यदि जरा सा भी मुंह खोले होते तो पार्टी को भारी नुकसान उठाना पड़ता था. पुलिस ने उनके शरीर को चाकू से चीरा, हाथ-पैर तोड़-मरोड़ दिया. पूरी यातनाओं को झेलकर भी पार्टी हित-जनहित को सबसे ऊपर रखकर एक उच्च कम्युनिस्ट आदर्श स्थापित किया. कॉ. आयतू के आदर्शों को ऊपर उठायेंगे. उनके अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए मरते दम तक लड़ने का संकल्प लेंगे. जनयुद्ध को तेज करके खूनी व नरहंतक पुलिस कुत्तों को मात देंगे. ✶

# दण्डकारण्य जनता का प्यारा नेता, स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य

# कॉमरेड विकास (श्रीनिवास) को भूमकाल जुहार !

16 सितम्बर 2006 का दिन दण्डकारण्य के क्रान्तिकारी अवाम के लिए शोक का दिन था. उस दिन दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य और गड़चिरोली डिवीजनल कमेटी सचिव कॉमरेड विकास दुश्मन की क्रूरतम यातनाओं को झेलकर शहादत को प्राप्त किया. पार्टी के एक महत्वपूर्ण काम पर वह एक अन्य साथी के साथ मानपुर डिवीजन के सोनदाई गांव से मोटारसायकिल पर जा रहे थे. एक मुखबिर की सूचना पर कांकेर जिला एसपी प्रदीप गुप्ता के नेतृत्व में आए 60 से ज्यादा पुलिस बलों ने उन्हें घेरकर पकड़ लिया. एक साथी तो किसी तरह उनके हाथों से बचकर भाग निकला लेकिन कॉमरेड विकास को ऐसा मौका नहीं मिला. सुबह 7.30 बजे को उन्हें पकड़कर शाम के 4 बजे तक वहीं जंगल में बर्बरतापूर्ण यातनाओं का शिकार बनाया गया. जब उन्होंने पार्टी की एक भी गोपनीय बात उगलने से साफ इनकार कर दिया, हत्यारी पुलिस ने थक-हारकर कायरों की तरह उन्हें गोलियों से भून डाला. बाद में हमेशा की तरह उन्होंने मुठभेड़ की कहानी गढ़ दी.

45 वर्षीय कॉमरेड विकास का जन्म तेलंगाना के वरंगल जिले के जनगांव तहसील के ग्राम निडिगोंडा में हुआ था. वह एक गरीब मेहनतकश परिवार से थे. उनका असली नाम ऊरड़ी श्रीनिवास था. उनका इलाका 1940 के दशक में ऐतिहासिक तेलंगाना सशस्त्र किसान संघर्ष में एक मजबूत गढ़ था. अपने बचपन में वह तेलंगाना संघर्ष की कहानियां सुना करते थे. जब वह बड़े हो गए, तब तक उभर चुके करीमनगर-आदिलाबाद किसान संघर्षों का प्रभाव पड़ा था. बगल के गांव रघुनाथपल्ली में 10वीं तक पढ़ने के बाद उन्होंने जनगांव के जूनियर कॉलेज में इंटरमीडियट (12वीं) की पढ़ाई पूरी की. बाद में नौकरी की तलाश में कॉमरेड श्रीनिवास जब हैदराबाद शहर गए तो वहां अपने दोस्त कॉमरेड प्रसादराव के जरिए क्रान्तिकारी राजनीति के प्रत्यक्ष संपर्क में आ गए. (कॉमरेड प्रसादराव उन्हीं के गांव के थे जो हैदराबाद में 'रैडिकल छात्र संगठन' का नेता थे. बाद में वह भी पूर्वी गोदवरी जिले में एक दस्ता कमाण्डर के रूप में आदिवासियों के बीच काम करते हुए 1989 में हुई एक मुठभेड़ में शहीद हो गए.) उनके साथ मिलकर उन्होंने 1985 में हैदराबाद के निजाम कॉलेज ग्राउण्ड्स में आयोजित 'अखिल भारतीय क्रान्तिकारी छात्र संघ' (एआईआरएसएफ) के स्थापना-अधिवेशन में भाग लिया, जो उनकी जिन्दगी में एक अहम मोड़ साबित हुआ. उसके बाद उन्होंने तय कर लिया कि भारत की नव जनवादी क्रान्ति के लिए अपना जीवन समर्पित किया जाए. पार्टी के सम्पर्क में आते ही उन्हें दण्डकारण्य जाकर आदिवासियों के बीच काम करने को कहा गया था, जिसे उन्होंने खुशी से कबूल किया.

1980 में दण्डकारण्य के गड़चिरोली जिले (महाराष्ट्र) में कॉमरेड पेद्दी शंकर के खून से क्रान्ति के बीज बोए गए. 1985 तक संघर्ष सिरोंचा से होते हुए अहेरी और एटापल्ली तहसीलों तक फैल चुका था. 1984 में कमलापुर में प्रस्तावित आदिवासी किसान संगठन के अधिवेशन को महाराष्ट्र सरकार ने बन्दूक की नोक पर भंग कर दिया था. सैकड़ों किसानों एवं नौजवानों को गिरफ्तार किया था. अहेरी का राजा विश्वेश्वरराव क्रान्तिकारी आन्दोलन के खिलाफ जहर उगल रहा था. इसके बावजूद भी 'कमलापुर अधिवेशन को रोककर क्रान्ति को रोक नहीं सकते' कहते हुए क्रान्तिकारियों ने संघर्ष को दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ाया. उसी समय कॉमरेड श्रीनिवास ने 'शिवन्ना' के नाम से दस्ता सदस्य के रूप में जनता के बीच काम शुरू किया.

जंगल, जंगल के आदिवासी, आदिवासियों की भाषा, उनकी संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन सब कुछ शिवन्ना के लिए नए-नए थे. एक तरफ सरकारी दमन अभियान, दूसरी तरफ राजा विश्वेश्वरराव के दुष्प्रचार अभियान. इन सबके बीच भी शिवन्ना ने शुरूआती समस्याओं का सामना करते हुए सब कुछ सीखना शुरू किया. दमन के बीच भी जनता के साथ सम्बन्ध कैसे कायम किए जाने चाहिए, इसमें उन्होंने आगे चलकर महारथ हासिल की. उसी समय गड़चिरोली के डिवीजनल कमेटी सदस्य पोरेड्डी वेंकटरेड्डी ने पार्टी की लाइन को वामपंथी कहते हुए पार्टी के भीतर संकट की स्थिति पैदा की थी. लेकिन इस संकट में भी कॉमरेड शिवन्ना सही क्रान्तिकारी लाइन को मजबूती से थामे रखा. उनके साथ आने वाले कुछ कॉमरेड जंगल में छापामार जिन्दगी की मुश्किलों को देखकर वापस चले गए, पर कॉमरेड शिवन्ना टस से मस नहीं हुए.

पहले से दुबले-पतले रहे कॉमरेड शिवन्ना 1987 में तपेदिक का शिकार बने थे. सही भोजन न मिलने तथा छापामार जिन्दगी की कठिन परिस्थितियों के कारण वह बीमार पड़ गए थे. कॉमरेड शिवन्ना ने अपना इलाज करवाया और पेरिमिलि छापामार दस्ते के डिप्यूटी कमाण्डर की जिम्मेदारी ले ली. शुरू में उस इलाके में आदिवासी जमींदारी परिवारों का बोलबाला था. उनके द्वारा उत्पन्न बाधाओं को पार करते हुए कॉमरेड शिवन्ना ने जनता को संगठित किया. उस समय वह दस्ते के डिप्यूटी कमाण्डर की जिम्मेदारी निभाते हुए ही पार्टी के कुरियर का काम भी किया करते थे. 1989 में एक ठेकेदार की गद्दारी के कारण कॉमरेड शिवन्ना दुश्मन द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए थे. दो साल तक उन्होंने जेल में दुश्मन के अत्याचारों और यातनाओं का मुकाबला करते हुए संघर्ष को जारी रखा था. उन्हें जमानत पर रिहा करवाने के लिए उनके परिवार और पार्टी द्वारा की गई कोशिशें नाकाम होने के बाद पार्टी के निर्णय पर मई 1991 में छापामार दस्ते ने विधायक धर्माराव आत्रम को गिरफ्तार कर उसकी रिहाई के लिए कॉमरेड शिवन्ना को छोड़ने की शर्त रखी. 14 दिन बाद सरकार झुकते हुए शिवन्ना को छोड़ने को तैयार हो गई. रिहा होते ही कॉमरेड शिवन्ना ने 'विकास' के नाम से अहेरी इलाके में दस्ता कमाण्डर के रूप में काम शुरू किया.

तब तक गड़चिरोली डिवीजन में पुलिस दमन भारी पैमाने पर बढ़ चुका था. झूठी मुठभेड़ों में दर्जनों आदिवासी युवकों को मार डालने, सैकड़ों आदिवासियों को काला कानून टाडा के तहत जेलों में सड़ाने का सिलसिला चल पड़ा था. आदिवासी युवकों को बड़े पैमाने पर भर्ती

करके सी-60 के नाम से कमाण्डो बलों का गठन किया गया था. आदिवासी किसानों को लापता कर षड़यंत्रकारी तरीके से उनकी हत्या की जा रही थी. 1993 में मंगेझरी में 14 किसानों को एक साथ मार डाला गया था. दमन के उस अत्यंत फासीवादी दौर में जनता में सहज ही घबराहट की स्थिति पैदा हुई थी. कई गांवों में कई किसान कार्यकर्ताओं ने जन संगठनों से इस्तीफा देकर अस्थाई तौर पर खुद को पार्टी से दूर किया था. गांव-गांव में पुलिस मुखबिरों का नेटवर्क बनाया गया. कई गांव पुलिस के अड्डे बन गए जहां पर किसानों को क्रूरतम यातनाओं का शिकार बनाया जाता था. ऐसी स्थिति में जनता एक-दूसरे पर विश्वास रखने से कतराने लगी थी. यहां तक कि लोग छापामार दस्तों को खाना देने से भी कतराने लगे थे. ऐसी कठिन और चुनौतीपूर्ण स्थिति में जनता में काम करते हुए दुश्मन के दमन अभियानों का सक्रिय आत्मरक्षात्मक दांवपेंच के जरिए माकूल जवाब देने में कॉमरेड विकास आगे रहे. डिवीजन के कोसपूंड्री, भीमनकोज्जी, मंगेझरी और किष्टापुरम गांवों में दुश्मन पर ऐम्बुश कर दर्जनों बलों का सफाया किया गया. उनके हथियार छीन लिए गए. धीरे-धीरे पहलकदमी फिर से जन सैनिकों के हाथों में आने लगी थी. इसी बीच 1985 में गड़चिरोली डिवीजन पार्टी का दूसरा अधिवेशन सम्पन्न हुआ. इस अधिवेशन ने कॉमरेड विकास को डिवीजनल कमेटी सदस्य चुन लिया. बाद में पार्टी ने उन्हें विशेष रूप से फौजी कार्रवाइयों का जिम्मा देकर दण्डकारण्य की पहली प्लटून का कमाण्डर बनाया.

फौजी मोर्चे में विशेषज्ञता हासिल करते हुए वह एक साहसी कमाण्डर के रूप में उभरे थे. 1996 में राजनांदगांव जिले के मानपुर पुलिस थाने पर किए गए रेड में उन्होंने भाग लिया. इस हमले में 32 हथियार छीन लिए गए. बाद में 1997 में गड़चिरोली के कंडी गांव के पास दुश्मन के बलों पर किए गए एक ऐम्बुश में उन्होंने भाग लिया. इस हमले में छापामारों ने आलम पांडू नामक एक खूंखार दरोगा समेत 5 कमाण्डों का सफाया किया. अगस्त 1998 में गोड्सूर गांव के पास पैदल गश्त पर आने वाले पुलिस बलों पर किए गए एम्बुश का नेतृत्व कॉमरेड विकास ने किया. इस हमले में भी 5 पुलिस वारे मारे गए और 4 एसएलआर छीन लिए गए.

वर्ष 2000 में गड़चिरोली डिवीजनल कमेटी के तत्कालीन सचिव करण ने दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण किया था. उसके कुछ ही महीने पहले डिवीजनल कमेटी सदस्य कॉमरेड विक्रम दुश्मन के साथ बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए थे. ऐसी मुश्किल स्थिति में उन्होंने डिवीजनल कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी उठाई और दूसरी श्रेणी के नए नेतृत्व को उभारते हुए आन्दोलन को मजबूती से आगे बढ़ाया. उसी साल के दिसम्बर में आयोजित दण्डकारण्य स्पेशल जोन के तीसरे अधिवेशन में उन्हें स्पेशल जोनल कमेटी के वैकल्पिक सदस्य के रूप में चुन लिया गया.

2001 में आयोजित तत्कालीन पीपुल्सवार की 9वीं कांग्रेस ने दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने का फौरी कार्यभार पार्टी के सामने रखा. उसके तहत दण्डकारण्य में ठोस योजना तैयार करके दुश्मन बलों के खिलाफ कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों का शृंखला चलाई गई. इन अभियानों को सफल बनाने के लिए कॉमरेड विकास ने कई फौजी कार्रवाइयों में भाग लिया. कुछ हमलों में उन्होंने पीएलजीए बलों का सीधा नेतृत्व किया. 2002 में कॉमरेड विकास को एसजेडसी के सदस्य के रूप में कमेटी में लिया गया.

कॉमरेड विकास के जीवन के हर पहलू में हम सर्वहारा दृष्टिकोण की झलक देख सकते हैं. माओ द्वारा बताई गई सीधी-सादी जीवनशैली का उन्होंने अक्षरशः पालन किया. वह अनुशासनप्रिय तथा नपे-तुले शब्दों में बोलने वाले कॉमरेड थे. वह अपने अन्दर कोई गलती देखते हैं तो साफ-साफ शब्दों में अपनी आत्मालोचना पेश करते थे. और साथियों की गलतियों पर उनकी टिप्पणी भी संक्षिप्त और सटीक रहती थी. वह किसी भी कॉमरेड का दिल नहीं दुखाया करते थे, यही कारण है कि कतारों में वह काफी लोकप्रिय थे. पार्टी द्वारा सौम्पे गए हर काम को वह पूरी ईमानदारी एवं जिम्मेदारी से पूरा किया करते थे, यह नहीं देखते थे कि वह छोटा काम है या बड़ा. वह निम्न पूंजीवादी व्यक्तिवादिता के सख्त खिलाफ थे. उन्होंने अपने हितों को पार्टी के हितों से परे कभी नहीं रखा. यहां तक कि खान-पान और पहनावा-ओढ़ावा के मामलों में भी वह बेहद सादगी बरतते थे. कभी भी उन्होंने अपने लिए विशेष सुविधाओं की मांग नहीं की. लगभग 23 साल की उनकी कठिन क्रान्तिकारी जिन्दगी सभी कॉमरेडों के लिए एक मिसाल है. घर छोड़कर पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने के बाद से आखिर तक उन्होंने न अपने माता-पिता से कभी मिला न ही कभी अपने गांव को देखा.

आज दण्डकारण्य का क्रान्तिकारी आन्दोलन कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए आधार इलाके के लक्ष्य को पाने के लिए अग्रसर है. पिछले 6 साल के व्यवहार की समीक्षा कर उन्नत कार्यभार तय करने के लिए सितम्बर 2006 में दण्डकारण्य पार्टी के चौथे अधिवेशन का आयोजन तय हुआ था. अधिवेशन स्थल पर पहले ही पहुंच चुके एसजेडसी सदस्य और प्रतिनिधिगण कॉमरेड विकास समेत कई अन्य पीएलजीए कमाण्डरों के आने का इंतजार कर रहे थे. इतने में 17 सितम्बर को कॉमरेड विकास की शहादत की खबर रेडियो में सुनकर सारा कैम्प स्तब्ध रह गया. आंसुओं को पोंछते हुए कॉमरेड विकास के अधूरे सपनों को पूरा करने का संकल्प लेते हुए अधिवेशन की तैयारियों में जुट गए. 23 सितम्बर से 7 अश्टूबर तक सम्पन्न दण्डकारण्य अधिवेशन ने कॉमरेड विकास समेत भारतीय क्रान्ति के हजारों वीर शहीदों के खून से सने लाल झण्डे को ऊंचा उठाकर पूरे विश्व में फहराने का आशय दोहराया.

## कॉमरेड विकास अमर रहें!

17 सितम्बर 2006 को गड़चिरोली डिवीजन सचिव कॉमरेड विकास की शहादत की खबर सुनते ही पूरे गड़चिरोली की जनता, संगठन सदस्य, महिला संगठन, छात्र संगठन, बाल संगठन, भूमकाल मिलिशिया, जन मिलिशिया, पीएलजीए व सभी पार्टी सदस्यों के बीच शोक की लहर फैल गई. अपने क्षोभ को उन्होंने 30 सितम्बर को स्वतःस्फूर्त ढंग से गड़चिरोली जिला बन्द करके प्रकट किया. टिप्पागढ़ एरिया कमेटी, भामरागड़ एरिया कमेटी, पेरिमिलि एरिया कमेटी, अहेरी एरिया कमेटी, चादगांव एरिया कमेटी, कसनसूर एरिया कमेटी के अन्तर्गत सभी गांवों की जनता ने अपने-अपने गांव में शहीद सभा का आयोजन कर अपने प्रियतम नेता कॉमरेड विकास को श्रद्धांजली पेश की. गड़चिरोली संघर्ष को आगे बढ़ाने की शपथ से सभी गांवों में यादगार सभा को समाप्त किया गया. कॉमरेड विकास की कायरतापूर्ण हत्या ने हजारों जनता को इतना क्षोभित कर दिया कि गड़चिरोली की जनता ने पूरे सात दिन तक स्वतःस्फूर्त ढंग से बन्द रखा. कोटगुल से गड़चिरोली तथा कोरची से मालेवाड़ा डामर सड़क को 8 जगह पर खोद डाला जिससे यातायात एवं परिवहन प्रभावित रहा. विभिन्न समाचार पत्रों ने भी बन्द को अब तक का सबसे बड़ा बन्द बताया तथा उसे महाबन्द की संज्ञा दी. ✶

# भारतीय क्रान्ति के बहादुर योद्धा व जन सेना नायक कॉमरेड बीके (चन्द्रमौली) अमर रहें !

27 दिसम्बर 2006 का दिन भारत की उत्पीड़ित जनता के लिए बेहद पीड़ादायक खबर लेकर आया था. भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य तथा केन्द्रीय सैन्य आयोग के सदस्य कॉमरेड बीके – जिन्हें क्रान्तिकारी कतारों में बालकृष्ण, नवीन, देवन्ना, बालन्ना आदि नामों से काफी लोकप्रियता हासिल है – तथा उनकी जीवन संगिनी व आन्ध्र-उड़ीसा सीमान्त विशेष जोन (एओबी) की पूर्वी डिवीजनल कमेटी सदस्या व लोक डॉक्टर कॉमरेड करुणा को एक दलाल की सूचना के आधार पर आन्ध्र की बदनाम एसआईबी (विशेष खुफिया विभाग) ने 25 दिसम्बर को छत्तीसगढ़ के एक शहर में गिरफ्तार कर क्रूर यातनाएं देने के बाद 27 तारीख की रात में आन्ध्र के विशाखा जिले के जंगलों में एक झूठी मुठभेड़ में निर्मम हत्या की. यह हत्या ऐसे समय हुई थी जबकि समूची पार्टी ऐतिहासिक एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस की तैयारियों में पूरी सरगर्मी के साथ जुटी हुई थी. गौरतलब है कि दुश्मन को भी यह मालूम हुआ था कि अब कांग्रेस होने ही वाला है और कॉमरेड बीके को कांग्रेस कब और कहां होगी, इसकी पूरी जानकारी थी. दुश्मन द्वारा क्रूरतम यातनाएं दी जाने के बावजूद भी कॉमरेड बीके ने पार्टी की, खासकर कांग्रेस की गोपनीयता को अक्षुण्ण रखा. उनके फौलादी इरादों के सामने हार मानकर दुश्मन ने आखिर उनकी कायरतापूर्ण हत्या की. कामरेड चारु मजुमदार से लेकर कॉमरेड पुलि अंजन्ना, श्याम, महेश, मुरली आदि असंख्य क्रान्तिकारी नेताओं द्वारा स्थापित आदर्शों को ऊंचा उठाए रखते हुए कॉमरेड बीके ने भारत की उत्पीड़ित जनता की मुक्ति की खातिर दुश्मन को उसके अपने यातना शिविर में भी मात देते हुए बहादुरी एवं खुशी के साथ अपनी जान दी.

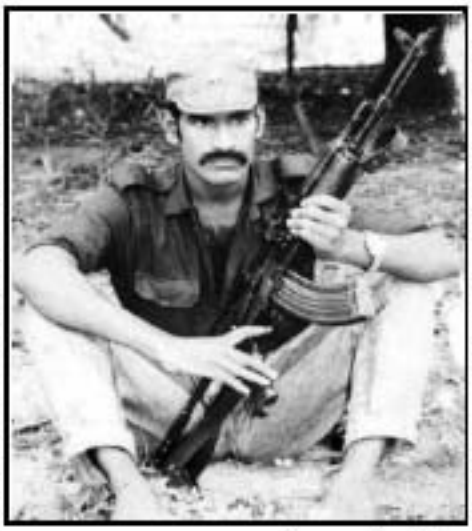

कॉमरेड बीके की शहादत से ऐसा महसूस हुआ कि पिछले 25 सालों से जारी एक अपराजेय लोक नायक का रोचक, हैरतअंगेज तथा रोंगटे खड़े कर देने वाला सफ़रनामा अचानक और अधूरा रुक गया. एक सदस्य से लेकर केन्द्रीय कमेटी सदस्य तक का उनका विकासक्रम दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते में आगे बढ़ने वाली भाकपा (माओवादी) की राजनीतिक-सैनिक लाइन के विकासक्रम से गुंथा हुआ है, ऐसा कहना उनका सही मूल्यांकन होगा. दुश्मन के लिए कॉमरेड बीके एक बुरा स्वप्न रहे. इसीलिए आन्ध्र की एसआईबी समेत तमाम पुलिस एवं खुफिया विभाग हाथ धोकर उनके पीछे पड़े थे. कॉमरेड बीके का जन्म उत्तर तेलंगाना के करीमनगर जिले के पेड्डापुर गांव के एक मध्यमवर्गीय बढ़ई परिवार में हुआ था. उनका नाम चन्द्रमौली था. अपने छात्र जीवन से ही नेतृत्वकारी गुणों से लैस कॉमरेड बीके को '70 के दशक के आखिर में उभरे और 'जगित्याल जैत्रयात्रा' के नाम से मशहूर हुए सशस्त्र किसान विद्रोह ने झकझोर दिया और क्रान्ति का रास्ता दिखा दिया. अपनी इंटरमीडियट की पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने कई छात्रों को 'रैडिकल छात्र संगठन' में गोलबन्द किया. 1981 में पार्टी ने जब 'चलो गांवों की ओर' का नारा देकर छात्रों एवं नौजवानों को प्रेरित किया तो कॉमरेड चन्द्रमौली भी गांवों की ओर निकल पड़े, जहां उन्हें गांवों में व्याप्त गरीबी, भूख, जमीन की किल्लत, सामन्ती शोषण आदि से रू-ब-रू होने का मौका मिला. तुरन्त ही उन्होंने क्रान्ति के लिए खुद को समर्पित करते हुए पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का फैसला लिया.

1983 में पार्टी ने उन्हें संगठनकर्ता के रूप में पदोन्नति दी. तबसे उन्होंने करीमनगर के ग्रामीण इलाके में सामन्तवाद-विरोधी संघर्षों में किसानों का नेतृत्व किया. कई नौजवानों को पार्टी में भर्ती कराने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई. उनसे कई वरिष्ठ कॉमरेड मौजूद रहने के बावजूद भी उनकी क्षमता और सक्रियता को देखते हुए 1985 में सम्पन्न पार्टी के करीमनगर जिला अधिवेशन में उन्हें जिला कमेटी सदस्य चुन लिया गया.

उसी साल क्रान्तिकारी आन्दोलन पर दुश्मन का हमला तेज हुआ था. इस दमनचक्र के बीचोबीच ही पुलिस के साथ गांवों में घूमते हुए जनता के साथ जीवन्त सम्बन्ध स्थापित करते हुए उन्हें क्रान्तिकारी आन्दोलन में संगठित करने में कॉमरेड बीके ने अहम-खासा योगदान दिया. 1985 के आखिर में दुश्मन के हमले में हमारी आत्मघात शक्तियों को बचाने तथा दण्डकारण्य में रणनीतिक कार्यभारों को आगे बढ़ाने के लिए पार्टी ने कॉमरेड बीके को पूर्वी पर्वतशृंखला में भेजने का फैसला लेकर उनके सामने प्रस्ताव रखा. उन्होंने पार्टी के इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया. उस समय वहां पर भी दुश्मन का हमला कई गुणा बढ़ चुका था. छोटे-छोटे इलाकों में कई पुलिस कैम्प बिठाकर गांवों की घेराबन्दी कर, जलाकर राख कर देना एक आम रूप बन चुका था. 1985-87 के बीच पुलिस बलों ने 'मन्यम' (आन्ध्रप्रदेश के पूर्वी गोदावरी और विशाखापट्टनम जिलों का जंगली इलाका 'मन्यम' कहलाता है, जहां पर अंग्रेजों के खिलाफ कई विद्रोह हुए थे) इलाके के 100 से ज्यादा गांवों को जलाकर राख कर दिया. कई घेराव-दमन मुहिमों में डिवीजनल कमेटी सदस्य कॉमरेड चन्दी, कमाण्डर कॉमरेड मास्टर राजन्ना, सत्तिबाबू समेत कई कॉमरेडों को मार डाला गया था. ऐसी विकट परिस्थिति में भी कॉमरेड बीके ने पूर्वी डिवीजनल कमेटी सदस्य के तौर पर हौसला बुलन्द रखते हुए जनता को संगठित किया. छापामार योद्धाओं की हौसला अफ्जाई की. दुश्मन के साथ लोहा लेते हुए उनके हमलों को नाकाम करते हुए ही उन्होंने न सिर्फ जनता और काडरों को लामबन्द किया, बल्कि दुश्मन द्वारा जलाए गए गांवों को दोबारा खड़ा करने के लिए जनता को प्रेरित किया. इस प्रकार पूर्वी पर्वतमाला को क्रान्ति के एक मजबूत गढ़ बनाने

के प्रयासों में कॉमरेड बीके का योगदान महत्वपूर्ण रहा.

जनवरी 1987 में आयोजित डिवीजनल प्लीनम और मार्च में सम्पन्न दण्डकारण्य पार्टी के पहले अधिवेशन के बाद कॉमरेड बीके को पूर्वी डिवीजनल कमेटी का सचिव चुन लिया गया. 1987 के दिसम्बर महीने में उन्हें कुछ अन्य साथियों के साथ पुलिस ने गिरफ्तार किया था. करीब 20 दिनों तक पुलिस हिरासत में उन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी गई थीं. इसके बावजूद भी उन्होंने दुश्मन के सामने सिर नहीं झुकाया. बाद में उन्हें रिहा करवाने के लिए छापामार दस्तों ने गुर्तेडु के जंगलों में 7 आइएएस अफसरों को गिरफ्तार कर सरकार के सामने शर्त रखी कि हमारे 7 कॉमरेडों को छोड़ दिया जाए. दुश्मन वर्ग के अधिकारियों को इस तरह जन सैनिकों द्वारा गिरफ्तार करने की वह पहली और ऐतिहासिक घटना थी. देश-दुनिया में उस कार्रवाई की खासी चर्चा हुई थी. बाद में तत्कालीन एनटीआर सरकार ने जन सैनिकों की शर्त को स्वीकारते हुए हमारे कॉमरेड बीके समेत 7 कॉमरेडों को रिहा कर दिया. इस कार्रवाई के बाद से इस तरह की जन बलों द्वारा गिरफ्तारी (जिसे सरकारी भाषा में अपहरण कहा जाता है) जन सैनिकों की तरकश में एक और तीर बनकर उभरी.

रिहाई के बाद कॉमरेड बीके फिर से छापामार दस्तों का नेतृत्व करने लगा. आन्दोलन को आगे बढ़ाने के दौरान पार्टी तथा व्यक्तिगत जीवन में आए कई उतार-चढ़ावों के बावजूद कॉमरेड बीके क्रान्ति के पथ से एक पल के लिए भी अलग नहीं हुए. कतारों से आने वाली आलोचनाओं को स्वीकार कर खुद को एक अच्छे कम्युनिस्ट के रूप में ढालने तथा गैर-सर्वहारा रुझानों को दूर करने के लिए उन्होंने संघर्ष की बढ़िया मिसाल पेश की. खासकर भारतीय क्रान्ति में भौगोलिकता की दृष्टि से पूर्वी पर्वतशृंखला के रणनीतिक महत्व को पहचानते हुए उन्होंने इस क्षेत्र को मुक्तांचल में तब्दील करने के कार्यभारों पर दृढ़तापूर्वक अमल किया.

दुश्मन के तीखे दमन के चलते 1993-95 के बीच समूची पूर्वी डिवीजनल कमेटी लगभग खत्म हो चुकी थी. ऐसे संकटपूर्ण स्थिति में, जबकि उच्च नेतृत्व की तरफ से पर्याप्त मदद भी नहीं मिल रही थी, कॉमरेड बीके ने लगभग अकेले ही कतारों से दूसरी श्रेणी के नेतृत्व को विकसित किया. और आगे चलकर वही डिवीजनल कमेटी के रूप में रूपान्तरित हुआ. उन्होंने उस कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी ली. तब पूर्वी डिवीजन की स्थिति इतनी बदतर थी कि 5 दस्तों का इलाका दो दस्तों तक सिमट चुका था. इस खराब स्थिति को बदलकर आन्दोलन को पुनरुज्जीवित करने में कॉमरेड बीके का सराहनीय योगदान रहा. सैद्धांतिक व राजनीतिक रूप से कॉमरेड बीके ने माओवादी लाइन तथा हमारी पार्टी की आम लाइन पर दृढ़तापूर्वक खड़े रहते हुए पार्टी में दो बार उत्पन्न आन्तरिक संकटों में सही रुख अपनाया. डिवीजन के कॉमरेडों को भी इसी प्रकार ढालने और शिक्षित करने में वह एक मार्गदर्शक रहे. पूर्वी डिवीजन में दुश्मन द्वारा जारी दमन एक तरफ, तो दूसरी तरफ रंग-बिरंगे संशोधनवादियों के हमले जारी थे. संशोधनवादी भाकपा के मेका सूरीबाबू तथा प्रजापंथा ग्रुप के सशस्त्र संशोधनवादी हमारे छापामार दस्तों पर तरह-तरह के हमले कर रहे थे. ऐसे माहौल में कॉमरेड बीके ने कॉमरेडों का हौसला बढ़ाते हुए उनके हमलों का माकूल जवाब देकर संघर्ष को और आगे बढ़ाया. बेहद मुश्किल परिस्थितियों में भी दृढ़ संकल्प के साथ काम करने तथा माओवादी दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन के मातहत सभी समस्याओं का हल निकालते हुए आगे बढ़ने में कॉमरेड बीके को महारथ हासिल थी.

1995 में सम्पन्न दण्डकारण्य पार्टी के दूसरे अधिवेशन के बाद पूर्वी डिवीजन को आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी के तहत स्थानान्तरित करने का फैसला हुआ. कॉमरेड बीके आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिए गए.बाद में वह सचिवालय सदस्य बन गए. वर्ष 2000 में आयोजित पार्टी के आन्ध्रप्रदेश राज्य अधिवेशन में यह फैसला हुआ कि उत्तरी आन्ध्र और उड़ीसा के सीमान्त इलाके को, जिसमें पूर्वी डिवीजन भी आता है, आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी के दायरे से अलग कर आधार इलाके के लक्ष्य से एक विशेष जोन बनाया जाए. इस तरह आन्ध्र-उड़ीसा सीमान्त विशेष जोनल कमेटी के नेतृत्व में एक बड़े इलाके में उन्नत कार्यभारों से क्रान्तिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ाने का निर्णय हुआ. और इस विशेष जोन के संस्थापक सचिव बने कॉमरेड बीके. और उसके तुरन्त बाद, मार्च 2001 में सम्पन्न तत्कालीन भाकपा (माले) (पीडब्ल्यू) की 9वीं कांग्रेस में उन्हें केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया. केन्द्रीय कमेटी ने उन्हें केन्द्रीय सैन्य आयोग के सदस्य के रूप में लेकर नव गठित पीजीए (अब पीएलजीए) के लिए राजनीतिक-सैनिक नेतृत्व देने की जिम्मेदारी दी. 21 सितम्बर 2004 को गठित भाकपा (माओवादी) की एकीकृत केन्द्रीय कमेटी का भी वह सदस्य बने थे और साथ ही साथ केन्द्रीय सैन्य आयोग (सीएमसी) का भी सदस्य बन गए. उसके बाद से हम कॉमरेड बीके को और ज्यादा परिपश्व राजनीतिक-सैन्य योद्धा के रूप में देख सकते हैं.

कॉमरेड बीके के पार्टी-जीवन में एक अहम पहलू है राजनीतिक-सैन्य मोर्चे में उनका काम. शुरू से लेकर आखिर तक वह एक जन सेना नायक के रूप में विकसित होते रहे. 1986 दिसम्बर में सीलेरु पुलिस आउटपोस्ट पर हमले से लेकर 2005 में आर. उदयगिरी (उड़ीसा) पुलिस थाने पर किए गए हमले तक उनके नेतृत्व में कई हमलों में शत्रु बलों को जन सैनिकों ने करारी मात दी. दाराकोंडा, बोड़िपदा, बारिपदा, कलिमेला, कोरापुट इत्यादि कई रेडों और कई अन्य ऐम्बुशों में उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व किया. उनकी खासियत यह है कि कई हमलों में उन्होंने खुद साथ रहते हुए कई नए योद्धाओं की कमाण्डर के रूप में उभरने में मदद की. उन्होंने जब भी कमाण्डर के रूप में हमलों में जन सैनिकों का नेतृत्व किया, असीम वीरता और पहलकदमी का उमदा प्रदर्शन किया. खासकर कोरापुट सैन्य अभियान, जिसने देश के शासक वर्गों को हिलाकर रख दिया, में पीएलजीए के सैकड़ों बलों का नेतृत्व कर 500 से ज्यादा हथियार दुश्मन से छीनकर लाने में उनके योगदान को इतिहास कभी नहीं भूलेगा. कई कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों (टीसीओसी) में वह रिकी (टोह लेने) से लेकर योजना को अन्तिम रूप देने तक हर पहलू पर बारीकी से ध्यान देते थे. फौजी कार्रवाइयों में अचूक योजना बनाना और अमल के दौरान पहलकदमी, हिम्मत और सूजबूझ का प्रदर्शन करना - इसे हम कॉमरेड बीके द्वारा संचालित हर कार्रवाई में देख सकते हैं.

दुश्मन द्वारा किए गए हमलों में भी कॉमरेड बीके ने कई बार छापामार सैनिकों का कुशल नेतृत्व किया. 1998 में कपरडंग में हो रहे पार्टी की श्रीकाकुलम डिवीजनल प्लीनम पर सैकड़ों ग्रे-हाउण्ड्स द्वारा किए गए पाशविक हमले में वह घायल हुए थे. करीब 10 कॉमरेड शहीद हुए थे. इसके बावजूद भी कॉमरेड बीके ने बहादुरी के साथ दुश्मन का प्रतिरोध करते हुए कुछ दुश्मनों को मार-गिराकर सभी साथियों को सकुशल बाहर निकालने में मदद की. न सिर्फ एओबी में, बल्कि मध्य रीजियनल

ब्यूरो के एपी, डीके और एनटी में पीएलजीए के कमाण्डरों और लाल योद्धाओं में कॉमरेड बीके के साथ रहने से हिम्मत और हौसला दुगनी हो जाया करता था. खासकर एओबी आन्दोलन के लिए तो उनकी शहादत किसी बिजली के झटके से कम नहीं है. उनके बिना उस इलाके के आन्दोलन की कल्पना भी नहीं कर सकते. आज उस आन्दोलन के 27 साल पुराने इतिहास के पन्नों को हम पलटते हैं तो हर पन्ने में कॉमरेड बीके तस्वीर सामने आती है.

कॉमरेड बीके सैद्धांतिक मामलों में साफ-सुथरा नजरिया रखते थे. वह हरेक मुद्दे की बेबाक चर्चा किया करते थे. अपने मतों एवं विचारों को सामने रखते समय वह बेझिझक व निडर रहते थे. जब कोई मसला सामने आता है तो उसे समझने के लिए वह खूब मेहनत करते ते. अपने मन में पहले कुछ सवाल तैयार कर लेते थे. और बाद में उन सवालों का जवाब ढूंढ़ते-खोजते रहते थे. बारम्बार कोशिश करके आखिरकार उस मसले को समझ लिया करते थे. जितना समझते थे वहां तक काफी स्पष्ट रहते थे. सीखने के मामले में वह हमेशा एक छात्र के रूप में रहकर नए विषयों को जानने-समझने की तत्परता दिखाया करते थे. अध्ययन के मामले में वह हमेशा गंभीर रहा करते थे और हमेशा आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते थे. वह हर साथी से, चाहे वह सामान्य पार्टी सदस्य या जन संगठन सदस्य हो या फिर नेतृत्वकारी कॉमरेड, दिल खोलकर बात करते थे. वह हंसमुख और मिलनसार शख्स थे. खासकर कतारों के सुख-दुख की बातें गौर से सुना करते थे. एक इलाके से दूर जाकर दूसरे इलाकों में काम करने वाले कॉमरेडों से वह जब भी मिलते तो कॉमरेड बीके वहां के हालात के बारे में विस्तार से बताना और घर-परिवार वालों के दुख-तकलीफों के बारे में बताना कभी नहीं भूलते थे. वह नए-पुराने हर साथी को अच्छे से याद रखते थे. छोटे-बड़े सभी के साथ आदर-सम्मान के साथ बात करते थे. इसीलिए आज उनकी मौत की खबर सुनकर कई कॉमरेडों के आंखों में आंसू भर आए.

कॉमरेड बीके ने इस जंग-ए-अवाम में बन्दूक के साथ-साथ कलम का भी अच्छा इस्तेमाल किया. उन्होंने कई मौकों पर कविता, लघुकथा, लेख आदि लिखे. जिस 'मन्यम' इलके को मुक्तांचल बनाने के लक्ष्य को अपनी सांस बनाकर उन्होंने लगभग 20 साल से ज्यादा समय जिया, उसी 'मन्यम' को अपना छद्मनाम बनाकर क्रान्तिकारी साहित्य का सृजन किया, जिसमें प्रधान विषयवस्तु 'मन्यम' के संघर्ष और 'मन्यम'वासियों की जिन्दगी ही हुआ करती थी. जब भी कॉमरेडों का कोई जमावड़ा होता तो वह किसी न किसी राजनीतिक विषय पर प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक भाषण दिया करते थे. इसके अलावा खासकर माश्र्सवादी दर्शन, राजनीतिक अर्थशास्त्र और जनयुद्ध से जुड़े कई विषयों पर उन्होंने कई बार कतारों की राजनीतिक कक्षाएं लीं. वह एक साथ अच्छे राजनीतिक शिक्षक और फौजी प्रशिक्षक भी थे.

कॉमरेड बीके ने भारत के क्रान्ति के हित में दो माओवादी धाराओं एमसीसीआई धारा और भाकपा (माले) धारा की एकता की जरूरत को सर्वोच्च महत्व दिया. दो पार्टियों के विलय की प्रक्रिया में उन्होंने तत्कालीन पीपुल्सवार के केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में अपना पूरा योगदान दिया. दो पुरानी पार्टियों की केन्द्रीय कमेटियों द्वारा तैयार और नवगिठत भाकपा (माओवादी) की केन्द्रीय कमेटी द्वारा अपनाए गए दस्तावेजों को कॉमरेड बीके ने नीचे तक ले जाकर पार्टी कतारों को शिक्षित किया. ठीक हमारी पार्टी भाकपा (माओवादी) की एकता कांग्रेस - 9वीं कांग्रेस के पहले उनकी मौत होने से पार्टी दस्तावेजों और पार्टी लाइन को और ज्यादा समृद्ध बनाने में उनके योगदान से इस ऐतिहासिक कांग्रेस को वंचित होना पड़ा. कांग्रेस की सुरक्षा का जिम्मा भी उन्हें दिया गया था, जिसे उन्हें कॉमरेड्स सीएम-केसी कम्यून में देना तय हुआ था. एक जनसेना नायक के रूप में कांग्रेस में उनकी उपस्थिति को प्रत्यक्ष देख पाने की उम्मीद से देश के 16 राज्यों से कांग्रेस के लिए प्रस्थान करने वाले प्रतिनिधि यह दुखद खबर सुनकर गमगीन हो गए. देश के कई हिस्सों में दुश्मन के बलों से लोहा ले रही पीएलजीए के कतार और जन मिलिशिया और खासकर मन्यम के आदिवासी भाई-बहनें कॉमरेड बीके की शहादत की खबर से बेहद दुखी हुए. लेकिन सभी को गर्व भी महसूस हुआ कि उन्होंने अपनी जीवन संगिनी कॉमरेड करुणा के साथ मिलकर दुश्मन के यातनाशिविर में मौत के सामने खड़े होकर भी बुलन्द हौसलों के साथ पार्टी के गौरवशाली के लाल पताका को ऊंचा उठाए रखा - कांग्रेस के आयोजन की तारीख और स्थल जानने की उसकी कोशिशों पर पानी फेर दिया. साथियो, आज हमारा जनसेना नायक कॉमरेड बीके हमारे बीच नहीं रहे. लेकिन उनके आदर्श सदा जीवित रहेंगे. आखिर ग्रामीण परिवेश से आए एक साधारण नौजवान ने माश्र्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी सिद्धान्त की रोशनी में खुद को किस तरह फौलाद बनाया है? शक्तिशाली माने जाने वाले भारतीय राज्य को कड़ी चुनौती देकर आश्चर्य में डालने वाले कई सफल हमलों का नेतृत्व करने वाले बहादुर कमाण्डर के रूप में खुद को कैसे उभारा? भारत में माओ की दीर्घकालीन लोकयुद्ध की लाइन को ठोस रूप से लागू करते हुए समृद्ध अनुभव हासिल करते हुए किस तरह वह एक राजनीतिक-सैनिक रणनीतिकार बना है? इन सवालों के जवाब देने वाली उनकी जीवनी को आने वाली पीढ़ियां जरूर याद रखेंगे. दुश्मन ने इसके पहले कॉमरेड्स श्याम, महेश और मुरली की भी इसी प्रकार एक साजिश के तहत हत्या करके पूरे क्रान्तिकारी आन्दोलन का सफाया करने का दिवास्वप्न देखा था. आज भी कॉमरेड बीके की हत्या कर वह एक कठिन चुनौती को खत्म करने का जश्न मना रहा है. लेकिन इतिहास का निर्माण सिर्फ और सिर्फ जनता करती है. जनता ऐसे हजारों बीके पैदा जरूर पैदा कर लेगी, जो कॉमरेड बीके समेत भारतीय क्रान्ति के हजारों वीर शहीदों के अधूरे सपनों को निश्चित रूप से साकार बनाएंगे.

## कॉमरेड करुणा - उत्पीड़ित जनता की आंख की पुतली

कॉमरेड करुणा का जन्म भी करीमनगर जिले के नवाबपेट गांव में एक धनी किसान के घर में हुआ था. 1985 में वह क्रान्तिकारी राजनीति के सम्पर्क में आई थी. 1986 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनीं. घर पर ही उनका विवाह पार्टी कार्यकर्ता कॉमरेड महेन्द्र (जयपाल) के साथ हुआ था. बाद में पार्टी ने कॉमरेड जयपाल को विशाखापटनम शहर में संगठनकर्ता बनाकर भेजा. कॉमरेड करुणा ने भी उसी शहर में रहते हुए 2-3 साल तक तकनीकी काम किया. उसी समय उन्होंने नर्सिंग में ट्रेनिंग ली ताकि हमारे आन्दोलन की सेवा कर सके. उस समय उन्होंने वहां की मजदूर महिलाओं के साथ सम्बन्ध कायम किए.

फरवरी 1993 में एक झूठी मुठभेड़ में उनके जीवन साथी कॉमरेड जयपाल मारे गए थे. बाद में कॉमरेड करुणा ने श्रीकाकुलम शहर जाकर वहां की झोंपड़पट्टियों में महिलाओं को संगठित किया. पार्टी

कोई भी काम बताती तो करुणा उसे ईमानदारी के साथ पूरा किया करती थीं. सीधी-सादी जीवनशैली अपनाते हुए हर विषय को जानने-बूझने में तत्परता दिखाया करती थीं. शारीरक रूप से कुछ कठिनाइयां पेश आने के बावजूद भी उन्होंने अपनी हर जिम्मेदारी धैर्य के साथ पूरी की. बाद में पूर्वी डिवीजन में उनका स्थानान्तरण हुआ. वहां व्यापक जन समुदायों के बीच में जाकर उन्होंने जनता को संगठित किया. कॉमरेड करुणा पार्टी की लाइन पर अड़िग और अटल रहते हुए हर मुश्किल का सामने करते हुए आखिरी दम तक क्रान्ति के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक खड़ी रहीं. उन्होंने अपनी बीमारियों की परवाह किए बिना कठिन भौगोलिक परिवेश में भी दस्ता कमाण्डर के रूप में लम्बे समय तक काम किया. 1996 में कॉमरेड बीके के साथ उनका विवाह हुआ. उन दोनों का वैवाहिक जीवन क्रान्तिकारी परम्पराओं के अनुरूप चलता रहा.

दस्ता कमाण्डर के रूप में काम करने के दौरान पुलिस के साथ हुई कई मुठभेड़ों में वह मजबूती से डटी रहीं. बाद में उन्होंने एरिया कमेटी सचिव एवं जिला कमेटी सदस्या की जिम्मेदारियां भी निभाईं. क्रान्तिकारी आदिवासी महिला संगठन की अध्यक्षा की जिम्मेदारी भी उठाई थी. पूर्वी डिवीजन में क्रान्तिकारी आदिवासी महिला संगठन का पहली बार अधिवेशन आयोजित करने में कॉमरेड करुणा की सक्रिय भूमिका रही. मन्यम अंचल में एक विशाल महिला आन्दोलन के निर्माण के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया.

कई फौजी कार्रवाइयों में कॉमरेड करुणा छापामार डॉश्टर की बेहद कठिन भूमिका निभाकर समूची पीएलजीए में एक अनुभवी डॉश्टर के रूप में उभरी थीं. कॉमरेड बीके के नेतृत्व में की गई दाराकोंडा, कलिमेला रेडों में कॉमरेड करुणा एक ॲस्साल्ट टीम की कमाण्डर के साथ-साथ पूरी रेडिंग पार्टी की डॉश्टर के रूप में भी भाग लिया. इन कार्रवाइयों में गंभीर रूप से घायल हुए कॉमरेडों का उन्होंने जिस प्रकार इलाज किया, वह किसी अनुभवी डॉश्टर की तुलना मे ंकम नहीं था. दुश्मन की गोलियों से एक कॉमरेड के हाथ की उंगलियां कट गईं तो उन्होंने उनके हाथ को ठीक कर दिया, जोकि मामूली बात नहीं थी. ऐसे कॉमरेडों को भी, जिनके बचने की उम्मीदें खत्म हो चुकी थीं, उन्होंने कई बार मौत के मुंह से बाहर निकाल लाया. दुश्मन की गोलियों से बुरी तरह घायल होकर जब खून की धाराएं बहती रहती हैं, तब भी बिना किसी हड़बड़ाहट के एक तरफ इलाज करते हुए ही दूसरी तरफ कॉमरेडों की हिम्मत बढ़ाती थीं. वह घायल कॉमरेडों के खून से सने कपड़ों को धैर्य के साथ साफ करके मरीजों को हमेशा स्वच्छ वातावरण में रखने की कोशिश करती थीं. जब घायल कॉमरेड अपने दुख-तकलीफों के बारे में बताते हैं तो उन्हें धैर्य के साथ सुनकर उनका हौसला बढ़ाया करती थीं. जब उच्च नेतृत्वकारी कॉमरेड पास में नहीं रहने पर भी कॉमरेड करुणा घायल कॉमरेडों को राजनीतिक रूप से समझाते हुए उन्हें फिर से स्वस्थ योद्धाओं में बदलकर जंग-ए-मैदान में भेज देती थीं. इस तरह उन्होंने कई कॉमरेडों को ठीक किया. एक भी कार्रवाई में वह पीछे नहीं हटी थीं. हमारी सीएमसी (केन्द्रीय सैन्य आयोग) ने हाल ही में कॉमरेड करुणा के नेतृत्व में एक डॉश्टर टीम को विकसित करने तथा कॉमरेड करुणा को विशेष प्रशिक्षण दिलवाने का फैसला लिया ताकि पीएलजीए की बढ़ती मेडिकल जरूरतों की पूर्ति की जा सके. इस फैसले को अमली जामा पहनाने से पहले ही कॉमरेड करुणा कॉमरेड बीके के साथ हमेशा के लिए हमसे दूर चली गईं. उनकी मौत से हमने एक कम्युनिस्ट नेता के साथ-साथ एक बहादुर डॉश्टर भी खोई.

महिलाओं की समस्याओं के मामले में, खासकर आदिवासी महिलाओं की राजनीतिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं पर कॉमरेड करुणा खास तौर पर ध्यान दिया करती थीं. उनके बारे में नेतृत्वकारी कॉमरेडों के साथ चर्चा करती थीं. उनके हल के लिए अपना प्रस्ताव पेश करती थीं. महिला कॉमरेडों को क्रान्तिकारी आन्दोलन में मजबूती से टिकाए रखने तथा उन्हें राजनीतिक एवं सैद्धांतिक रूप से विकसित करने के लिए कॉमरेड करुणा ने काफी प्रयास किया. तीखे दमन के बीच कई कॉमरेडों द्वारा आत्मसमर्पण करने के बावजूद दुश्मन के दावपेंचों के बारे में साथियों को राजनीतिक रूप से समझाकर उन्हें आन्दोलन में बनाए रखने की कोशिश करती थीं. आखिर में जब वह कॉमेड बीके के साथ दुश्मन के हाथों गिरफ्तार की गईं तो पार्टी नेतृत्व को बचाने के लिए दुश्मन की क्रूरतम यातनाओं का उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ सामना किया. दुश्मन को उसके यातना शिविर में भी पराजित कर पार्टी की गौरवशाली बलिदानी परम्परा को ऊंचा उठाए रखते हुए शहादत को प्राप्त किया. अन्ध्र-उड़ीसा सीमान्त जोन के पूर्वी डिवीजन, श्रीकाकुलम, मलकनगिरी और कोरापुट डिवीजनों में कॉमरेड बीके और कॉमरेड करुणा कई गांवों में सुपरिचित थे. सैकड़ों गांवों की जनता से उनके जीवन्त सम्बन्ध थे. आज दुश्मन ने कॉमरेड्स बीके और करुणा की निर्मम हत्या कर हजारों क्रान्तिकारी कतारों एवं लाखों जनता के दिलों में प्रतिशोध की आग भड़का दी. इनकी हत्याओं से जनता एक तरफ शोक मनाते हुए भी वर्ग दुश्मनों के खिलाफ सख्त नफरत से भिड़ेगी. कॉमरेड्स बीके और करुणा के लहू से सनी इस धरती से हजारों हजार बीके-करुणा पैदा होंगे. इन दोनों के आदर्शों से सीखते हुए उनके अधूरे मक्सद को सफलता के मुकाम तक पहुंचाने के लिए पीएलजीए को पीएलए में जरूर बदल डालेंगे. छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में तब्दील करते हुए आधार इलाकों की स्थापना करते हुए भारत की मुक्ति के लिए, समाजवाद और आखिर में साम्यावाद की स्थापना के लिए संघर्ष को तेज करेंगे.

## कॉमरेड मट्टा रविकुमार (महेन्द्र) को लाल-लाल सलाम !

9 जून 2006 को आन्ध्रप्रदेश के प्रकाशम जिले में खून के प्यासे ग्रे-हाउण्ड्स द्वारा किए गए एक कातिलाना हमले में आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड मट्टा रविकुमार (महेन्द्र, श्रीधर) शहीद हो गए. दण्डकारण्य के क्रान्तिकारी कतारों एवं जनता में महेन्द्र के नाम से लोकप्रिय कॉमरेड रविकुमार का जन्म आन्ध्रप्रदेश के रंगारेड्डी जिले के तांडूर कस्बे में एक मध्यमवर्ग परिवार में हुआ था. तांडूर हैदराबाद शहर से महज 30 किलोमीटर दूर पर स्थित है. हैदराबाद के जवाहरलाल नेहरू प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में इंजनीयरिंग की पढ़ाई के दौरान वह क्रान्तिकारी राजनीति के सम्पर्क में आ गए. वह एक मेधावी छात्र थे. बी.टेक. की पढ़ाई में उन्होंने सोने का पदक जीता था. 1980 के दशक की शुरूआत में वह रैडिकल छात्र संगठन का सदस्य बने थे. 1984 में पढ़ाई छोड़कर वह पूर्णकालीन क्रान्तिकारी बने थे. 1984 से लेकर अपनी शहादत तक उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा.

उन्होंने पार्टी में कई किस्म की जिम्मेदारियां निभाईं. एक संगठनकर्ता, कमाण्डर, लेखक, सम्पादक, कवि, आलोचक और डॉश्टर के रूप में उन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन में अपना योगदान दिया. छापामार युद्ध

के दावपेंचों का उन्होंने अच्छा-खासा अध्ययन किया. वह एक सिद्धान्तकार के रूप में उभरे थे. 1986 में उन्हें हैदराबाद शहर कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया था. उन्होंने तांडूर, विकाराबाद आदि ग्रामीण इलाकों में तथा हैदराबाद शहर के मजदूरों में काम किया. उस दौरान उन्होंने दर्जनों कैडरों और मजदूर नेताओं से मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धान्तों पर कक्षाएं लीं. खासकर राजनीतिक अर्थशास्त्र के वह अच्छे शिक्षक बने थे. कक्षा लेने की उनकी शैली बेहद सरल, रोचक एवं सुबोध रहती थी. कठिन विषयों को भी वह छोटे-छोटे उदाहरणों के जरिए समझाया करते थे. मजदूरों एवं मजदूर फ्रन्ट में काम करने वाले संगठनकर्ताओं को बेशी मूल्य की अवधारणा के बारे में समझाने के लिए वास्तविक आंकड़ों को इकट्ठा करने की उन्होंने अच्छी-खासी मेहनत की.

पत्रिका के सम्पादन के गुर उन्होंने शहीद कॉमरेड आईवी मास्टर, जो उस समय पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य थे, से सीखे थे. आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी द्वारा प्रकाशित 'क्रान्ति' पत्रिका के वह सम्पादक रहे. बाद में 1996 के आखिर में पार्टी ने उन्हें स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य के रूप में दण्डकारण्य स्थानान्तरित किया. दण्डकारण्य में उन्होंने शुरू में दक्षिण बस्तर और बाद में उत्तर बस्तर डिवीजन के आन्दोलनों को समझते हुए उनका मार्गदर्शन किया. 2001 में सम्पन्न पुरानी पीपुल्सवार पार्टी की 9वीं कांग्रेस में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया. उसके बाद वह स्थानान्तरित होकर आन्ध्रप्रदेश चले गए.

2001 से उन्होंने आन्ध्रप्रदेश में गुण्टूर जिला कमेटी सचिव और राज्य कमेटी सदस्य के रूप में काम किया. गुण्टूर जिले में वर्ग संघर्ष को तेज करते हुए दुश्मन के बलों पर किए गए कई हमलों में कॉमरेड श्रीधर का प्रत्यक्ष या परोक्ष योगदान रहा. लगभग 5 साल तक उन्होंने नल्लमला, प्रकाशम और गुण्टूर इलाकों में वर्ग संघर्ष को तेज करने की कोशिशों में भागीदारी ली. इस समूचे इलाके को साम्राज्यवाद-विरोधी एवं सामन्तवाद-विरोधी संघर्ष के एक मजबूत गढ़ में तब्दील करने में कॉमरेड श्रीधर का सराहनीय योगदान रहा. इसीलिए आन्ध्र की बदनाम एसआईबी और ग्रे-हाउण्ड्स उनकी हत्या करने के लिए हाथ धोकर पीछे पड़े थे.

नेपाल में जारी जनयुद्ध से कॉमरेड श्रीधर काफी प्रभावित थे. सीपीएन(माओवादी) के कुछ दस्तावेजों का उन्होंने तेलुगु में अनुवाद भी किया. 1994-98 के बीच वह जब 'क्रान्ति' के सम्पादक रहे, तब उन्होंने एलटीटीई का संघर्ष, फिलिप्पीन्स एवं पेरू की क्रान्तियों तथा सम-सामयिक क्रान्तिकारी तथा राष्ट्रीयता आन्दोलनों पर कई लेख लिखे. वह एक भावुक कवि भी रहे. 'मंजीरा' के नाम से उन्होंने दर्जनों कविताएं लिखीं. भारतीय क्रान्ति की दो धाराओं के मिलन के बाद, नव गठित भाकपा (माओवादी) की एकता कांग्रेस - 9वीं कांग्रेस में चर्चा के लिए उन्होंने विभिन्न पहलुओं पर अपनी टिप्पणियां लिखी थीं. भारतीय क्रान्ति को तेजी से आगे बढ़ाने को वह हमेशा तत्पर रहते थे. पार्टी में मौजूद खामियों एवं कमजोरियों को चिन्हित करने के लिए वह हमेशा आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते थे. एकता कांग्रेस - 9वीं कांग्रेस के कुछ ही महीने पहले उनकी मृत्यु हो जाने के कारण भारतीय क्रान्ति को, खासकर आन्ध्रप्रदेश के क्रान्तिकारी आन्दोलन को बड़ा नुकसान हुआ है. भारत की उत्पीड़ित जनता ने एक सर्वहारा बुद्धिजीवी-नेता तथा उदीयमान सिद्धान्तकार खोया, जिन्होंने अपनी आखिरी सांस तक माओवाद का पुरजोर बचाव किया.

## कॉमरेड सत्यम (सुदर्शन) - एक साहसी युवा कमाण्डर

5 अक्टूबर 2006 को खून के प्यासे एसआईबी ने एक और क्रान्तिकारी की हत्या की. आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड सुदर्शन को बंगलूर शहर में गिरफ्तार कर अगले दिन अनन्तपुर के जंगल में उनकी हत्या कर मुठभेड़ की घोषणा कर दी गई. कॉमरेड सत्यम का जन्म उत्तरी तेलंगाना के वरंगल जिले के के.समुद्रम गांव में एक गरीब परिवार में हुआ था. उनके पिता हमाली का काम करते थे और मां खेतिहर मजदूरिन थीं. इलेक्ट्रॉनिक्स में आईटीआई कोर्स पूरा करने के बाद 1980 के दशक के आखिर में वह पेशेवर क्रान्तिकारी बने थे. दक्षिण तेलंगाना के नलगोंडा जिले में एक दस्ता सदस्य के रूप में उनकी क्रान्तिकारी जिन्दगी की शुरूआत हुई. 1995 में वह दस्ता कमाण्डर बन गए. उसके बाद 1998 में वह जिला कमेटी सदस्य बन गए. 2002 में कॉमरेड दिवाकर की शहादत के बाद वह जिला कमेटी सचिव चुन लिए गए. 2001 में हुई एक मुठभेड़ में उनकी जीवन संगिनी कॉमरेड सरिता की शहादत हुई थी. 2003 में उन्होंने नल्लमला डिवीजनल कमेटी सचिव की जिम्मेदारी ली. दुश्मन के घोर दमनचक्र के बीचोबीच उन्होंने नल्लमला में आन्दोलन के निर्माण करने का बीड़ा उठाया. अगस्त 2005 में उन्हें राज्य कमेटी सदस्य बनाया गया. कठोर परिश्रम, गहरी प्रतिबद्धता, बलिदानी स्वभाव तथा सांगठनिक-फौजी क्षमताओं के बलबूते उनका विकास एक साधारण सदस्य से राज्य कमेटी सदस्य तक हुआ था.

जहां तक फौजी क्षमताओं का सवाल है, उन्होंने कम से कम 20-25 मौकों पर विशेष पुलिस बलों एवं ग्रे-हाउण्ड्स द्वारा घेरे जाने के बावजूद उनका बहादुरी से मुकाबला करते हुए बच निकले थे. पीएलजीए सैनिकों के लिए वह एक आदर्श कमाण्डर थे. उनकी अगुवाई में पीएलजीए ने कई हमले किए. ओंगोल शहर में प्रकाशम जिले के एसपी महेशचन्द्र लड्ढा पर किए गए हमले का भी उन्होंने नेतृत्व किया. हाल ही में केन्द्रीय रीजनल ब्यूरो ने उन्हें दण्डकारण्य स्थानान्तरित करने का फैसला लिया था. कुछ ही दिनों के अन्दर उन्हें यहां पीएलजीए कम्पनी के कमाण्डर की जिम्मेदारी लेनी थी. इसी बीच दुश्मन के जाल में फंसकर वह शहीद हो गए.

## कॉमरेड कडारी रामुलु - एक लड़ाकू जन नेता

7 अक्टूबर को एओबी स्पेशल जोन के पूर्वी डिवीजन के गुर्रालगोंदी जंगल (विशाखापट्टनम जिला, कोय्यूर मंडल) में हुई एक मुठभेड़ में डिवीजनल कमेटी सदस्य कॉमरेड कडारी रामुलु दुश्मन के खिलाफ शूरता के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए. कॉमरेड रामुलु का जन्म करीमनगर जिले के दामेरा गांव में हुआ था. पिछले 22 सालों से वह एक पेशेवर क्रान्तिकारी के रूप में पार्टी में कार्यरत थे. जब वह शहीद हो गए तब गुर्तेडु एरिया कमेटी सचिव की जिम्मेदारी में भी थे. करीमनगर, वरंगल और पूर्वी डिवीजन में दुश्मन के साथ हुई कई मुठभेड़ों में वह दुश्मन का मुकाबला करते हुए बच निकले थे. कॉमरेड रामुलु अपने गांव में बन्धुवा मजदूर के रूप में काम करते थे. वर्ग दुश्मनों के खिलाफ उनके

*(शेष पृष्ठ 28 में ....)*

# अपने खून से जन-मुक्ति के रास्ते को रोशन बनाने वाले बलिदानी वीरों को शत्-शत् लाल सलाम !

**कॉमरेड बीके (चन्द्रमौली), करुणा, विकास (श्रीनिवास), माधव (चिन्नैय्या), महेन्दर (श्रीधर), रवि (मैमुद्दीन), सुदर्शन (वेंकटेशम), गौतम, ओबुलेशु, कड़ारी रामुलु समेत तमाम वीर शहीद जनता के दिलों में सदा जिन्दा रहेंगे !!**

भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ाने हेतु उत्पीड़ित जनता के कई वीर सपूतों और सपुत्रियों ने अपनी अनमोल जानें कुरबान कर दीं. खासकर इस एक साल के दरमियान अलग-अलग घटनाओं में केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड बालकृष्ण (बीके) के अलावा एओबी की डिवीजनल कमेटी सदस्या कॉमरेड करुणा, दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कॉमरेड विकास, उत्तर बिहार-उत्तराखण्ड-उत्तरप्रदेश (उयू) स्पेशल एरिया कमेटी सचिव कॉमरेड मैमुद्दीन, आन्ध्र राज्य कमेटी सचिव कॉमरेड माधव, राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड श्रीधर, कॉमरेड सुदर्शन, कॉमरेड ओबुलेशु, एओबी स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कॉमरेड गौतम तथा पूर्वी डिवीजनल कमेटी सदस्य कॉमरेड कड़ारी रामुलु की शहादत हमारे क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए बड़ा नुकसान है. इन कॉमरेडों ने दुश्मन के साथ वीरतापूर्वक लड़ते हुए जनता की मुक्ति की खातिर अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया. दो दशकों से ज्यादा समय तक क्रान्तिकारी आन्दोलन में काम करते हुए विशेष अनुभव हासिल करने वाले इन कॉमरेडों की मौत से भारतीय क्रान्ति को जबर्दस्त क्षति पहुंची है. लेकिन इतिहास में बलिदान कोई नई बात नहीं है. समाज के बदलाव के द्वन्द्वात्मक नियमों के अनुसार युवा पीढ़ी के सैकड़ों-हजारों कॉमरेड इन शहीदों के अधूरे सपनों को साकार करने के लिए निश्चित रूप से आगे बढ़ेंगे. भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की ऐतिहासिक एकता कांग्रेस - 9वीं कांग्रेस के कार्यभारों को पूरा करने के लिए हम आंसुओं को पोंछकर मजबूत इरादों के साथ आगे बढ़ेंगे. आइए, इनमें से कुछ शहीदों की जीवनियों पर सरसरी नजर डालें.

**(शहीदों की विस्तृत रिपोर्टों के लिए पृष्ठ 36 से देखिए)**

कॉमरेड बीके (नवीन)

कॉमरेड विजयलक्ष्मी (करुणा)

क़ॉमरेड माधव (बुर्रा चिन्नैय्या)

क़ॉमरेड रवि (मैमुद्दीन)

क़ॉमरेड महेन्दर (रविकुमार)

क़ॉमरेड विकास (ऊरड़ी श्रीनिवास)

क़ॉमरेड सुदर्शन (वेंकटेशम)

क़ॉमरेड ओबुलेशु

**सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है**
**देखना है ज़ोर कितना बाज़ु-ए-क़ातिल में है**